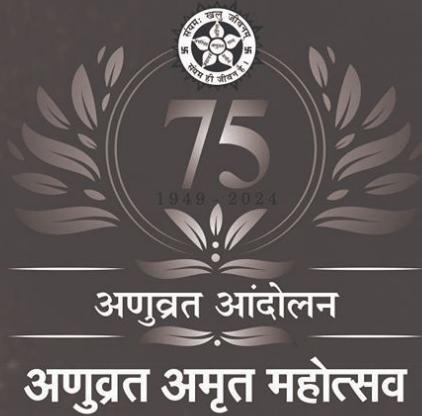


जनवरी 2024 ■ वर्ष : 69 ■ अंक : 04 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 60

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत



संयम
समाज की प्राणशक्ति

आप सादर आमंत्रित हैं...



अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत अमृत महोत्सव सम्पूर्ति समारोह

10, 11 व 12 मार्च, 2024

..... ■

पावन सन्निधि

अणुव्रत अनुशास्ता
आचार्य श्री महाश्रमण

..... ■

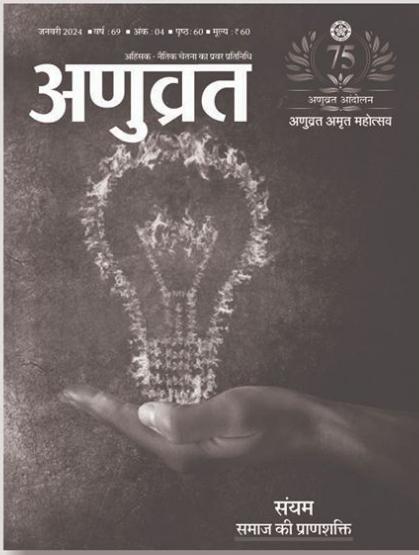
आयोजन स्थल
महाड़ - लोणेर (जिला - रायगढ़, महाराष्ट्र)

आयोजक



अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

सम्पर्क सूत्र : 9422 416999, 98223 03836, 74101 59834, 98692 73412



■ ■ ■
मेरे मन पर आचार्य श्री तुलसी
अमिट प्रभाव है। आज राष्ट्र की
ज्वलंत समस्या है, चरित्र का
अभाव। इस समस्या का
समाधान तथ्य क्या हो? यह
देश के सामने अहम प्रश्न है।
ऐसी स्थिति में आचार्यश्री ने
अणुव्रत के माध्यम से हम सब
लोगों को ऐसा रास्ता दिखाया
है जो सबके लिए
कल्याणकारी है। सामाजिक
जीवन पर अणुव्रत का प्रभाव
निश्चित रूप से पड़ा है और
भविष्य में भी पड़ेगा, ऐसा मेरा
विश्वास है।

-बालासाहब देवरस



वर्ष 69 • अंक 04 • कुल पृष्ठ 60 • जनवरी, 2024

सम्पादक
संचय जैन

सह-सम्पादक
मोहन मंगलम

टाइपसेटिंग व लेआउट
मनीष सोनी

क्रिएटिव्स
आशुतोष राय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

{ अविनाश नाहर, अध्यक्ष
भीखम सुराणा, महामंत्री
राकेश बरड़िया, कोषाध्यक्ष

प्रकाशन मंत्री
देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार
सुरेन्द्र नाहटा }

:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

एक अंक	- ₹ 60	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
एक वर्षीय	- ₹ 750	केनरा बैंक
त्रैवर्षीय	- ₹ 1800	
पंचवर्षीय	- ₹ 3000	A/c No. 0158101120312
दसवर्षीय	- ₹ 6000	IFSC : CNRB0000158
योगक्षेमी (15 yrs.)	- ₹ 15000	

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::



इस क्यूआर
कोड को स्कैन करें



अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011-23233345, मोबाइल : 9116634512



अणुव्रत | जनवरी 2024 | 03

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाठ्येय

■ व्यक्ति, विश्व और मानव धर्म आचार्य तुलसी	06
■ संयम : समाज की प्राणशक्ति आचार्य महाप्रज्ञ	09
■ क्रोध - विजय से क्या मिलेगा? आचार्य महाश्रमण	13

आलेख

■ अपनी क्षमताओं को पहचानें मुनि सुखलाल	15
■ असांप्रदायिक शुद्ध चेतना... मुनि कमल कुमार	17
■ अणुव्रत : भारतीय संस्कृति का प्रतीक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	18
■ विधि-निषेध की प्रासंगिकता डॉ. कमलाकान्त शर्मा 'कमल'	20
■ अणुव्रत दर्शन में कर्ज जाल का समाधान जिनेन्द्र कुमार कोठारी	22
■ संबंधों की त्रिज्या पर... कल्पना मनोरमा	24
■ शुभस्य शीघ्रम् सीताराम गुप्ता	26
■ अहिंसक संप्रेषण से ही ... कृष्ण बिहारी पाठक	28
■ प्रकृति प्रियता का सुख सुशील तिवारी	30
■ बच्चों में नैतिक शिक्षा... चन्द्रकान्ता शर्मा	32
■ असफलताओं का भी रखें... शिखरचंद जैन	34

कहानी

■ पंगु चढ़े गिरिवर गहन... भगवती प्रसाद द्विवेदी	36
काव्य	
■ मानव श्रम का वंदन है... गिरीश पंकज	27
■ अच्छा-बुरा जैसा भी है ओमप्रकाश यती	38

लघुकथा

■ प्रश्नचिन्ह प्रिया देवांगन 'प्रियू'	35
संपादकीय	05
■ परिचर्चा	40
■ एलीकेट कार्यक्रम : एक रिपोर्ट	44
■ डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम	50
■ कथा-कथन	51
■ अणुव्रत की बात	52
■ पुस्तक समीक्षा	53
■ अणुव्रत समाचार	54
■ क्यू10 प्रतियोगिता	57

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन—मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- इमेल द्वारा संप्रेषित कार्योज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय केंद्र दिल्ली रहेगा।



नव-वर्ष में प्रवेश पर हम जैन के कितने हकदार?

N

दुनिया में
इंसान बढ़ रहे हैं,
इंसानियत भी
बढ़नी चाहिए,
लेकिन घट रही है!

दुनिया में
धार्मिक बढ़ रहे हैं,
धार्मिकता भी
बढ़नी चाहिए,
लेकिन घट रही है!

दुनिया में
अर्थ बढ़ रहा है
अर्थवत्ता भी
बढ़नी चाहिए,
लेकिन घट रही है!

सामान्य ज्ञान
यहाँ धोखा खाता है,
गणित की यह पहली
मेरा दिल भी
समझ नहीं पाता है!

इंसान का
इंसानियत से,
धार्मिक का
धार्मिकता से
और
अर्थ का अर्थवत्ता से
क्या
छत्तीस का नाता है?

ये वर्ष में प्रवेश सामान्यतः प्रसन्नता की अभिव्यक्ति का अवसर होता है। उज्ज्वल भविष्य की आशा में नव उत्साह और उमंग के साथ नये वर्ष में प्रवेश करने में कुछ गलत भी तो नहीं है। यदि हम बीते वर्ष की कमजोरियों को, बुराइयों को और अन्याय को पीछे छोड़ कर नये संकल्प के साथ नये वर्ष में प्रवेश करते हैं तो निश्चय ही हमारी प्रसन्नता, उमंग और उत्साह को सार्थक कहा जा सकता है। किन्तु, हम यदि उसी बोझ को ढोते हुए नयी दहलीज पर कदम रख रहे हैं तो क्या खुश होने का कोई औचित्य भी है?

आशावादी होना अच्छा होता है किन्तु यथार्थवादी होना भी आवश्यक है। यदि वैश्विक परिस्थितियों पर नजर डालें तो यूक्रेन-रूस युद्ध, और अब फिलीस्तीन-इजराइल युद्ध विंता की बड़ी लकीरें पैदा करते हैं। युद्ध के लिए इन देशों के शासकों को दोषी ठहराया जा सकता है लेकिन दो धड़ों में बैटे दुनियाभर के शासकों का क्या जो इन युद्धों को रोकने के प्रयास करने के बजाय इनकी निरंतरता में ही अपना हित तलाश रहे हैं? लाशों के ढेरों पर भी ये देश हथियारों की सौदेबाजी करते नहीं थकते। हर एक नागरिक के मन में ये प्रश्न तो उठने ही चाहिए कि हमारे शासक इन्हें हिंसक क्यों होते जा रहे हैं? इन शासकों की सनक में कब तक निर्दोष जनता, बच्चे और महिलाएं अपनी जान गंवाते रहेंगे?

दुनिया में असहिष्णुता बढ़ती जा रही है। धर्म के नाम पर सांप्रदायिक कट्टरता को पोसा जा रहा है। धर्म निरपेक्ष और लोकतात्रिक कहे जाने वाले देश भी आज दक्षिणांगी प्रवाह में बहने से अपने आप को रोक नहीं पा रहे हैं। उस पर बढ़ती आर्थिक असमानता विभाजन की खाई को और भी चौड़ा कर रही है। अर्थ, सत्ता और धर्म का गठजोड़ जो सही दिशा में गतिमान रह कर विश्व मानव के कल्याण का माध्यम बन सकता था, आज इंसान को इंसान से लड़ाने का हथियार बनता जा रहा है। जिन संस्थानों पर और जिन नेतृत्वकर्ताओं पर इंसानियत को बचाने की जवाबदेही है, क्या वे अपने कर्तव्य का निर्वाह सही दिशा में कर रहे हैं? आज आँख में आँख डाल कर यह प्रश्न आम नागरिकों को भी पूछना होगा।

इंसानियत के साथ-साथ आज पृथ्वी का पर्यावरण भी खतरे में है। हाल ही दुर्बाल में 14 दिनों तक चली संयुक्त राष्ट्र संघ की 28वीं क्लाइमेट चेंज कॉन्फ्रेंस में पर्यावरण सुरक्षा के दृष्टिगत लगभग 200 देशों की सहमति से कुछ बड़े निर्णय लिये गये हैं। लेकिन ऐसे ही मंचों पर पूर्व में लिये गये निर्णय और वास्तविक परिणामों पर नजर डालें तो निराशा ही हाथ लगती है। युद्धों को रोकने और पर्यावरण को बचाने में संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे मंचों की भूमिका भी अप्रभावी होती जा रही है। अर्थ, सत्ता और धर्म - इन तीनों ही क्षेत्रों में हावी होती जा रही स्वार्थपरकता हमें किस मुकाम पर ले जाएगी, यह सोच कर ही सिहरन होती है।

अपनी नजर को कुछ पलों के लिए विश्व पटल से हटा कर अपने और अपने आसपास केंद्रित करें तो उन्हीं वैश्विक परिस्थितियों का परिदृश्य यहाँ भी स्पष्ट नजर आएगा। बल्कि यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि हमारे आसपास जो परिदृश्य हम देख रहे हैं उसी का प्रतिबिम्ब, या कहें कि उसी की परिणति वैश्विक पटल पर परिलक्षित हो रही है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जिन समस्याओं का हम जिक्र कर रहे हैं, उसका मूल कारण वह अपरिष्कृत व्यक्तित्व है जिसकी झलक हम स्वयं में भी देख सकते हैं और अपने आसपास भी। वही अपरिष्कृत व्यक्तित्व जब नेतृत्वकर्ता की भूमिका में आता है तो मानवता के लिए अभिशाप बन जाता है।

नये वर्ष में प्रवेश पर हम जश्न मनाएं, पर अपने व्यक्तित्व को परिष्कृत बनाने के संकल्प के साथ! इस संकल्प के साथ कि अपने आसपास फैले कूड़े-करकट को भी साफ करने का हम ईमानदार प्रयास करेंगे। अणुव्रत आंदोलन इसी अभियान में जुटा है। इस अभियान का अंग बनने का अर्थ है मानवता और पर्यावरण को बचाने के अभियान का अंग बनना। आइए, हम मिल कर यह बीड़ा उठाएं।

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

सं. जै.

sanchay_avb@yahoo.com



अणुव्रत | जनवरी 2024 | 05

व्यक्ति, विश्व और मानव धर्म

जीवन-निर्माण या चरित्र-निर्माण की कुछ ऐसी बातें हैं जो पूरे विश्व पर एक रूप में लागू हो सकती हैं। उनका संकलन कर उन्हें निर्विशेषण धर्म के रूप में प्रस्तुत किया जाये तो विश्वधर्म का स्वरूप उजागर हो सकता है। उस धर्म को कोई विशेषण देना ही हो तो मानव धर्म - यह विशेषण दिया जा सकता है।

आ जकल कुछ व्यक्ति विश्वव्यवस्था, विश्वधर्म, विश्वहित, विश्वविकास और वैश्विक चिंतन की बात करते हैं। कुछ व्यक्ति पूरी तरह से आत्मकेन्द्रित होते हैं। वे विश्व के बारे में क्या, अपने देश, समाज, गाँव, पड़ोस या परिवार की दृष्टि से भी कुछ सोचने या करने के लिए तैयार नहीं हैं। मेरा चिंतन यह है कि मनुष्य की दृष्टि अनेकान्त प्रधान होनी चाहिए। विश्व और व्यक्ति के बारे में विचार किया जाये तो इन दोनों को सापेक्ष मानकर ही सोचना जरूरी है। व्यक्ति को भुलाकर विश्व को नहीं बनाया जा सकता और विश्व के बिना व्यक्ति की अस्मिता को प्रतिष्ठित नहीं किया जा सकता। मकान के निर्माण में इंटों का उपयोग होता है, पर केवल इंटें क्या करेंगी? इंटों के साथ अन्य सामग्री की भी अपेक्षा रहती है। इसी प्रकार व्यष्टि और समष्टि दोनों के समुचित विकास से ही सर्वांगीण विकास संभव है।

व्यक्ति विश्व में सन्त्रिहित है। वह अकेला रह नहीं सकता, अकेला जी नहीं सकता। ऐसी स्थिति में चिंतन की यात्रा व्यक्ति से शुरू होकर विश्व तक पहुँचे, यह सही क्रम है। भोजन से थाली भरी है। पूरी थाली एक साथ नहीं खायी जा सकती। व्यक्ति किनारे से चले तो पेट पूरा भर सकता है। चाणक्य एक बुद्धिया के घर पहुँचा। भूख लगी थी। बुद्धिया ने थाली भर कर खिचड़ी परोसी। चाणक्य

ने बीच में हाथ डाला। हाथ जल गया। बुद्धिया ने चाणक्य को पहचाना नहीं था। उसने उसको साधारण राहगीर समझकर कहा- "तुम चाणक्य की तरह मूर्ख हो।" चाणक्य चौंका। उसने पूछा- "माँ! चाणक्य ने क्या मूर्खता की?" बुद्धिया बोली- "उसने आसपास के छोटे राज्यों को जीते बिना सीधा पाटलिपुत्र पर आक्रमण कर दिया, इसीलिए उसे पराजित होना पड़ा। तुम भी किनारे से थोड़ी-थोड़ी खिचड़ी खाते तो तुम्हारा हाथ नहीं जलता। सीधा बीच में हाथ डालना बुद्धिमत्ता है क्या?"

विश्वधर्म की कल्पना भी गलत नहीं है, पर उसके स्वरूप को ठीक तरह से समझना होगा। धर्म के दो रूप हैं - उपासना और आचरण। उपासना धर्म कभी विश्वधर्म नहीं बन सकता। आस्था और रुचि के भेद से उपासना के अनेक भेद हो सकते हैं। आचरण की बात पर सबकी सहमति संभव हो सकती है। जीवन-निर्माण या चरित्र-निर्माण की कुछ ऐसी बातें हैं जो पूरे विश्व पर एक रूप में लागू हो सकती हैं। उनका संकलन कर उन्हें निर्विशेषण धर्म के रूप में प्रस्तुत किया जाये तो विश्वधर्म का स्वरूप उजागर हो सकता है। उस धर्म को कोई विशेषण देना ही हो तो मानव धर्म - यह विशेषण दिया जा सकता है। मैत्री एक आचरण है, संयम एक आचरण है, अहिंसा एक आचरण है। इनमें रुचि, आस्था, संस्कार





अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। इसकी आकांक्षा एक सही मनुष्य के निर्माण की है। मनुष्य का निर्माण करने के लिए प्रवृत्ति और निवृत्ति का संतुलन करना होगा। चिन्तन और अचिन्तन का संतुलन करना होगा। वाक् और मौन का संतुलन करना होगा। आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का संतुलन करना होगा। संतुलन का आधार है संयम।

या विचार का क्या भेद हो सकता है? इन तत्वों का संबंध सब लोगों से है। कोई व्यक्ति धर्म को माने या नहीं, मैत्री आदि को अमान्य नहीं कर सकता। ऐसी स्थिति में विश्वधर्म की कल्पना सहज ही साकार हो सकती है।

व्यक्ति और विश्व में अन्तर क्या है? व्यक्ति धागा है और विश्व वस्त्र है। व्यक्ति मनका है और विश्व माला है। दोनों का योग होता है। फिर भी वस्त्र-निर्माण से पहले धागे के अस्तित्व और उसकी गुणवत्ता पर ध्यान देना होगा। विश्वधर्म की प्रकल्पना में भी मूलतः व्यक्ति को पकड़ना जरूरी है। व्यक्ति-व्यक्ति धार्मिक या आध्यात्मिक बनेगा तो अर्थर्म को टिकने के लिए जमीन नहीं मिलेगी। मेरे अभिमत से अणुव्रत के सिद्धान्त ऐसे हैं, जो विश्वधर्म के रूप में प्रतिष्ठित हो सकते हैं। अपनी लम्बी पदयात्राओं और व्यापक जनसंपर्क में मुझे एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला, जिसने सिद्धान्तः अणुव्रत को अस्वीकार किया हो। इसलिए आज अपेक्षा इस बात की है कि व्यक्ति-व्यक्ति को चरित्रनिष्ठ या धार्मिक बनाकर विश्वधर्म की पृष्ठभूमि को मजबूत बनाया जाये।

जीवन का बुनियादी काम

एक महत्वाकांक्षी युवक ने भावी जीवन की विस्तृत रूपरेखा बनायी। विकास की अनेक योजनाएं बनाकर वह अपने

गुरु के पास गया। उसने अपनी फाइल गुरु को सौंपते हुए कहा- "गुरुदेव! मैंने अपना भावी कार्यक्रम निर्धारित किया है। मैं आपसे मार्गदर्शन लेने आया हूँ। इन योजनाओं की क्रियान्विति के लिए मुझे प्राथमिक रूप में क्या तैयारी करनी है?"

गुरु ने शिष्य की योजनाओं पर एक विहंगम दृष्टि डाली। फाइल उसे लौटाकर वे बोले- "इसमें प्रथम योजना का कोई उल्लेख ही नहीं है। जब तक वह पूरी न हो जाये, और कुछ सोचना व्यर्थ है।" सुनकर युवक अनमना हो गया।

उसने पूछा- "गुरुदेव! वह कौन-सी योजना है?"

गुरु ने कहा- "वह योजना है स्वभाव निर्माण और चरित्र निर्माण की। जब तक स्वभाव और चरित्र का निर्माण नहीं होता, कोई व्यक्ति बड़ा आदमी नहीं बन सकता।"

वर्तमान युग की सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि मनुष्य सब कुछ बनना चाहता है, पर मनुष्य बनने की बात नहीं सोचता। वह नित नयी योजनाओं का निर्माण करता है, पर चरित्र-निर्माण की योजना बनाने के लिए उसके पास समय नहीं होता। वह अपने आसपास रहने वाले सब लोगों में बदलाव देखना चाहता है, पर अपने स्वभाव को बदलने का संकल्प नहीं करता। वह सबको अपने अनुकूल बनाने का सपना संजोता है, पर स्वयं किसी के अनुकूल होने की मानसिकता नहीं बनाता। ऐसी स्थिति में उसके द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति कैसे होगी?

चरित्र निर्माण जीवन का बुनियादी काम है। इसके लिए चरित्रनिष्ठ व्यक्तियों का संपर्क आवश्यक है। चरित्र को उदार बनाने वाले कार्यक्रमों को समझना और उनमें अपनी सक्रिय भागीदारी रखना जरूरी है, पर समस्या है समय की। आज की जीवनशैली इतनी कसी हुई है कि चरित्र की चर्चा या अभ्यास के लिए समय ही नहीं रहता। माना कि आदमी व्यस्त है। यह व्यस्तता किसके सामने नहीं है? हर आदमी को चौबीस घण्टे का समय मिलता है। हर व्यक्ति का वर्ष तीन सौ साठ या पैंसठ दिनों का होता है। समय जितना है, उतना ही है। सवाल है उसके नियोजन का। मनुष्य समय की नियमितता को अपना आदर्श बना ले तो उसके बहुत-से अधूरे काम पूरे हो सकते हैं।

अणुव्रत : चरित्रनिर्माण का आन्दोलन

अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। इसकी आकांक्षा एक सही मनुष्य के निर्माण की है। मनुष्य का निर्माण करने के लिए प्रवृत्ति और निवृत्ति का संतुलन करना होगा। चिन्तन और अचिन्तन का संतुलन करना होगा। वाक् और मौन का संतुलन करना होगा। आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का संतुलन करना होगा। संतुलन का आधार है संयम। संयम की साधना अखण्ड रूप में हो सकती है और खण्ड-खण्ड करके भी हो सकती है। अखण्ड संयम की आराधना हर व्यक्ति के वश की बात नहीं है, पर खण्ड-खण्ड में संयम का पालन कोई भी कर सकता है।

अणुव्रत का उद्देश्य भी यही है कि छोटे-छोटे संकल्पों के सोपान पर आरोहण करता हुआ मनुष्य संयम के शिखर का स्पर्श



अहिंसा ही समाधान है

मनुष्य का जीवन अशान्त है। अशान्त भी वह किसी एक तरफ से नहीं, बल्कि चारों ओर से है। ऐसा कहना चाहिए कि उसकी अशान्ति क्रमशः अधिक व्यापक बनती जा रही है। विश्व के एक छोर से दूसरे छोर तक चारों ओर इस अशान्ति रूपी आग के शोले बरस रहे हैं। यद्यपि इस अशान्ति को मिटाने के लिए विभिन्न स्तरों पर अनेक प्रयत्न हो रहे हैं, पर उनका कोई वांछित परिणाम नहीं आ रहा है। इसका कारण क्या है? एक कारण तो यह हो सकता है कि प्रयत्न या पुरुषार्थ की दिशा सही नहीं है। जब रास्ता ही सही न हो तो व्यक्ति कितनी भी दूर क्यों न चले, मंजिल कैसे मिलेगी? बड़े-बड़े राष्ट्रों के शीर्षस्थ नेता अणु बमों, हाइड्रोजन बमों एवं रॉकेटों के निर्माण पर अपना ध्यान टिकाये हुए हैं। अरबों-अरबों रूपये इन पर खर्च किये जा रहे हैं। बड़ी तेजी से इनका निर्माण कार्य चल रहा है। कहीं-कहीं इनके परीक्षण भी चल रहे हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि लोग हिंसा के माध्यम से शान्ति की प्राप्ति का प्रयास कर रहे हैं, जबकि हमारे आत्मज्ञानी ऋषि-मुनियों ने शान्ति का मार्ग अहिंसा को बताया है।

प्रश्न उपस्थित किया जा सकता है कि जब भयंकर युद्ध हो रहा है, तब अहिंसा के द्वारा शान्ति की स्थापना कैसे हो पाएगी? उक्त प्रश्न के साथ ही यह प्रतिप्रश्न भी जुड़ा रहेगा कि क्या हिंसा से शान्ति स्थापित हो सकेगी? अब समझने की बात यह है कि हिंसा स्वयं अशान्ति है। वह अशान्ति का कारण है, बल्कि सबसे बड़ा कारण है। उसके माध्यम से शान्ति की प्राप्ति का प्रयत्न करना उतना ही निरर्थक है, जितना खून से सने कपड़े को खून से धोने का प्रयत्न। हिंसा से युद्ध की आग में घी डालने का काम ही हो सकता है, पानी डालने का नहीं। पानी डालने का काम तो अहिंसा का है। वही एकमात्र इस कार्य को करने में सक्षम है।

भारतीय जीवनशैली पुरुषार्थ से भावित जीवनशैली रही है। कर्म और भाग्य के तटबन्ध कितने ही मजबूत हों, जीवन-सरिता को प्रवाहित रहना पड़ेगा। प्रवाह से अलग होने वाला जल या तो अपने अस्तित्व को समाप्त कर देता है अथवा एक स्थान पर स्थिर होकर सड़ने लगता है। निर्झर हो या नदी, उसकी गतिमयता ही उसको निर्मल बनाकर रखती है। पुरुषार्थ ही मनुष्य के व्यक्तित्व को नया निखार देता है। पुरुषार्थहीनता भविष्य को अन्धकार में धकेलने का स्पष्ट संकेत है।

करे। जब तक संयम या चरित्र के प्रति आस्था है, तब तक मनुष्य बुराई से बचने का प्रयास करता रहेगा। जिस दिन आस्था का धागा टूट जाएगा, जीवन का कोई क्रम नहीं रह पाएगा। उपासना को गौण और चरित्र को मुख्य मानने वाला यह आंदोलन मानव जाति के लिए एक दिशादर्शन है। चरित्र निर्माण का लक्ष्य और उस दिशा में प्रस्थान-इसी क्रम से व्यक्ति अपनी चारित्रिक संपदा को सुरक्षित और वृद्धिंगत रख पाएगा।

पुरुषार्थनिर्माता है भाग्य का

पुरुषार्थ और भाग्य - ये दो विरोधी धूम हैं। पुरुषार्थ कर्म की प्रेरणा है। भाग्य अदृष्ट की आराधना है। परिणाम आये या नहीं, पुरुषार्थी कर्म में संलग्न रहता है। भाग्यवादी कृष्ण भी करता है, उसमें अपने कर्तृत्व का अनुभव नहीं करता। अपने सफल पुरुषार्थ को भी वह भाग्य का अवदान मानता है। कृष्ण लोग देववाद में विश्वास करते हैं। अमुक देव की पूजा करने से व्यक्ति की सब कामनाएं सफल हो जाती हैं, इस अवधारणा के आधार पर मन्दिरों में परिक्रमा करने वालों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

भाग्यवाद और देववाद के साथ एक नया वाद और पनप रहा है - ज्योतिषवाद। भाग्य और देव की तरह ज्योतिष के प्रति भी लोगों में अन्धश्रद्धा सघन होती जा रही है। ज्योतिष एक विद्या है, यह सत्य है किंतु बिना पुरुषार्थ किये सफलता पाने की मानसिकता रुग्ण मानसिकता है। संयोगवश किसी व्यक्ति को सफल होने का अवसर उपलब्ध हो सकता है, किन्तु अधिकतर व्यक्ति ऐसी त्रासदी से गुजरकर कहीं के नहीं रहते।

भारतीय जीवनशैली पुरुषार्थ से भावित जीवनशैली रही है। कर्म और भाग्य के तटबन्ध कितने ही मजबूत हों, जीवन-सरिता को प्रवाहित रहना पड़ेगा। प्रवाह से अलग होने वाला जल या तो अपने अस्तित्व को समाप्त कर देता है अथवा एक स्थान पर स्थिर होकर सड़ने लगता है। निर्झर हो या नदी, उसकी गतिमयता ही उसको निर्मल बनाकर रखती है। पुरुषार्थ ही मनुष्य के व्यक्तित्व को नया निखार देता है। पुरुषार्थहीनता भविष्य को अन्धकार में धकेलने का स्पष्ट संकेत है।

संयम : समाज की प्राणशक्ति

अध्यात्म का अर्थ है कामना पर नियंत्रण करना। इसके साथ अर्थ की व्यवस्था को ठीक करना चाहें तो काफी सुविधा हो जाएगी। स्वस्थ समाज के लिए प्रथम आवश्यकता है काम को समझना; काम की समस्याओं का अध्ययन करना। इस स्थिति में आर्थिक अपराध और भोग-उपभोग की जटिल समस्या का परिष्कार करने में बहुत सुविधा हो जाएगी।

हम सब देखते हैं, किन्तु जिसे देखना चाहिए, उसे कम देखते हैं, वहाँ तक कम पहुँच पाते हैं। व्यक्ति को देखते हैं, समाज को देखते हैं। देखते हैं तो कुछ विकार सामने आते हैं, कुछ बीमारियां सामने आती हैं। प्रतीत होता है - व्यक्ति रुग्ण है और समाज भी रुग्ण है। आदमी चाहता है - वह रुग्ण न रहे। प्रत्येक युग के जो चिंतक व्यक्ति हुए हैं, उन्होंने सामाजिक स्वास्थ्य के लिए योजना बनायी है, दर्शन दिया है, प्रयत्न किया है।

कुछ दार्शनिकों और अर्थशास्त्रियों ने समाज की बीमारी का कारण अर्थ की समस्या को बताया। अर्थ के आधार पर समाज बनता है और बिगड़ता है। यदि अर्थ की व्यवस्था ठीक कर दी जाये तो समाज स्वस्थ बन जाएगा। इसी आधार पर एक दर्शन चल पड़ा साम्यवाद का, समाजवाद का। काफी प्रयत्न किये गये अर्थ की व्यवस्था को संतुलित करने के लिए, समाज को स्वस्थ बनाने के लिए, किन्तु व्यवस्था संतुलित नहीं हुई। असंतुलन बढ़ता रहा। आर्थिक समस्या नहीं सुलझी, आर्थिक अपराध बढ़े हैं, स्वास्थ्य बिगड़ा है। बीमारी आखिर कहाँ है? बीमारी क्या है? इन दो बिन्दुओं पर विचार करना होगा। काम और अर्थ - ये दो समाज की मूलभूत प्रवृत्तियां हैं। प्रश्न है - काम के सुधारने से अर्थ सुधरता है

या अर्थ के सुधारने से काम सुधरता है? इस बिन्दु पर कम ध्यान दिया गया, इसकी मीमांसा कम की गयी। आर्थिक अवधारणा बाद में बनती है। काम की चेतना स्वाभाविक है। हर व्यक्ति कामना के साथ जन्म लेता है। इच्छा, काम या कामना - यह मनुष्य की मौलिक मनोवृत्ति है। यदि मनोवृत्तियों का वर्गीकरण किया जाये और समाहार किया जाये तो एक ही मनोवृत्ति अंतिम होगी, वह है काम, कामना या इच्छा। प्रत्येक प्राणी में वह होती है। अर्थ का हेतु भी काम है। मूल कामना है, जो सारी प्रवृत्तियों को जन्म दे रही है और सारा विस्तार कर रही है।

काम का अर्थ

मार्क्स ने अर्थ पर ध्यान केन्द्रित किया और उसका ऐतिहासिक सन्दर्भ में अध्ययन किया। यदि वैसे ही काम पर ध्यान दिया जाता और उसका ऐतिहासिक सन्दर्भ में अध्ययन किया जाता तो समस्या काफी सुलझ जाती। मूलभूत समस्या अर्थ नहीं है। यह नम्बर दो की समस्या है। एक नम्बर की समस्या है काम। 'काम जानामि ते रूपं संकल्पात् किल जायसे' - काम एक संकल्प के साथ व्यक्त होता रहता है। हम काम को विस्तार से समझें। काम का अर्थ कोरा यौन सम्बन्ध नहीं है। हमारी इन्द्रियों की अतृप्ति, इच्छा - ये सब मनुष्य में नाना रूपों में पैदा होती रहती हैं। आँख,





हमारी इन्द्रियों की अतृप्ति इच्छा - ये सब मनुष्य में नाना रूपों में पैदा होती रहती हैं। आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा - सब इन्द्रियों की कामनाएं हैं, अतृप्ति हैं और वे अपनी अतृप्ति को पूरा करना चाहती हैं। जैसे इन्द्रिय की इच्छा और कामना है, वैसे ही मन और भावनागत कामना है।

कान, नाक, जीभ, त्वचा - सब इन्द्रियों की कामनाएं हैं, अतृप्ति हैं और वे अपनी अतृप्ति को पूरा करना चाहती हैं। जैसे इन्द्रिय की इच्छा और कामना है, वैसे ही मन और भावनागत कामना है।

काम, अर्थ और भोग

पुरुष क्या है? काम ही तो है। एष वै कामः अगर कामना न हो तो पुरुष का जीवन बदल जाएगा। गीता में जो निष्काम शब्द का चुनाव किया गया है, वह बहुत सटीक है। निष्काम वह है, जो कामना रहित है। फल की कामना नहीं है तो फिर अर्थ की स्पर्धा नहीं होगी, अर्थ का अपराध भी नहीं होगा। यदि अर्थ और काम दोनों का समवेत अध्ययन किया जाता तो शायद हम समाधान के बहुत निकट पहुँच जाते।

धर्म के लोगों ने काम का अध्ययन बहुत विस्तार से किया। समाजवाद और साम्यवाद के दार्शनिकों ने अर्थ का अध्ययन बहुत विस्तार से किया। दोनों के अध्ययन अलग-अलग रहे। यदि मिला दें तो समस्या का बहुत कुछ हल हो जाये। काम और अर्थ - दोनों का संयुक्त अध्ययन भी होना चाहिए। कामशास्त्र की बात सेक्स के सन्दर्भ में नहीं कह रहा हूँ। कामशास्त्र यानी इच्छा का शास्त्र, कामना का शास्त्र। कामशास्त्र, अर्थशास्त्र और इनके साथ जुड़े उपभोगशास्त्र। इन तीनों का एक समवाय बनता है तो समाज को स्वस्थ बनाने वाली प्रक्रिया उपलब्ध हो जाती है।

स्वस्थ समाज के लक्षण

एक व्यक्ति चोरी करता है। भीतर में अगर कामना नहीं है तो कठिनाई झेल लेगा, किन्तु चोरी नहीं करेगा। चोरी के पीछे गरीबी कोई कारण नहीं है। ऐसे चोर हैं जो बहुत संपन्न हैं, किन्तु आदतन चोरी करते हैं, संस्कारवश करते हैं, दमित वासना की पूर्ति हेतु करते हैं। जितने अपराध होते हैं, वे किसी प्रयोजन के साथ ज्यादा नहीं होते। उनके पीछे दमित वासनाएं हैं, संस्कार हैं, और भीतर जाएं तो कामना का चक्र चल रहा है। कामना का संयम नहीं है, इसलिए अपराध में जा रहा है।

स्वस्थ समाज के तीन लक्षण हैं-

- जिस समाज में काम पर नियंत्रण किया जाता है।
- जिस समाज में अनावश्यक हिंसा नहीं होती है।
- जिस समाज में आर्थिक अपराध नहीं होता है।

जड़ की बात

भगवान महावीर ने कहा- 'कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं' - सारे दुःख कामना के साथ होते हैं। कामना का अतिक्रमण करो, दुःख अपने आप मिट जाएगा। दुःख को मिटाने का प्रयत्न मत करो। तुम दुःख की जड़ तक जाओ। दुःख की जड़ है काम। काम तक जाओ, वहाँ समाधान करो, तुम्हें अनुभव होगा - दुनिया में दुःख नाम की कोई चीज नहीं है।

अध्यात्म के आचार्यों ने सचमुच जड़ को पकड़ा था। समाजवाद और साम्यवाद के कर्णधारों ने जड़ को नहीं पकड़ा, तने को पकड़ लिया। स्वस्थ समाज की जड़ है कामना का संयम और उसका तना है अर्थ का संयम। ये दो बातें आती हैं तो स्वस्थ समाज के लिए हमारी पृष्ठभूमि प्रशस्त बन जाती है। कामना का संयम है तो उपभोग की सीमा अपने आप हो जाती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार करें। पहले व्यक्ति के मन में कामना पैदा होती है। एक स्त्री के मन में कामना पैदा हुई - मुझे हार पहनना है। पति से हार की माँग की। हार प्राप्त हो गया। कामना की पूर्ति हो गयी, संतुष्टि हो गयी, किन्तु दूसरे दिन पड़ोसिन के गले में उससे भी बढ़िया हार देखा। उसकी कामना को पुनः उत्तेजना मिली। पति से बोली - "जो कल लाये थे, वह तो साधारण हार है, मुझे तो उससे बढ़िया हार चाहिए।"

यह काम-प्रेरित समस्या है। आज के ये सारे फैशन इसीलिए चल रहे हैं कि एक-दूसरे को देखकर कामना का उद्दीपन हो रहा है। वर्तमान में कामना के उद्दीपन के जितने भी उपक्रम चल रहे हैं, उन्हें असीम कहा जा सकता है और उसी आधार पर सारा अर्थ चक्र चल रहा है।

अपराध क्यों

कामना का चक्र भीतर से चलता है। पाप को कौन कराता है? गीता में इस बात को ठीक पकड़ा गया - यह काम करवा रहा है।



हर व्यक्ति के मन में काम प्रबल है। अर्थ को नियंत्रित करेंगे तो इतना संभव है - व्यक्ति कठोर दण्ड, कारावास के डर से सामने कुछ नहीं करेगा, किन्तु भीतर में तो अपराध का चक्र चलेगा और कामना उसको प्रेरित करती रहेगी। स्वस्थ समाज वह है, जिसने इस सच्चाई को समझा है और काम को नियंत्रित करने का प्रबन्ध किया है।

जब तक काम पर नियंत्रण नहीं होगा, अर्थ पर नियंत्रण नहीं हो पाएगा। आज यही हो रहा है - हम अर्थ की व्यवस्था को तो संतुलित करना चाहते हैं किन्तु काम पर ध्यान दे नहीं दे रहे हैं। इसीलिए समाजवाद और साम्यवाद की कल्पना सफल नहीं हुई। यही वह बिन्दु है, जहाँ अध्यात्म को जोड़ना चाहिए। काम की व्यवस्था को ठीक किये बिना समाज और अर्थ की व्यवस्था ठीक हो सकती है, इसका सपना भी नहीं देखना चाहिए।

हर व्यक्ति के मन में काम प्रबल है। अर्थ को नियंत्रित करेंगे तो इतना संभव है - व्यक्ति कठोर दण्ड, कारावास के डर से सामने कुछ नहीं करेगा, किन्तु भीतर में तो अपराध का चक्र चलेगा और कामना उसको प्रेरित करती रहेगी। सबसे बड़ी जो मौलिक प्रेरणा है, वह है काम। काम के द्वारा ही सारा चक्र संचालित हो रहा है। स्वस्थ समाज वह है, जिसने इस सच्चाई को समझा है और काम को नियंत्रित करने का प्रबन्ध किया है।

स्वस्थ समाज के लिए

इस बिन्दु पर अध्यात्मवाद और समाजवाद दोनों जुड़ जाते हैं। मार्क्स और एंजिल्स ने अपने अंतिम वर्षों में कहा था - यदि यह अध्यात्म का सूत्र पहली अवस्था में हमें प्राप्त होता तो हमारी संपूर्ण दार्शनिक कल्पना दूसरे प्रकार की होती, किन्तु अब हमारी अवस्था हो गयी और हम उसे सुधारने की स्थिति में नहीं हैं। उन्होंने इस सच्चाई का खुलकर प्रतिपादन किया-अध्यात्म के बिना, चरित्र के बिना कोरी अर्थव्यवस्था की बात चल नहीं पाएगी। अध्यात्म का अर्थ है कामना पर नियंत्रण करना। इसके साथ अर्थ की व्यवस्था को ठीक करना चाहें तो काफी सुविधा हो जाएगी। स्वस्थ समाज के लिए प्रथम आवश्यकता है काम को समझना; काम की समस्याओं का अध्ययन करना, काम के द्वारा होने वाली अभिवृत्तियों का अध्ययन करना, उसके दुष्परिणामों का अध्ययन करना और काम पर नियंत्रण करने वाली आध्यात्मिक विधियों का अध्ययन करना, प्रयोग करना। इस स्थिति में आर्थिक अपराध और भोग-उपभोग की जटिल समस्या का परिष्कार करने में बहुत सुविधा हो जाएगी।

मूल समस्या है काम

हमारे सामने सबसे पहली समस्या उपभोक्तावाद की है। पदार्थ कम और उपभोक्ता ज्यादा, यही संघर्ष है। यह स्थूल संघर्ष

है। हमारी बुद्धि के सामने स्थूल संघर्ष ही आएगा। हम उसी से जूझने का प्रयत्न करते हैं। एक समस्या है - पदार्थ की समस्या कैसे सुलझाएं? दूसरी समस्या है - आर्थिक समस्या को कैसे सुलझाएं? इन दो पर आकर अटक जाते हैं। बुद्धि की सीमा इन दो तक ही है। इससे आगे हमें जाना होगा अनुभव और प्रज्ञा के माध्यम से। प्रज्ञा और अन्तर्दृष्टि से देखना होगा कि आर्थिक समस्या मूल नहीं है। उपभोक्ता की समस्या भी मूल नहीं है। मूल समस्या है कामना की।

कारण क्या है?

अध्यात्म की प्रत्येक शाखा ने चाहे वह वैदिक और उपनिषद् की धारा हो, जैन और बौद्ध दर्शन की धारा हो, इस पर प्रकाश डाला। महावीर ने कहा- 'इच्छा हुआ गाससमा अणन्तया।' इच्छा आकाश के समान अनंत है। जब तक कामना का संयम नहीं करेंगे, किसी भी समस्या का समाधान नहीं होगा।

अतृप्ति वासना कथनी और करनी की दूरी पैदा करती है। आज का बड़ा प्रश्न है - कथनी और करनी की दूरी क्यों है? इसका कारण न आर्थिक है, न सामाजिक है, बल्कि आत्मिक है। यह भीतर की समस्या है, काम की समस्या है। एक साम्यवादी शासन प्रणाली के मुखिया को बंदी बनाने के बाद उसके प्राप्ताद्वय को देखा गया तो हीरे जड़े जूते मिले। इन्हीं मूल्यवान वस्तुएं मिलीं, जिनकी कल्पना नहीं की जा सकती। यदि राजप्रापासाद की उस सारी सामग्री को बाँटा जाता तो शायद हजारों-हजारों परिवार तृप्त हो जाते। संग्रह और शोषण के विरोध में चलने वाली विचारधारा का नेतृत्व करने वाला स्वयं इतना परिग्रही ! इसका कारण क्या है?

हमने इस सच्चाई को क्यों नहीं पकड़ा, यह बड़ा आश्चर्य है और आश्चर्य नहीं भी है। जब तक अध्यात्म की एषणा नहीं करेंगे, उस पर गहरा चिन्तन नहीं करेंगे, तब तक इसको पकड़ा भी नहीं जा सकता और छोड़ा भी नहीं जा सकता। पर्यावरण के संदर्भ में कहा गया - पदार्थ सीमित है, उपभोक्ता ज्यादा हैं, इसलिए बाँट-बाँट कर खाओ। 'सबके लिए हो' यह अवधारणा राजनीति में प्राचीनकाल से चलती आ रही है। चाणक्य ने कहा- 'अकेले मत खाओ, खाओ और खिलाओ।' इसे आज इस रूप में लिया जा रहा है - रिश्त खाओ और खिलाओ। स्वयं रिश्तलो और दूसरों को भी रिश्त खाने दो। इसलिए ऊपर का अधिकारी, बीच का अधिकारी और नीचे का अधिकारी - तीनों में मेल होता है। अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, पर्यावरण शास्त्र से जो अवधारणा अछूती रह गयी, वह है अध्यात्मशास्त्र की। उसे जब तक जोड़ा नहीं जाएगा, तब तक समाज स्वस्थ नहीं बनेगा। जीवन विज्ञान का वक्तव्य है - समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, सृष्टि विज्ञानशास्त्र - सब चलेंगे, किन्तु इन सबके साथ कामना के संयम की बात जोड़ दें, स्वस्थ समाज का आधार निर्मित हो जाएगा।



समाज की प्राणशक्ति

संयम समाज की प्राणशक्ति है। इस प्राणशक्ति को प्रतिष्ठित कैसे करें। एक उपाय है शिक्षा। शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी के मस्तिष्क में प्रारंभ से ही अहिंसा की चेतना जागृत की जाये। यह काम-संयम की चेतना अहिंसा की चेतना है। जितना काम का असंयम, उतनी हिंसा। जितना काम का असंयम, उतना आर्थिक अपराध। जड़ की बात है - काम संयम या अहिंसा की चेतना को जागृत करें और उसका सशक्त माध्यम है शिक्षा। प्रारंभ से ही विद्यार्थी के मस्तिष्क में यह धारणा बिठाएं - जो इच्छा पैदा होती है, उसे भोगो मत, उसकी काट-छांट करना सीखो। जो इच्छा पैदा हो, उस पर तीन कोणों से विचार करें। प्रत्येक इच्छा का इन तीनों भूमिकाओं के संदर्भ में विश्लेषण करें -

- क्या इसे पूरा करना अनिवार्य है?
- क्या इसे पूरा करना आवश्यक है?
- क्या यह मात्र लालसा है?

योजनाएं असफल क्यों होती हैं

हमारी सारी योजनाएं असफल क्यों होती हैं? असफल बनाने वाला एक कालचक्र है और वह है कामचक्र। इसका परिष्कार करें। विद्यार्थी के मस्तिष्क में संयम की चेतना को जागृत करें। अगर कामचक्र का संयम नहीं किया जा सकता तो कोई भी संन्यासी न बनता, त्यागी न बनता। सामाजिक जीवन में भी अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं कि अमुक व्यक्ति ने अपना सर्वस्व त्याग दिया। आज भी मिलते हैं, किन्तु कम मिलते हैं।

इस भावना और प्रेरणा को व्यापक बनाने के लिए शिक्षा के साथ इसे जोड़ना जरूरी है। ऐसा नहीं सोचा जा सकता कि इससे सब व्यक्ति ठीक हो जाएंगे, सारा समाज ठीक हो जाएगा, किन्तु इतना अवश्य है कि शिक्षा के साथ यदि काम नियंत्रण की चेतना या अहिंसा की चेतना को जागृत करने की प्रविधियां जोड़ी जाएं तो पचास प्रतिशत से ज्यादा ठीक हो जाएगा, यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है।

मनुष्य इतना विचित्र है कि सबको ठीक करना भगवान के लिए भी संभव नहीं है। जिनकी मस्तिष्कीय चेतना विकसित ही नहीं है, वे कैसे ठीक हो जाएंगे? जिनकी कामना इतनी ज्यादा प्रबल है कि कोई दवा काम नहीं करती, वे कैसे ठीक हो जाएंगे? किन्तु यदि आधे लोग भी ठीक होते हैं तो समाज के स्वस्थ होने की काफी संभावनाएं हैं।

वीतरागी बनाने की बात न सोचें

स्वास्थ्य का लक्षण यह नहीं है कि सब कुछ ठीक रहे। हमारा शरीर ऐसा है कि कहीं न कहीं, कुछ न कुछ गड़बड़ चलती ही रहती है। यदि पाचनतंत्र, उत्सर्जनतंत्र, श्वासतंत्र ठीक काम कर रहे हैं तो मानना चाहिए कि व्यक्ति स्वस्थ है। वैसे ही समाज में कामना की प्रबलता से होने वाली हिंसा और आर्थिक अपराध

समाज को पूर्णतः अहिंसक बनाने की बात न सोचें। अहिंसक होने का मतलब सिर्फ इतना ही है कि सामाजिक व्यक्ति अनावश्यक हिंसा नहीं करता। इतना हो जाये तो काफी परिवर्तन आ सकता है। इस चेतना को जगाया जा सकता है और उसे जगाने की पद्धति है जीवन विज्ञान। उसके द्वारा मस्तिष्क को प्रशिक्षित किया जा सकता है, बदला जा सकता है। यह असंभव कल्पना नहीं है। सर्कस के जानवरों को देखें। वे कैसे मनुष्यों जैसे करतब कर लेते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने पशुओं के मस्तिष्क पर इलेक्ट्रोड लगा कर परीक्षण किया। इलेक्ट्रोड के प्रभाव से आश्यचर्यजनक मस्तिष्कीय परिवर्तन देखे गये। एक शेर के सिर पर इलेक्ट्रोड लगाया तो वह इतना डर गया कि दुबक कर एक कोने में जा बैठा और खरगोश के सिर पर दूसरी तरह का इलेक्ट्रोड लगाया गया तो वह इतना आक्रामक हो गया कि बार-बार शेर पर झटपटने लगा। यह मस्तिष्कीय परिवर्तन है। काफी प्रयोग इस प्रकार के हैं, हो रहे हैं।

रहस्यपूर्ण विधि

जब भय के बिन्दु को जागृत किया जा सकता है, अभय के बिन्दु को जागृत किया जा सकता है तो क्या कामना के बिन्दु पर हम साधना के द्वारा नियंत्रण नहीं पा सकते। ऐसी विधियां खोजी गयी हैं, और भी खोजी जा सकती हैं, जिनसे काम नियंत्रित हो जाये। स्वस्थ समाज रचना का, आर्थिक अपराध को कम करने का और बढ़ती हुई हिंसा की गति को रोकने का एक संकल्प जीवन विज्ञान प्रस्तुत करता है और वह है शिक्षा द्वारा कामकेन्द्र पर नियंत्रण करना। जीवन विज्ञान ने उन विधियों को प्रस्तुत किया है, जिनसे चेतना को गोनाइस और एड्रिनल ग्रंथियों से हटाकर पिट्यूटरी और पीनियल ग्लैण्ड के परिपाश्व में ले जाएं और वहां स्थापित करें। इससे समाज स्वस्थ बनेगा, व्यक्ति स्वस्थ बनेगा और अपराध कम होंगे। इस समस्त रहस्यपूर्ण विधि का मूल्यांकन करें, उसे अपनाएं, शिक्षा के साथ जोड़ें, स्वस्थ समाज का सपना एक दिन सच बन जाएगा। ■



क्रोध - विजय से क्या मिलेगा ?

क्रोध पर विजय प्राप्त करने से तीन लाभ होंगे। पहला-शांति का भाव पैदा होगा, सहन करने की क्षमता का विकास होगा। दूसरा, गुरुस्सा करने से जिन कर्मों का बंधन हो सकता है, उस बंधन से बचाव हो जाएगा और तीसरा, पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा होगी। इसलिए आदमी गुरुस्से को जीतने का अभ्यास करे, चेतना को पवित्र बनाने का प्रयास करे।

प्र शन किया गया—कोहविजएं भंते! जीवे किं जणयइ? भंते! क्रोध विजय से जीव क्या प्राप्त करता है? उत्तर दिया गया — कोहविजएं खंतिं जणयइ, कोहवेयणिजं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ। क्रोध विजय से क्षमा का भाव उत्पन्न होता है, क्रोध वेदनीय कर्म का बंधन नहीं होता और पूर्वबद्धकर्म की निर्जरा हो जाती है।

गुस्सा करना आदमी का स्वभाव नहीं है, परन्तु स्वभाव जैसा बना हुआ है। यदा-कदा मन के प्रतिकूल बात होती है तो गुस्सा आ जाता है और कभी-कभी वह शब्दों के द्वारा प्रकट भी हो जाता है। चेहरे पर भी उसका असर हो जाता है। आँखें लाल हो जाती हैं। चेहरा अदर्शनीय-सा बन जाता है, किन्तु विवेक संपत्र आदमी गुस्से को मन तक सीमित रख लेता है। वीतराग पुरुष तो सर्वथा कषाय मुक्त होते हैं। इसलिए वे कभी गुस्सा नहीं करते। उनका चेहरा कितना सुन्दर लगता है।

श्रीमज्जयाचार्य ने 'चौबीसी' में तीर्थकर के लिए कहा है— 'इन्द्र थकी अधिका ओपै, करुणागर कदेय नहीं कोपै।' तीर्थकर इन्द्र से भी अधिक सुशोभित होते हैं, अच्छे लगते हैं, सुन्दर लगते हैं। वे करुणा के सागर होते हैं, कभी गुस्सा नहीं करते। किन्तु सामान्य आदमी के लिए गुस्सा स्वभाव जैसा बना हुआ है। उसे

समाप्त करना एक साधना है और इसी का नाम है – क्रोध-विजय। दसवेआलियं में कहा गया है - उवसमेण हणे कोहं अर्थात् उपशम के द्वारा गुस्से को जीतना चाहिए। प्रतिपक्ष भावना से पक्ष का नाश होता है। गुस्सा पक्ष है और उसका प्रतिपक्ष है उपशम। गुस्से के कारण व्यक्ति स्वयं दुःखी बनता है और आसपास रहने वाले लोग भी उसके निमित्त से दुःखी बन जाते हैं। परिवारों में अशांति या कलह का वातावरण बनता है। उसके अनेक कारण हो सकते हैं। उनमें से एक कारण है – गुस्सा। बात-बात में गुस्सा करने से सामने वाला व्यक्ति भी अशान्त या दुःखी बन जाता है।

परिवार में कोई गुस्सैल स्वभाव वाला व्यक्ति हो तो दूसरे लोग उसकी प्रकृति को समझकर शांत रहें तो वह भी शांत हो सकता है। नीतिशास्त्र में कहा गया है – अतृणे पतितो वद्धिः स्वयमेवोपशाम्यति अर्थात् जहाँ अग्नि गिरती है, वहाँ नीचे कोई तृण, घास आदि कुछ नहीं है तो आप अपने आप शान्त हो जाएगी। यदि घास, तृण आदि पर अग्नि गिरेगी तो वह भभक जाएगी, और अधिक प्रज्वलित हो जाएगी। परिवार में शांति रहे, इसलिए गुस्से पर नियंत्रण करना अपेक्षित है। जब सबको साथ में रहना है तो फिर शांति से रहना चाहिए। यदि दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी दोनों ही क्रोधी स्वभाव के होते हैं तो आये दिन उनमें झगड़ा होता





धर्म का यह संदेश है कि आदमी शांति से जीना सीखे, गुरुसे पर नियंत्रण रखना सीखे। धर्म का एक परिणाम यह होना चाहिए कि आदमी का गुरुसा शांत हो जाये और स्वभाव अच्छा रहे।

रहता है, घर में महाभारत छिड़ सकता है और अशांत वातावरण बन जाता है। दाप्त्य जीवन में लम्बे काल तक सुख और शांति बनी रहती है तो मानना चाहिए कि उन्होंने एक बड़ी साधना की है।

अध्यात्म की साधना का सार है कि व्यक्ति कषाय को जीतने का अभ्यास करे। कषाय मुक्ति से ही मुक्तिश्री का वरण हो सकेगा। कषाय के मुख्य रूप से चार प्रकार बताये गये हैं – क्रोध, मान, माया और लोभ। साधक क्रोध कषाय को जीतने का अभ्यास करे। उस पर विजय प्राप्त करने के कई उपाय हो सकते हैं। जैसे –

- ▶ उपशम भाव की अनुप्रेक्षा
- ▶ दीर्घश्वास का अभ्यास
- ▶ संकल्प शक्ति का प्रयोग
- ▶ ज्योतिकेन्द्र पर सफेद रंग का ध्यान
- ▶ शान्त स्वभाव वाले महापुरुषों का स्मरण

हालाँकि क्रोध को जीतना कठिन कार्य है, किन्तु सलक्ष्य प्रयास किया जाये तो सफलता मिल सकती है। साधुओं की ओर दृष्टिपात करें तो मेरा मंतव्य है कि जो शांत होता है, वही सन्त होता है। जो अशांत होता है, वह सन्त नहीं होता अथवा उसकी सन्तता की साधना में कुछ कमी होती है। इस भारतभूमि पर कितने-कितने ऋषि-महर्षि हुए हैं। कई लोग तो गृहस्थ जीवन में भी सन्त जैसे हुए हैं। उनके जीवन से भी गुरुसा मुक्तरहने की प्रेरणा ली जा सकती है।

मुझे जैन रामायण का प्रसंग याद आ रहा है। जब रामचंद्रजी, लक्ष्मणजी और सीताजी वनवास में थे। तब एक बार सीताजी को बहुत प्यास लग गयी। आसपास कहीं पानी दिखायी नहीं दिया। तीनों आगे बढ़े। एक गाँव में पहुँच गये। ब्राह्मण का घर था। घर में ब्राह्मण नहीं था, अकेली ब्राह्मणी थी। उसने देखा कि अतिथि

आये हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता के समान पूज्य माना गया है। हमारी साधु संस्था में भी आतिथ्य होता है। कोई सिंघाड़ा बाहर से आता है तो पहले से अवस्थित सिंघाड़ा चाहे साधुओं का हो या साधियों का, उसका कर्तव्य है कि वह आगन्तुक सिंघाड़े की भक्ति करे, उनका आतिथ्य करे। उनके लिए स्थान की व्यवस्था करे। यह आतिथ्य का क्रम हमारे यहाँ चलता है। गार्हस्थ्य में भी कोई मेहमान घर में आता है तो उसको बिठाना, खिलाना, पिलाना आदि व्यक्ति का सामान्य कर्तव्य होता है।

उस ब्राह्मणी ने भी रामचंद्रजी आदि तीनों की बड़ी आवधारणा की। इतने में ही ब्राह्मण आ गया। ब्राह्मणी जितनी भली थी, ब्राह्मण उतना ही तेज था। उसने घर में आते ही पत्नी से कहा - "तुमने किसको घर में बिठा रखा है? ये मैले कुचलै कपड़ों वाले कौन आ गये? इनको घर में स्थान देकर तुमने बहुत गलत काम किया है।"

ब्राह्मण को इतना भयंकर गुस्सा आया कि जलती हुई लकड़ी लेकर आया और बोला - "आज तेरा मुँह जला दूँगा।" ब्राह्मणी तो डर गयी। वह सीताजी के पास जाकर खड़ी हो गयी। लक्ष्मणजी को भी गुस्सा आ गया। उन्होंने लकड़ी सहित ब्राह्मण को आकाश में घुमाया। ब्राह्मण भयभीत होकर चिल्हने लगा। तब रामचंद्रजी ने कहा - "भैया लक्ष्मण! इसे छोड़ दो।" भाई की आज्ञानुसार लक्ष्मणजी ने ब्राह्मण को छोड़ दिया। ब्राह्मण रामचंद्रजी के चरणों में गिर गया और क्षमायाचना की।

धर्म का यह संदेश है कि आदमी शांति से जीना सीखे, गुरुसे पर नियंत्रण रखना सीखे। धर्म का एक परिणाम यह होना चाहिए कि आदमी का गुरुसा शांत हो जाये और स्वभाव अच्छा रहे। प्रेक्षाध्यान के शिविरों में ऐसे लोग भी आते हैं, जो गुरुसैल होते हैं, किन्तु प्रयोग करने से, साधना करने से उनमें से कई का गुरुसा शांत हो जाता है।

ठाण सूत्र में क्रोध उत्पत्ति के चार कारण बताये गये हैं - खेतं पदुच्च, वर्त्थं पदुच्च, शरीरं पदुच्च, उवहिं पदुच्च अर्थात् क्षेत्र यानी खुली जमीन, वस्तु, शरीर और उपकरण - इन चार निमित्तों से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध तभी उत्पन्न होगा, जब इन पर आसक्ति होगी। इसलिए अनासक्ति की अनुप्रेक्षा के द्वारा क्रोध पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

क्रोध पर विजय प्राप्त करने से तीन लाभ होंगे। पहला लाभ बताया गया है कि शांति का भाव पैदा होगा, आदमी में सहन करने की क्षमता का विकास होगा। दूसरा लाभ बताया गया है कि गुरुसे करने से जिन कर्मों का बंधन हो सकता है, उस बंधन से बचाव हो जाएगा और तीसरा लाभ बताया गया है कि क्रोध को जीतने की साधना करने से पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा होगी। इसलिए आदमी गुरुसे को जीतने का अभ्यास करे और क्रोध विजेता बनकर चेतना को पवित्र बनाने का प्रयास करे। ■



अपनी क्षमताओं को पहचानें

परिस्थितियों का निर्माता मनुष्य स्वयं ही होता है। हर आदमी में असंख्य संभावनाएं छिपी पड़ी हैं, पर उन संभावनाओं को समझने और तदनुरूप पुरुषार्थ करने वाला व्यक्ति ही अपना गौरव बढ़ा सकता है। कोई भी सफलता सामने चलकर नहीं आती। आदमी को ही चलकर उस तक पहुँचना पड़ता है।

मनुष्य महान है। उसकी महत्ता उसमें स्वयं में ही छिपी हुई है। कोई दूसरा आदमी किसी को महान नहीं बना सकता। वह स्वयं ही अपने अन्दर सोयी हुई महत्ता को जगा सकता है। यह ठीक है कि दूसरे भी हमारा सहयोग कर सकते हैं, पर बीज में फलदान की अपनी ही क्षमता होती है। कोई भी बीज से उसकी महत्ता को नहीं छीन सकता। परिस्थितियों का निर्माता तो मनुष्य स्वयं ही होता है। जिस मनुष्य में पौरुष होता है, वह कठिन से कठिन परिस्थिति को भी अपने अनुरूप ढाल लेता है।

दुनिया में हर आदमी में असंख्य संभावनाएं छिपी पड़ी हैं, पर उन संभावनाओं को समझने और तदनुरूप पुरुषार्थ करने वाला व्यक्ति ही अपना गौरव बढ़ा सकता है। कोई भी सफलता सामने चलकर नहीं आती। आदमी को ही चलकर उस तक पहुँचना पड़ता है। संभल कर चलने के कुछ सूत्र इस प्रकार हो सकते हैं-

सौहार्द

सबके प्रति मित्रता का भाव। वास्तव में तो सौहार्द दूसरे के प्रति नहीं अपितु अपने प्रति ही होता है। सुहृद व्यक्ति हमेशा प्रसन्नचित रहता है। प्रसन्नचित्ता में ही अन्य गुणों का अवतरण होता है। जो आदमी दूसरों के प्रति अहित चिन्तन करता है, उससे

दूसरों का अनिष्ट हो या न हो, पर अपना अनिष्ट हो ही जाता है। सुहृद व्यक्ति स्वयं में संतुष्ट रहता है। ऐसे व्यक्ति ही वास्तव में समाज और राष्ट्र के श्रृंगार होते हैं। उनका निश्छल व्यवहार सबको अपने प्रति आकृष्ट कर लेता है।

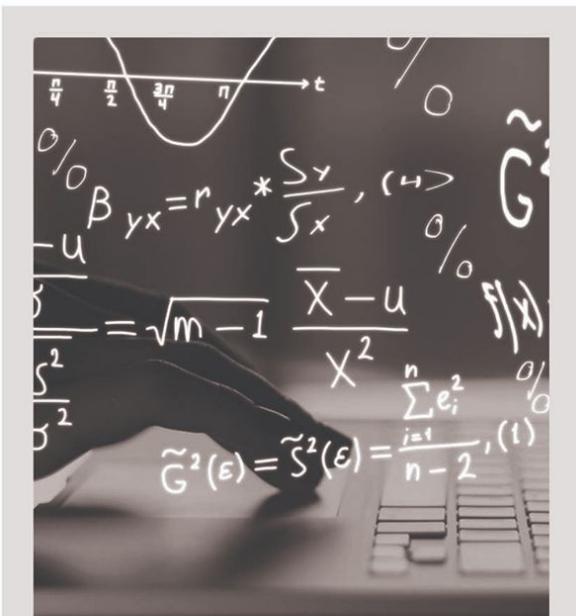
सहिष्णुता

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अविचल भाव। यह संभव नहीं है कि जीवन में मधुरता ही मधुरता हो। नहीं चाहते हुए भी बहुत बार आदमी को कटुता से पाला पड़ ही जाता है। ऐसे क्षणों में यदि आदमी की सहिष्णुता का बांध टूट जाता है तो बहुत बड़ा अनर्थ घटित हो जाता है। असहिष्णु आदमी बहुत बार प्रियता को भी आक्रमण मान लेता है। दूसरों को सहना सचमुच साधना है। थोड़ी-सी असहिष्णुता से भी कई बार बहुत बड़े साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठते हैं।

संतुलन

जीवन एक बहुत पतली डोर है। हर आदमी को उस पर से बहुत संभल कर गुजरना पड़ता है। थोड़ा-सा संतुलन बिगड़ते ही न केवल वह स्वयं ही धड़ाम से गिर पड़ता है, अपितु दूसरों को भी नुकसान पहुँचा सकता है। कभी-कभी आवेश में आकर आदमी





सापेक्षता की समझ ही सत्य की सही समझ है। इससे आग्रह अपने आप क्षीण पड़ जाते हैं। जिस व्यक्ति के विचार में सापेक्षता का सूरज उग जाता है, उसका स्वयं का अंधकार तो नष्ट हो ही जाता है, वह जहाँ भी जाता है, वहाँ प्रकाश-रशिम्यां बिखरे देता है।

अपनी सीमा को भूल जाता है। उसकी एक असंतुलित बात ही सारे वातावरण में इतना जहर घोल देती है कि उसका प्रतिफल पूरे समाज को भोगना पड़ता है।

समन्वय

सत्य एक और अखण्ड है, पर उस तक पहुँचने के मार्ग अनेक हो सकते हैं। प्रस्थान का भेद ही पंथ भेद है। ऐसी स्थिति में उनकी सापेक्षता को समझना बहुत जरूरी है। यही समन्वय है। समन्वय का अर्थ यह नहीं है कि आदमी अपनी मौलिकता को खो दे। अपनी मौलिकता को समझते हुए दूसरों की मौलिकता का आदर ही समन्वय है। सापेक्षता की समझ ही सत्य की सही समझ है। इससे आग्रह अपने आप क्षीण पड़ जाते हैं। जिस व्यक्ति के विचार में सापेक्षता का सूरज उग जाता है, उसका स्वयं का अंधकार तो नष्ट हो ही जाता है, वह जहाँ भी जाता है, वहाँ प्रकाश-रशिम्यां बिखरे देता है।

सहयोग

आदमी एक सामाजिक प्राणी है। उसे अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए दूसरों का सहयोग नितान्त अपेक्षित है। जब वह दूसरों से सहयोग चाहता है तो उसे दूसरों का सहयोग भी करना

आवश्यक है। परस्परता का यह सूत्र ही आदमी को आगे बढ़ाता है। जो आदमी स्वार्थ से ऊपर उठता है, वही परमार्थ की ओर प्रयाण कर सकता है। परमार्थ एक चरम बिन्दु है। वहाँ तक पहुँचने के लिए परस्परार्थता को एक साधन बनाया जा सकता है। परिस्थितियां तो हर आदमी के सामने होती हैं, पर जो विकट परिस्थितियों में भी अपना संतुलन नहीं खोता, वह आदमी अपने जीवन में सफल हो जाता है।

एक कलेक्टर अपने कार्यालय में बैठे हुए थे। इतने में वायरलेस बुद्बुदाया। एक पुलिस अधिकारी बोल रहा था - "सर! बाजार से एक जुलूस गुजर रहा है। बड़ी भारी भीड़ है। वह कलेक्ट्रेट की ओर बढ़ रही है। लोगों में भारी आक्रोश-उत्तेजना है। जोर-जोर से नारे लगाये जा रहे हैं। इस बात का अदेश है कि वे हिंसा पर उतारू हो जाएं। अतः आप आदेश दें कि क्या हम इनको यहीं रोक लें?" यों कलेक्टर के लिए ऐसी घटनाएं नयी नहीं होतीं। आये दिन ऐसा होता रहता है, पर पुलिस अधिकारी इतनी व्यग्रता से बोल रहा था कि कलेक्टर को थोड़ा सोचना पड़ा।

फिर कलेक्टर ने उत्तर दिया - "मैं जब तक नया आदेश न दूँ, तब तक जुलूस को रोको मत, आने दो।" पुलिस अधिकारी हैरान था, लेकिन कर भी क्या सकता था? जुलूस धीरे-धीरे आगे सरकता गया। कुछ और नये लोग उसके साथ जुड़ते गये। आक्रोश-उत्तेजना भी बढ़ती जा रही थी। उसी समय कलेक्टर ने अपने एक विश्वस्त आदमी को बुलाया और स्थिति का जायजा लेने के लिए उसे मौके पर भेजा। वह तत्काल वहाँ पहुँचा और सारी स्थिति का अध्ययन कर लौटा। वह शांत भाव से बोला - "पुलिस अफसर ने जो बात कही है, वह सही है। भीड़ बड़ी उग्र है। जोर-जोर से नारे लगा रही है तथा कलेक्ट्रेट की ओर बढ़ रही है।"

"और कोई विशेष बात?" कलेक्टर ने खोदकर पूछा। उसने कहा - "और तो कोई बात नहीं है, पर गर्मी बहुत पड़ रही है। लोग पसीने से लथपथ हो रहे हैं। जोर-जोर से चिल्हने के कारण सबके गले सूख रहे हैं।"

इस नयी बात ने कलेक्टर को एक नया सूत्र थमा दिया। उसने तत्काल अपने कर्मचारियों को आदेश दिया कि फटाफट कलेक्ट्रेट के पास ठंडे पानी का बन्दोबस्त किया जाये। ऐसा ही हुआ। थोड़ी देर में उफनती हुई भीड़ आयी। ठंडे पानी को देखकर लोग उस पर पिल पड़े। ठंडे पानी ने उनके विरोध को शांत कर दिया और विरोध करने आया जुलूस कलेक्टर को धन्यवाद करता हुआ लौट गया।

इसकी जगह यदि कलेक्टर सख्ती से काम लेता तो शायद भीड़ बेकाबू हो जाती, पर उसकी सूझबूझ पूर्ण शांत वृत्ति ने तत्काल विरोध को खत्म कर दिया। हर मनुष्य के जीवन में अनेक बार ऐसे क्षण आते हैं। यदि वह सूझबूझ से काम ले तो हर परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाकर अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। ■



असांप्रदायिक शुद्ध चेतना का नाम है अणुव्रत

जब भारत स्वतंत्र हुआ, तब गुरुदेव श्री तुलसी ने देशवासियों को चरित्र धर्म की प्रेरणा देते हुए अणुव्रत आंदोलन को अपनाने की प्रेरणा दी। उनका लक्ष्य था कि मानव मानव बना रहे। उनका घोष था - "इंसान पहले इंसान, फिर हिंदू या मुसलमान।" गुरुदेव की बात को सुनकर देशवासी अणुव्रत आंदोलन से जुड़े और इसका व्यापक रूप बन पाया।

ती

न वर्ग की साधना के बिना मनुष्य जन्म की सफलता नहीं होती। वे तीन वर्ग हैं - धर्म, अर्थ और काम। तीनों में धर्म को उत्कृष्ट माना गया है। धर्म के अभाव में अर्थ और काम निस्सार-से प्रतीत होते हैं। लोगों ने धर्म को भी मंदिर, मदरसा, गुरुद्वारा, चर्चा, आश्रम, स्थानक आदि में कैद कर रखा था। धर्म को भी एक-एक सम्प्रदाय में विभाजित कर दिया गया था, जबकि धर्म सबका एक है, सम्प्रदाय भले ही भिन्न हों। परन्तु सभी सम्प्रदायों में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को महत्व दिया गया है।

जब भारत स्वतंत्र हुआ, तब गुरुदेव श्री तुलसी ने देशवासियों को चरित्र धर्म की प्रेरणा देते हुए अणुव्रत आंदोलन को अपनाने की प्रेरणा दी। उनका लक्ष्य था कि मानव मानव बना रहे। उनका घोष था - "इंसान पहले इंसान, फिर हिंदू या मुसलमान।" गुरुदेव की बात को सुनकर देशवासी अणुव्रत आंदोलन से जुड़े और इसका व्यापक रूप बन पाया। आचार्य श्री तुलसी ने व्यापारी, शिक्षक, विद्यार्थी, उद्योगपति, राजनेता, कर्मचारी आदि सभी वर्ग के लोगों के लिए एक आचार संहिता बनायी जिसमें जाति, वर्ग, वर्ण, सम्प्रदाय, लिंग से ऊपर उठकर शुद्ध नैतिक प्रामाणिक जीवन जीने की प्रेरणा दी गयी। इस

अभियान में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उद्योगपति ही नहीं, साधारण ज्ञापड़ी में रहने वाले कृषक और कर्मचारी भी जुड़े जिसे हम जैन जागरण नहीं, जन जागरण कह सकते हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ के साधु-साध्वी, समण-समणी जहाँ प्रवास करते हैं, वहाँ वे इस प्रकार के कई कार्यक्रम आयोजित करते रहते हैं जिससे व्यक्ति उच्च चरित्रवान बने और स्वस्थ परिवार तथा समाज का निर्माण हो सके।

चतुर्मास काल में एक सप्त दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया जाता है जिसे अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के नाम से मनाया जाता है। सप्त दिवसीय इस कार्यक्रम के दौरान हर वर्ग के लोगों से संपर्क करके उन्हें अणुव्रत क्या है? इसकी क्या उपयोगिता है? यह कब शुरू हुआ? इसी प्रकार के अनेक विषयों पर विचार दिये जाते हैं। कार्यालयों, कारागृहों, आश्रमों, मंदिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों, मठों आदि में इस मुद्दे पर विस्तृत चर्चा-वार्ता की जाती है कि अगर व्यक्ति सुधार गया तो परिवार, समाज और देश का भविष्य उज्ज्वल बन जाता है। गुरुदेव श्री तुलसी का व्यक्ति सुधार में अत्यधिक विश्वास था। विश्व सुधार में व्यक्ति सुधार की अहम भूमिका है क्योंकि जब तक व्यक्ति नहीं सुधरेगा, तब तक परिवार, समाज, देश और विश्व सुधार का सपना साकार नहीं हो सकता।



समाज सुधार के लिए शुरू किये गये किसी भी आनंदोलन की सफलता का सूत्र है उसकी उपादेयता, प्रासादिकता और स्वीकार्यता। समाज के सर्वमान्य व्यक्ति यदि उस सुधारवादी आनंदोलन की उपादेयता और प्रासादिकता को मुक्त कर लेते हैं तो आमजन भी उस आनंदोलन के दर्शन का अनुसरण करने की दिशा में अग्रसर होते हैं। अणुव्रत आनंदोलन के प्रारम्भिक काल से ही तात्कालिक समाज के गणमान्य महानुभावों ने इसकी महत्व को स्वीकार किया तथा इसे अभिव्यक्ति भी दी। इसी कड़ी में प्रस्तुत है अणुव्रत आनंदोलन के बारे में प्रखर चिन्तक तथा देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के उद्घारः

अणुव्रत : भारतीय संस्कृति का प्रतीक

विचारशील लोग अब जीवन के आध्यात्मिक पहलू पर विचार करने का आग्रह कर रहे हैं, जिससे वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ मानव आध्यात्मिक तत्त्वों को भी अपने दैनिक जीवन में और अन्तरराष्ट्रीय व्यवहार में ग्रहण करने का प्रयत्न करते हैं। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अणुव्रत आनंदोलन कई वर्षों से प्रशंसनीय कार्य कर रहा है।

मा नव-समाज की स्थिति ऐसी डंवाडोल क्यों हो कि मैत्री जैसे सहज और स्वाभाविक भाव पर जोर देने की जरूरत पड़े? किन्तु इस दुःखद और कटु सत्य से हम आँख नहीं मिँच सकते कि समाज और संसार की स्थिति वास्तव में ऐसी है कि समाज के विभिन्न अंगों और राष्ट्रों के बीच मैत्री का नारा लगाना आवश्यक जान पड़ता है।

इस बात को देखकर और भी खेद होता है कि यद्यपि कई शताब्दियों से मानव-समाज विज्ञान की उन्नति और भौतिक साधनों के विकास के कारण काफी आगे बढ़ चुका है। दुर्भाग्य से यह भौतिक प्रगति एकांगी रही, क्योंकि मानव उसी गति से जीवन के आध्यात्मिक पक्ष की उन्नति नहीं कर पाया है। यही नहीं, हम यह भी कह सकते हैं कि कुछ समय से आध्यात्मिक तत्त्वों की अवहेलना हुई है। वैज्ञानिक आविष्कारों के बहुत आगे बढ़ जाने से मानव ने प्रकृति के साधनों पर इतना अधिकार कर लिया है कि

विभिन्न प्रकार के विनाशकारी शस्त्रास्त्र उसके हाथ लग गये हैं। चिन्ता का तात्कालिक कारण यही है कि यदि राष्ट्रों में पारस्परिक मनमुटाव बना रहा और युद्ध के कारणों को दूर कर स्थायी शान्ति की स्थापना नहीं की जा सकी तो भावी युद्ध इतना भयंकर होगा कि उससे मानव-समाज का अस्तित्व और आधुनिक सभ्यता दोनों ही संकट में पड़ जाएंगे।

यही कारण है कि विचारशील लोग अब जीवन के आध्यात्मिक पहलू पर विचार करने का आग्रह कर रहे हैं, जिससे वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ मानव आध्यात्मिक तत्त्वों को भी अपने दैनिक जीवन में और अन्तरराष्ट्रीय व्यवहार में ग्रहण करने का प्रयत्न करते हैं। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अणुव्रत आनंदोलन इस दिशा में कई वर्षों से प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। इसके लिए आनंदोलन के नेता आचार्य श्री तुलसी तथा दूसरे सदस्यगण बधाई के पात्र हैं। अणुव्रत आनंदोलन भगवान महावीर और अन्य जैन





संसार की सबसे बड़ी आवश्यकता स्थायी शान्ति की स्थापना है। यह उद्देश्य तभी प्राप्त किया जा सकता है, जबकि प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह किसी भी राष्ट्र का नागरिक हो और किसी भी धर्म का अनुयायी हो, अपने मन में दूसरे के प्रति मैत्री की भावना का संचार करे और उसके अनुसार आचरण करे।

मुनियों तथा भारतीय सन्तों के आदर्शों से अनुप्राणित हुआ है, इसलिए इस आन्दोलन के प्रयास तथा उसके आदर्श भारतीय सांस्कृतिक परम्परा के सर्वथा अनुकूल हैं और उसे समझने अथवा उसके पालन करने में हमारे लिए अधिक कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

यह सौभाग्य का विषय है कि इस विचारधारा को बहुतेरे विदेशी लोग भी स्वीकार करने लगे हैं। सभी लोग यह स्वीकार करते हैं कि संसार की सबसे बड़ी आवश्यकता स्थायी शान्ति की स्थापना है। यह उद्देश्य तभी प्राप्त किया जा सकता है, जबकि प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह किसी भी राष्ट्र का नागरिक हो और किसी भी धर्म का अनुयायी हो, अपने मन में दूसरे के प्रति मैत्री की भावना का संचार करे और उसके अनुसार दैनिक जीवन में आचरण करे। इस दृष्टि से देखा जाये तो यह मानना पड़ेगा कि इस महान प्रयास में छोटे से छोटे और बड़े से बड़े प्रत्येक व्यक्ति का सहयोग मूल्यवान है। हम सब लोग मानव-समाज के सदस्य हैं और इस समय हमें दूसरों की चिन्ता न कर अपने-अपने आचार और व्यवहार को उन्नत करने की ओर ध्यान देना चाहिए। इसी में व्यक्ति और समाज दोनों का हित सञ्चिहित है।

पिछले कई वर्षों में आचार्य श्री तुलसी के कई बार दर्शन मुझे प्राप्त हुए और उनके उपदेश सुनने का और उनके साथ वार्तालाप का मुझे अवसर मिला। अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन करके और उस काम को बढ़ाने के लिए अपना समय लगाकर आचार्य श्री तुलसी देश के लिए कल्याणकारी काम कर रहे हैं। यों तो उसके बिना न कोई व्यक्ति और न कोई देश उन्नति कर सकता है, पर विशेषकर ऐसे समय में जब हम स्वतन्त्रता प्राप्त कर अपना घर स्वयं सम्भालने लग गये हैं, उसकी आवश्यकता और अनिवार्यता और भी अधिक हो जाती है; इसलिए अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन एक महत्वपूर्ण काम हुआ है। मैं आशा करता हूँ कि वह दिन-प्रतिदिन जैसे आज तक बढ़ता आया है, उससे भी अधिक प्रगति के साथ बढ़ता ही जाएगा।

यह सन्तोष की बात है कि आचार्यजी काल और देश की परिस्थिति को हमेशा सामने रखकर कार्यक्रम निर्धारित करते हैं और जो भिन्न-भिन्न श्रेणी के लोग हैं, जिनकी भिन्न-भिन्न समस्याएं होती हैं, उन सबमें घुसकर भिन्न-भिन्न रीति से संगठित रूप से सदाचार और चरित्र को प्रोत्साहन देने का काम किया जा रहा है। यह काम तो धर्मगुरुओं का ही हमेशा से रहा है और आज भी है। जितना असर धर्माचार्यों का, चाहे वे किसी भी धर्म अथवा पंथ के क्यों नहीं हों; लोगों पर पड़ता है, उतना दूसरों का नहीं। आज की स्थिति में यह अत्यन्त आवश्यक और महत्वपूर्ण काम हो रहा है, जिसकी सफलता प्रत्येक विचारशील व्यक्ति चाहता रहेगा।

मैं यह आशा करता हूँ कि यह प्रयास अब व्यक्ति की शुभकामनाओं और मैत्रीपूर्ण भावनाओं से पृष्ठ होकर मानव-समाज के लिए कल्याणकारी प्रभाव का रूप धारण करेगा। मैं और अधिक कहने की आवश्यकता नहीं समझता, क्योंकि बात बहुत सरल है और कहने-सुनने की अपेक्षा विश्वास करने और जीवन में उतारने की अधिक है। मैं इस आन्दोलन की सफलता की कामना करता हूँ और मेरी यह प्रार्थना है कि संसार के सभी राष्ट्र और मानव-समाज के सभी अंग इस सद्भावना से प्रेरित हों और शान्ति स्थापना में योगदान दें। ■

तुलसी उवाच

भ्रातृत्व की भूमिका

दास-प्रथा सत्ता और सम्पदा के उन्माद की निष्पत्ति है। किसी व्यक्ति को दास बनाना या दास मानना अपराध है। वह समाज स्वस्थ और उन्नत होता है, जहां समविभाग की व्यवस्था मान्य हो। एक व्यवसाय के साथ जितने व्यक्ति जुड़े हुए हैं, वे परस्पर मालिक और मजदूर की हैसियत से नहीं, भ्रातृत्व की भूमिका से जुड़े होने चाहिए। जब तक यह व्यवस्था लागू नहीं होती, हीनता और अतिरिक्तता की समस्या भी समाप्त नहीं हो सकती।



विधि-निषेध की प्रासंगिकता

घर-परिवार के वर्षि और अनुभवी व्यक्ति किसी को निषेधात्मक निर्देश करते हैं तो सुनने वाले को अप्रिय अवश्य लग सकता है, किन्तु उसके पीछे कल्याणकारी भावना ही निहित होती है। जिसने भी इस भावना को समझा है, वह कभी निषेध को नकारात्मक दृष्टि से नहीं लेगा, प्रत्युत निषेध करने वाले को अपना हितैषी ही स्वीकार करेगा।

भा रत्वर्ष में प्रारम्भ से ही परिवार की प्राथमिक पाठशाला में 'क्या करना चाहिए' एवं 'क्या नहीं करना चाहिए' जैसा जीवनोपयोगी पाठ पढ़ने-पढ़ाने की स्मरणीय परम्परा रही है। मगर आज के सामाजिक जीवन में न घर अपने अस्तित्व में हैं और न परिवार। ऐसे में अनेक निषिद्ध एवं आचरण विरुद्ध कार्य भी समाज में मान्यता के मापदण्ड पर ग्राह्य होते दिखायी देने लगे हैं।

बदलते सामाजिक परिदृश्य में जहाँ जीवन मूल्यों में गिरावट आयी है, वहीं विधि-निषेध की पालनीय परम्परा भी सर्वजन समादूत नहीं रह सकी। परिणामतः मनुष्य के नितान्त वैयक्तिक जीवन से लेकर सम्पूर्ण विश्व के सार्वजनिक जीवन में अनेक दुश्शारियां बहुत तेजी के साथ मुँह बाये सामने आ खड़ी हुई हैं। मानव जीवन आज उस भवन की तरह हो गया है जिसके निर्माण में केवल ईंटों का प्रचुरता के साथ उपयोग किया जा रहा है, किन्तु जिसमें सीमेन्ट नाम मात्र को भी नहीं है। ऐसा भवन एक सामान्य-से धक्के को भी सहन नहीं कर सकेगा और धराशायी हो जाएगा। आज का जनसामान्य भी चाहे-अनचाहे रूप में उसी दिशा की ओर बढ़ा चला जा रहा है, जहाँ जीवन में भौतिकता रूपी ईंटों का तो भरपूर प्रावधान है किन्तु जिसमें करणीय-अकरणीय वाली सीमेन्ट

रत्ती भर भी नहीं है। भारतीय दर्शन और संस्कृति में समाहित सभी सिद्धान्त और आदर्श वैज्ञानिक और मानव मात्र के लौकिक एवं पारलौकिक कल्याण हेतु बनाये गये हैं। जो मनुष्य, मानवोचित विधि को छोड़कर मनमाना आचरण करता है, वह न अन्तःकरण की शुद्धि को प्राप्त कर पाता है, और न सुख-शान्ति का पात्र बन पाता है। हाँ, ऐसे आधे-अधूरे व्यक्तित्व सम्पूर्ण सामाजिक तानेबाने को खोखला और जड़विहीन करने का काम अवश्य करते हैं।

वर्तमान समय में मानवोचित शिक्षा-दीक्षा, संग-साथ एवं समावेशी वातावरण का अभाव होने से समाज में उच्छृंखलता दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है। आज का अधिसंख्य व्यक्ति यह चाहता है कि कोई भी मर्यादा उसके जीवन को बांध नहीं पाये। लड़ाई स्वतंत्रता और निषेध के बीच की है। जहाँ धर्म और परंपरा पालन का संकेत है वहाँ निषेध का भी अनिवार्यतः उल्लेख है, लेकिन शास्त्रसम्मत ज्ञान को समझने वाले, जानने - बताने वाले और तदनुसार आचरण करने वाले दिन-प्रतिदिन दुर्लभ होते जा रहे हैं। हाँ, बहुरूपिये लोगों की तो बाढ़ ही आ गयी है जिनकी कथनी और करनी में दूर-दूर तक कोई समानता नहीं होती। ऐसे लोग आज बढ़-चढ़ कर उपदेश देने लगे हैं, परिणामस्वरूप लोगों का विश्वास और भरोसा अहर्निश दम तोड़ता जा रहा है।





मनुष्य आज जीवन के मूलभूत किन्तु परमावश्यक वैश्विक मूल्यों एवं नियमों के स्थान पर केवल अपने द्वारा अपने लिए बनाये गये असत्य मूल्यों और नियमों से आगे बढ़ने का यत्न कर रहा है। परिणामस्वरूप जीवन के सभी सामाजिक मोर्चे पर प्रायः असफल होता देखा जा सकता है।

मनुष्य आज जीवन के मूलभूत किन्तु परमावश्यक वैश्विक मूल्यों एवं नियमों के स्थान पर केवल अपने द्वारा अपने लिए बनाये गये असत्य मूल्यों और नियमों से आगे बढ़ने का यत्न कर रहा है। परिणामस्वरूप जीवन के सभी सामाजिक मोर्चे पर प्रायः असफल होता देखा जा सकता है। सुप्रसिद्ध दार्शनिक सर्वपल्ली डॉ. एस. राधाकृष्णन ने कहा है, "धर्म का प्रारम्भ हमारे जीवन में तब होता है, जब हम यह जान जाते हैं कि हमारा जीवन केवल हमारे ही निर्मित नहीं है।"

विधि निषेध की गुणग्राही परम्परा वर्षों से हमारे यहाँ सामाजिक एवं राष्ट्रीय चरित्र में संवाहित होती रही है। इस स्वीकार्य परम्परा में प्रोत्साहन और वर्जन दोनों साथ-साथ चलते रहे।

आज की सबसे बड़ी समस्या भी यही है कि अनुचित कार्यों की ओर प्रायः कोई अंगुली नहीं उठाता, दूसरी ओर अवांछित और अनुचित करके भी अधिकतर व्यक्ति आत्म-मणित और स्वप्रशंसित होने का कोई भी अवसर नहीं छोड़ते। सामाजिक पृष्ठभूमि में इन बातों का बहुत बजन होता है। पहले बिना भय एवं संशय के गलत कार्य पर तुरन्त अंगुली उठ जाती थी, किन्तु अब ऐसा देखने को नहीं मिलता।

सड़क के बीचों-बीच दो मोटर साइकिल धारी अपने-अपने बाहन पर बैठे बातचीत में ढूबे हैं, आने-जाने वाले लोग दाएं-बाएं होकर आ-जा रहे हैं, किन्तु कोई भी व्यक्ति उन दोनों को एक शब्द भी नहीं बोलता। घायल व्यक्ति सड़क पर कराह रहा है और भीड़ अपने-अपने मोबाइल से वीडियो तो बनाती है किन्तु कोई उसे हॉस्पिटल नहीं पहुँचता। यदि माता-पिता द्वारा, बड़ों द्वारा अथवा सक्षम महानुभावों द्वारा बचपन से ही गलत आचरण करने वालों को विधि-निषेध का पाठ पढ़ाया गया होता तो ऐसी विद्रूप स्थितियों से हमारा एवं समाज का बचाव हो सकता था।

घर-परिवार के बरिष्ठ और अनुभवी व्यक्ति किसी को निषेधात्मक निर्देश करते हैं तो सुनने वाले को अप्रिय अवश्य लग सकता है, किन्तु समझने योग्य बात यह है कि उसके पीछे कल्याणकारी भावना ही निहित होती है, उससे भिन्न कुछ भी नहीं। जिसने भी इस भावना को समझा है, वह कभी निषेध को नकारात्मक दृष्टि से नहीं लेगा, प्रत्युत निषेध करने वाले को अपना हितैषी ही स्वीकार करेगा। आज जबकि अधिसंख्य व्यक्ति किसी की उचित बात को भी विपरीतार्थ में लेने-समझने के आदी हो गये हैं, वे भला विधि-निषेध को यथार्थ में कैसे ले पाएंगे? आज का तो जैसे युगर्धम ही बन गया है कि लोग प्रत्येक उचित सलाह-संकेत को भी अनुचित अर्थ में लेने लगे हैं।

अविवेक से सम्पादित कार्य का परिणाम सदैव प्रतिकूल ही होगा, इस बात को कभी भूलना नहीं चाहिए। जो माता-पिता अपनी सन्तानों को बाल्यकाल से ही विधि-निषेध का जीवनोपयोगी पाठ नहीं पढ़ाएंगे, परिवार के जो मुखिया अपने अन्य कौटुम्बिकजनों को अच्छे कार्य के प्रति प्रेरित और अनुचित कार्य के प्रति वर्जन (निषेध) नहीं करते, वे वस्तुतः अपनों के, समाज के एवं राष्ट्र के शुभचिन्तकों में नहीं हैं।

यह कैसी विडम्बना है कि स्वाधीनता के 75 वर्षों में जिस द्रुत गति से नैतिक मूल्यों में देशव्यापी गिरावट आयी है, वह इस देश के अब तक के इतिहास में कभी देखने को नहीं मिलती। इसी कारण आज जहाँ-तहाँ बुद्धिजीवी तबके से लेकर श्रमिक वर्ग तक में भीतर-बाहर सर्वत्र असहनीय आक्रोशपूर्ण उबाल देखा जा सकता है।

कितने ही नियम-कानून और संविधान बना लिये जाएं, किन्तु जब तक आत्मानुशासित, आत्म नियंत्रित और आत्म चेतना वाली मनःस्थिति नहीं बनेगी, तब तक यह समाज को, राष्ट्र को और मानव से मानव को तोड़ने वाला बिखराव बराबर चलता रहेगा और यह तब तक होता रहेगा जब तक हम विधि-निषेध के सम-सामयिक पाठ को सम्यक् रूप से हृदयंगम नहीं कर लेंगे। आइए, इस दिशा में भी अपनी पहल के स्परणीय कदम आगे बढ़ाएं।

भीलवाड़ा निवासी लेखक पिछले चार दशक से आयुर्वेदिक चिकित्सा सेवा के साथ ही साहित्य-सृजन में संलग्न हैं। राजस्थान आयुर्वेद सेवा में उपनिदेशक पद से सेवानिवृत्त होने के बाद भी यह क्रम जारी है।



अणुव्रत दर्शन में कर्ज जाल का समाधान

अति उपभोगवाद और अभाव दोनों ही स्थितियां अमान्य हैं। इच्छाएं अनंत होती हैं लेकिन प्राथमिकता तय की जाये ताकि अधिक से अधिक आवादी की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके, तभी सही मायने में राष्ट्र विकसित हो पाएंगे और कर्ज जाल से स्वयं को मुक्त रख पाएंगे।

आधुनिक अर्थव्यवस्था एवं बाजार व्यवस्था में कर्ज जाल (Debt Trap) शब्द का प्रयोग बार-बार होता है। कर्ज जाल एक ऐसी स्थिति में आ जाता है कि कर्ज का पुनर्भुगतान करने के लिए उसे दूसरा कर्ज लेना पड़ता है और कर्ज भार की एक शृंखला-सी बन जाती है। देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में कर्ज और उसके ब्याज भुगतान का प्रतिशत बढ़ता जाता है और कर्ज का पुनर्भुगतान नहीं कर पाने की स्थिति में अंततः वह देश दिवालिया हो जाता है या फिर अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक कोष जैसी संस्थाओं से कड़ी शर्तों पर सहायता लेता है और उसकी आर्थिक स्वायत्ता छिन जाती है।

मौजूदा दौर में विश्व के अनेक अल्प विकसित एवं विकासशील देश विदेशी कर्ज के जाल में फँसते जा रहे हैं। इनमें से कई देशों की आर्थिक स्थिति दिवालियापन के कगार पर पहुँच गयी है। पड़ोसी देशों में जब इस तरह की घटनाएँ हुईं तो भारत में भी एक नयी बहस ने भी जन्म लिया कि मुफ्त वितरण (Freebies) को प्रोत्साहन देने वाली घोषणाएँ कहीं भारत खासकर, राज्यों को कर्ज जाल में न फँसा दें। आधुनिक अर्थशास्त्र उत्पादन एवं विनियम के सिद्धांत पर कार्य करता है। इसका सिद्धांत है अधिक

उत्पादन-अधिक राजस्व प्राप्ति-अधिक रोजगार। इसके लिए बाजार में वस्तुओं की कृत्रिम माँग तैयार की जाती है और ग्राहक अपनी आय का अधिकांश हिस्सा इन पर खर्च करता है। पुराने अर्थव्यवहार में आवश्यकता और पूर्ति का सिद्धांत कार्य करता था, मगर आज विकसित या उन्नत अर्थ संपन्न देशों ने विकासशील तथा अल्पविकसित देशों में अपना बाजार खोज लिया है तथा उन देशों के आर्थिक आधार को पंगु बना दिया है। इन देशों के कर्ज जाल में फँसने के प्रमुख कारण हैं -

- * सस्ते कर्ज के नाम पर, सङ्क-बंदरगाह-हवाई अड्डा के विकास के लिए अल्प विकसित देशों को पैसा देना।
- * अपने स्वयं के संसाधनों के अतिरिक्त संसाधनों की कामना।
- * राजनैतिक भ्रष्टाचार, जहाँ नीति निर्माता स्वयं के हितों को देश के हित से ऊपर रखे।
- * आर्थिक अव्यवस्था, सरकारी खर्चों में वृद्धि, अनुत्पादक खर्च (पेंशन, सब्सिडी), मुफ्त वितरण - ये सभी ऋण भार बढ़ा देते हैं।
- * योजनाओं का समय पर पूर्ण नहीं होना। इससे लागत में वृद्धि होती है और प्रतिफल दर भी नहीं मिलते।





अनैतिकता कर्ज के जाल में फँसने की बड़ी वजह है। अर्थनीति के साथ नैतिकता जरूरी है, नीतिमत्ता के बिना किया गया विकास विनाशकारी होता है। जिन-जिन देशों ने विदेशी कर्ज लेकर देश में रोजगार सृजन का मॉडल अपनाया, वहाँ चंद लोगों की संपत्ति में बेतहाशा वृद्धि हुई। इसका कारण है योजनाओं के क्रियान्वयन में अनैतिकता।

अणुव्रत का आर्थिक दर्शन कर्ज जाल की इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ की पुस्तक 'महावीर का अर्थशास्त्र' और 'नैतिकता, चरित्र और अणुव्रत' में इस विषय पर चर्चा की गयी है। इसके अनुसार समाधान के कुछ बिंदु इस प्रकार हो सकते हैं -

आधुनिक अर्थशास्त्र में भौतिकवाद को केंद्र में रखा जाता है, जबकि अणुव्रत के अर्थ सूत्रों में व्यक्ति केंद्र में होता है। भगवान महावीर ने स्पष्ट किया - "जितनी अनिवार्य आवश्यकता है, उतना ही रखो, उतना ही उपभोग करो, इच्छा का सीमाकरण करो।"

अणुव्रत आवश्यकता का वर्गीकरण इस तरह करता है -

- ▶ अनिवार्य (Compulsory) आवश्यकता
- ▶ सुविधा (Comfort) संबंधी आवश्यकता
- ▶ विलासिता (Luxury) संबंधी आवश्यकता

रोटी - कपड़ा - घर - शिक्षा हमारी मूलभूत जरूरतें हैं। सुविधा और विलासिता से जुड़ी कृत्रिम माँगें बाजार द्वारा आये दिन तैयार की जा रही हैं, उनसे दूर रहना ही श्रेयस्कर है। गैर जरूरी वस्तुओं का आयात देश पर आर्थिक भार बढ़ाता है। अनैतिकता कर्ज के जाल में फँसने की बड़ी वजह है। अर्थनीति के साथ

नैतिकता जरूरी है, नीतिमत्ता के बिना किया गया विकास विनाशकारी होता है। जिन-जिन देशों ने विदेशी कर्ज लेकर देश में रोजगार सृजन का मॉडल अपनाया, वहाँ चंद लोगों की संपत्ति में बेतहाशा वृद्धि हुई। इसका कारण है योजनाओं के क्रियान्वयन में अनैतिकता।

प्रत्येक राष्ट्र को अपने आर्थिक विकास का ढांचा स्वयं के संसाधनों (मानवीय एवं प्राकृतिक) की मदद से विकसित करना चाहिए। मसलन, भारत का आर्थिक मॉडल ऐसा हो जिसमें अधिक से अधिक मानव रोजगार का सृजन हो। साथ ही ऐसी तकनीक विकसित की जाये जिससे आयात के ऊपर निर्भरता कम हो। मनरेगा और मेक इन इंडिया इनका बढ़िया उदाहरण हैं। विदेशी ऋण लेने वाले राष्ट्र तकनीक, कच्चा माल एवं संसाधनों के लिए भी दूसरे देशों पर निर्भर रहते हैं, इस कारण से पूँजी का जो लाभ मिलना चाहिए, वह नहीं मिल पाता है।

सामाजिक अनुशासन के साथ-साथ आर्थिक अनुशासन भी जरूरी है। जीवन निर्बाह के लिए वस्तु का उपभोग आवश्यक है किंतु वर्ग संघर्ष - सत्ता संघर्ष अनावश्यक है। मूलभूत वस्तुओं का विचार किये बिना कई राष्ट्र गैरजरूरी कार्यों में अपने संसाधनों को खर्च कर देते हैं और कर्ज के जाल में फँस जाते हैं।

कार्ल मार्क्स की साम्यवाद की अवधारणा पुस्तकीय रूप में ठीक है लेकिन आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी लिखते हैं - "साम्यवाद के साथ अहिंसा और अध्यात्म का समन्वय किया जाता तो इसका स्वप्न सही रूप में साकार होता। शोषण मुक्त - संविभागी व्यवस्था में कर्ज जाल की समस्या का अस्तित्व ही नहीं होता।"

बेहिसाब कर्ज लेने का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह होता है कि ऐसा देश अपनी आर्थिक अस्मिता खो देता है। कर्ज देने वाले राष्ट्र उसकी अर्थनीति तय करते हैं। आमजन पर करों का बोझ बढ़ जाता है और कर्ज न लौटा पाने की स्थिति में उस देश के संसाधनों पर कब्जा कर लिया जाता है। जैसे चीन ने श्रीलंका के हंबनटोटा पोर्ट को ले लिया। इसलिए हर राष्ट्र को अपनी समस्या का समाधान स्वयं के भीतर खोजना होगा। अति उपभोगवाद और अभाव दोनों ही स्थितियां अमान्य हैं। इच्छाएं अनंत होती हैं लेकिन प्राथमिकता तय की जाये ताकि अधिक से अधिक आबादी की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके, तभी सही मायने में राष्ट्र विकसित हो पाएंगे और कर्ज जाल से स्वयं को मुक्त रख पाएंगे।

हर देश में उत्पादन - कृषि एवं सेवाएं आर्थिक प्रगति का मापदंड होती हैं। इन सबको हासिल करने में नैतिकता, संयम, प्रामाणिकता और मानवीयता आवश्यक तत्व होना चाहिए, तभी पूँजीके मीठे फल प्राप्त होंगे।

अंकलेश्वर में रह रहे लेखक जैन विश्व भारती लाडनू में समण संस्कृति संकाय के निदेशक रहे हैं। विभिन्न सामाजिक संगठनों में सक्रिय सहभागिता के साथ ही समसामयिक मुद्दों पर इनके आलेख प्रकाशित होते रहते हैं।



संबंधों की त्रिजया पर समाज-निर्माण

संबंध-संबंधियों की गरिमा को समझने के लिए परिवार से बेहतर पाठशाला कोई हो ही नहीं सकती। जिस परिवार के बचपन को संबंधों की जानकारी सुसम्भ्य हाथों द्वारा मिली होती है, वह समाज में एक अलग और रवास स्थान रखता है। इसकी सबसे ऊँचाई जिम्मेदारी उन दो व्यक्तियों पर होती है जो निकट भविष्य में माता-पिता बनने वाले होते हैं।

मा नव के जीवन में संबंध और समाज दोनों का विशेष महत्व है। इन दोनों के शुचितापूर्ण तादात्म्य से मनुष्य शारीरिक और मानसिक ताकत हासिल कर जीवन यापन करता है। संबंधों की त्रिजया पर मानव अपने समाज का निर्माण करता है। समाज में रहकर वह स्वयं के विकास के साथ-साथ अपनों के विकसित होने के कारक भी खोजता-जुटाता रहता है, इसीलिए मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा जाता है। समाज में रहकर उसकी हर प्रकार की आवश्यकताएँ पूरी हो सकती हैं, उसे हर कठ यह विश्वास रहता है। इसी बिना पर मनुष्य के एकल चरित्र निर्माण की बात हो या संबंधों की भावनात्मक समझ का स्रोत, दोनों परिपूर्ण होते देखे जा सकते हैं।

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो अकेले जीवन यापन करने में असुविधा महसूस करता है, अपने सुख-दुःख बाँटने के लिए उसे संबंधों-संबंधियों की आवश्यकता होती है। संबंधों के विधान को विधिवत समझने के लिए समाज हर पल मुख्य भूमिका निभाता है। पशु-पक्षियों का भी अपना संबंधात्मक समाज होता है। मनुष्य-समाज के लिए संबंधों की समझ एक अहम और आवश्यक पहलू है। मनुष्य चाहकर भी इसे त्याग नहीं सकता। मानव जीवन की परिकल्पना समाज में रहकर ही सम्भव है तो संबंधों की अंदरूनी

समझ, सद्व्यवहार, विनम्रता और स्नेहिल रखैये के साथ व्यक्ति का जीवन समाज पर निर्भर करता है। दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं। किसी एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के साथ मेल या तादात्म्य होना ही संबंध कहलाता है।

'संबंध' नामक तत्त्व उस व्यक्ति से बड़ा होता है जिसके साथ रिश्ता जुड़ा होता है। कितनी बार रिश्ते में बंधे व्यक्ति को रिश्ते से निरस्त, स्थगित, दरकिनार या खारिज कर दिया जाता है। कितनी बार व्यक्ति अपनी मर्जी से किसी रिश्ते से स्वयं ही निकल जाता है। उसके बाद दो व्यक्तियों के बीच जो रिक्तता बचती है, वह किसी और के द्वारा भरी नहीं जा सकती। यह हमेशा एक-दूसरे को आभास करती रहती है कि कहीं किसी के साथ जीवन-तंतु जुड़े थे। एक गहरी टीस रह-रहकर दोनों ओर उठती रहती है। लेकिन दूसरी स्थिति बेहद खतरनाक है जहाँ 'संबंधी' के हृदय से संबंध विलुप्त हो जाता है। यह स्थिति सच में भयावहता को जन्म देती है। किसी साजिश के तहत संबंधी अपने मन से रिश्ते को निरस्त, स्थगित, दरकिनार या खारिज उसी प्रकार कर देता है जिस प्रकार साँप कंचुल को छोड़ देता है। ऐसे संबंध में जिंदा बचा व्यक्ति बेहद पीड़ादायी स्थिति का द्योतक बन जाता है। इस पीड़ा से गुजरने वाला ही बता सकता है कि वह क्या महसूस करता होगा।





आखिर सृष्टि का मूल आधार मानव ही तो है और तारीफ व प्रोत्साहन प्राप्त करना हर मानव का मूलभूत अधिकार है। जहाँ समाज संबंधों के गलत कदमों को रोकता है, वहीं अच्छे संबंध नये और प्रेरक समाज की संरचना करते हैं।

संबंध-संबंधियों की गरिमा को समझने के लिए परिवार से बेहतर पाठशाला कोई हो ही नहीं सकती। बस परिवार के प्रत्येक सदस्य को सचेत रहना होगा। जिस परिवार के बचपन को संबंधों की जानकारी सुसभ्य हाथों द्वारा मिली होती है, वह समाज में एक अलग और खास स्थान रखता है। इसकी सबसे ज्यादा जिम्मेदारी उन दो व्यक्तियों पर होती है जो निकट भविष्य में माता-पिता बनने वाले होते हैं। तब लगता है कि जब कोई नवदम्पती अपने बच्चे को दुनिया में लाने का विचार करे तो सबसे पहले उसे अपनी भावनात्मक, अनुशासनात्मक व संवेदनात्मक क्षमता को परखना होगा। अगर बताये गये भाव उनमें लचर हैं तो बच्चे का खयाल स्थगित कर सबसे पहले उन भावनाओं को सुदृढ़ बनाने के बारे में सोचना चाहिए जो उसके शिशु के लिए भोजन के समान जरूरी हैं। यहाँ ये भी कहना उचित होगा— जब कोई दंपती माता-पिता बनना स्वीकार करता है, उस समय आने वाले शिशु के प्रति सिफर उनकी ही जवाबदेही नहीं होनी चाहिए बल्कि उस बाबत परिवार के हर सदस्य की जिम्मेदारी निश्चित होनी चाहिए कि नवजात शिशु के इर्द-गिर्द रहने वाला व्यक्ति अपनी कथनी-करनी से अच्छे गुणों की ओर आकर्षित कर उसे परिवार और संबंधों के बाबत लाभान्वित करे।

बात यहीं खत्म नहीं होती। शिशु को संस्कारित करने की परियोजना में माँओं की भूमिका अकथनीय है। संबंधों की गरिमा को पहले वे स्वयं समझें और फिर बच्चे को समझाएँ। बच्चों को कोई भी बात समझाने के लिए कथनी से ज्यादा करनी पर ध्यान देने की जरूरत होती है, इसलिए छोटी-छोटी नीतिपरक कहानियों का वे सहारा ले सकती हैं।

शिशु को रिश्तों की गरिमा समझाने के लिए एक माँ को अच्छी कहानी सुनाने और आशुकहानी बनाने वाली होनी चाहिए जो पल में सिचुएशन के हिसाब से कहानी बना सके। क्योंकि हम कितने भी बड़े क्यों न हो जाएँ जब अनुभव की किताब खोलने की बात आती है तो सबसे पहले बचपन वाली पीली पड़ चुकी किताब को हम खोलते हैं। उस पुस्तक में रेखांकित संदर्भों को सोखकर व्यवहार को अंजाम देते दिखायी पड़ते हैं। तभी तो विद्वान बचपन को संस्कारों वाली किताब कहते हैं। बाल्यावस्था में अनुकरणात्मक समझ प्रबल होती है, उसका लाभ उठाते हुए शिशु को उन्नत संस्कारों से अभिसिंचित कर सभ्य नागरिक बनाने में मदद की जा सकती है। शिशु को चैतन्य युवा में परिवर्तित कर समाज को सौंपने की व्यवस्था भी समाज ही देता है।

दरअसल संस्कार दिये नहीं, बोये जाते हैं जिनमें लेने वाले और देने वाले दोनों को उदार और सहज रहना पड़ता है। संस्कारवान बनाने की चाह रखने वाले बालक या बालिका के माता-पिता को श्रद्धा के भाव को अधिक मात्रा में विनम्रतापूर्वक अपनाना पड़ता है। रिश्ते उसी परिवार के खुशनुमा हो सकते हैं जहाँ संस्कार और श्रद्धा निहित होती है।

संबंधों की बिगिया हरी-भरी रखने के लिए वैसे तो स्त्री-पुरुष दोनों की बराबर की भूमिका है लेकिन स्त्री को सुलझे और विकसित सोच वाले किसान की तरह होना ज्यादा जरूरी है क्योंकि शिशु ज्यादा समय माँ के इर्द-गिर्द रहता है। इसलिए किसान रूपी माँ जब अपनी संतान को हर ओर से रक्षा, सुरक्षा, प्रेम, क्षमा, प्रोत्साहन, उदारता, आत्मबल, संतोष, जूनून आदि गुणों से सींचकर समाज रूपी बखार में सहेजे तो किसी और के द्वारा अपनी तारीफ करवाने या पाने का इंतजार न करते हुए अपने कंधे स्वयं थपथपा सकती है।

आखिर सृष्टि का मूल आधार मानव ही तो है और तारीफ व प्रोत्साहन प्राप्त करना हर मानव का मूलभूत अधिकार है। जहाँ समाज संबंधों के गलत कदमों को रोकता है, वहीं अच्छे संबंध नये और प्रेरक समाज की संरचना करते हैं। जहाँ समाज व्यक्ति को उचित-अनुचित का ज्ञान करवाता है, वहीं संबंध मुनष्य के लिए जीवन के साथ चलने की ताकत बनते हैं।

दिल्ली निवासी लेखिका माध्यमिक विद्यालय में संस्कृत और हिन्दी विषय की अध्यापिका पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के बाद साहित्य-साधना में संलग्न हैं। अनेक सम्मानों से अलंकृत लेखिका की कई कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।



शुभस्य शीघ्रम्

अशुभ के त्याग का अर्थ है शुभ के लिए स्थान निर्मित करना। इसलिए अशुभ के त्याग व शुभ के क्रियान्वयन में कभी देर नहीं करनी चाहिए। तभी तो कहा गया है - शुभस्य शीघ्रम्, अशुभस्य कालहरणम् अर्थात् अच्छे काम को जितनी जल्दी हो सके, कर डालें और बुरे काम को जितना भी टाल सके, टालते रहें।

जब हम बाजार जाते हैं तो कई बार बहुत अच्छी किस्म के फल दिख जाते हैं। इतने अच्छे और ताजे कि हम तत्काल वे फल खरीद लेते हैं। घर आने पर पता चलता है कि पहले से ही कुछ फल रखे हुए हैं। अगर उन्हें आज ही इस्तेमाल नहीं किया गया तो वे कल तक खराब हो जाएँगे। ऐसे में हम खरीदकर लाये हुए फलों को रख देते हैं और पहले से रखे फल ही इस्तेमाल करते हैं। अगले दिन हम पाते हैं कि वे फल कुछ ज्यादा ही पक चुके हैं और कुछ तो दागी भी हो गये हैं। उनका स्वाद भी वैसा नहीं रहा, जैसा हमने सोचा था।

प्रायः जीवन में भी ऐसा ही होता है। अक्सर पुरानी चीजों को संजोकर रखने की आदत के कारण नयी चीजों को भी पुराना करके इस्तेमाल करने को अभिशप होते हैं हम। इससे बचने का यही उपाय है कि हम पुरानी चीजें समाप्त हो जाने के बाद ही नयी चीजें खरीदें और जहाँ तक हो सके, पहले केवल अच्छी चीजों का ही इस्तेमाल करें अन्यथा यह दुष्क्रिय कभी नहीं खत्म होगा और अच्छी चीजें उपलब्ध होने के बावजूद हमेशा खराब चीजें इस्तेमाल करनी पड़ेंगी।

हमारी आदतों अथवा व्यवहार को लेकर भी कुछ ऐसा ही होता है। आये दिन हम बहुत कुछ नया और अच्छा सीखते रहते हैं लेकिन जब उसे क्रियान्वित करने का अवसर आता है तो हम नयी सीखी हुई अच्छी बातों की उपेक्षा करके पुरानी बातों को ही अपने व्यवहार में लाते रहते हैं। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि पुरानी

आदतें मुश्किल से छूटती हैं। ऐसा करने के हमारे पास तर्क भी कम नहीं होते। मान लीजिए कि हमने हाल ही तय किया है कि हमें हर परिस्थिति में केवल सच बोलना है। लेकिन जब सचमुच सच बोलने का अवसर आता है तो हम यह सोचकर पीछे हट जाते हैं कि सच बोलने वाले को लोग मूर्ख समझते हैं और उसे ही सबसे ज्यादा धोखा देते हैं। कई बार हम सोचते हैं कि जब अच्छे लोगों से वास्ता पड़ेगा तभी अच्छा व्यवहार करेंगे। हरेक व्यक्ति के सामने अच्छाई का प्रदर्शन करने का क्या फायदा?

वास्तव में हम जो करते हैं वो दूसरों के लिए नहीं होता है। अपनी आदतों अथवा व्यवहार द्वारा हम स्वयं अपने परिवेश व समाज का निर्माण करते हैं। यदि हम बेहतर समाज के निर्माण के लिए कार्य नहीं करेंगे तो हमें अपेक्षाकृत कम बेहतर अथवा बुरे समाज में रहने के लिए विवश होना पड़ेगा। हम जितनी जल्दी हमें अच्छे समाज का निर्माण करने में सफल होंगे, उतनी ही जल्दी हमें अच्छे समाज में रहने के लाभ मिलने लगेंगे और उसके लिए सबसे उपयुक्त समय आज का ही हो सकता है। संभव है भविष्य में हमें इसके लिए अवसर ही न मिले। जिस तरह हम ताजा फलों का सेवन करके मनचाहा स्वाद और अपेक्षित ऊर्जा पा सकते हैं, वैसे ही नयी सीखी हुई अच्छी आदतों को व्यवहार में लाकर पुरानी गलत आदतों से मुक्त होने के साथ ही अपने व्यक्तित्व को हम प्रभावशाली व आकर्षक बना सकते हैं। इसके साथ ही अपने संपर्क में आने वालों का स्नेह व सहयोग भी प्राप्त कर सकते हैं।





नयी बातें जानने व सीखने में हम बहुत रुचि लेते हैं, मगर यदि हम उनसे लाभान्वित नहीं हो पाये तो उसका कोई महत्व ही नहीं रह जाएगा। जहाँ तक बुरी आदतों अथवा व्यवहार का त्याग करने की बात है, इससे कोई हानि होने की संभावना नहीं होती।

हालाँकि यह तभी संभव है जब हम अच्छी आदतों को सीखने के साथ ही उन्हें अपने व्यवहार में लाना प्रारंभ कर दें और जो आदतें अच्छी नहीं हैं, उन्हें भूलकर भी प्रयोग न करने का संकल्प लें। यदि हम अपने अच्छे विचारों अथवा अच्छी आदतों को कार्यरूप में परिणत नहीं करेंगे तो कालांतर में वे नकारात्मक विचारों के कचरे में दबकर रह जाएंगी जिससे उन्हें जानने व सीखने का कोई लाभ नहीं मिलेगा।

नयी बातें जानने व सीखने में हम बहुत रुचि लेते हैं, मगर यदि हम उनसे लाभान्वित नहीं हो पाये तो उसका कोई महत्व ही नहीं रह जाएगा। जहाँ तक बुरी आदतों अथवा व्यवहार का त्याग करने की बात है, इससे कोई हानि होने की संभावना नहीं होती। अशुभ के त्याग का अर्थ है शुभ के लिए स्थान निर्मित करना। इसलिए अशुभ के त्याग व शुभ के क्रियान्वयन में कभी देर नहीं करनी चाहिए। तभी तो कहा गया है - शुभस्य शीघ्रम्, अशुभस्य कालहरणम् अर्थात् अच्छे काम को जितनी जल्दी हो सके, कर डालें और बुरे काम को जितना भी टाल सकें, टालते रहें।

दिली निवासी लेखक स्वतंत्र लेखन में संलग्न हैं। प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं।

गीत

मानव श्रम का वंदन है...

■ गिरीश पंकज-रायपुर ■

जो विकास के पथ पर बढ़कर, अपना लहू बहाते हैं।
श्रम-सीकर से इस समाज की, उन्नत छवि बनाते हैं।
जिस समाज में श्रम सम्मानित, वही समझ लो न्यारा है।
आदर हो उन सब लोगों का, जिनने जगत सँवारा है।
ऐसे बीर सपूत्रों का ही, बार-बार अभिनंदन है।।

मानव श्रम का वंदन है।।

टनल बनाते, महल बनाते, पुल का भी निर्माण करें।
भूखे-यासे रहकर भी जो, हम सबका कल्याण करें।
भवन, सरोवर, पथ आदि क्या बोलो हम सब गढ़ पाते।
श्रमिक अगर न होते जग में, हम विकास न कर पाते।
ऐसे श्रमवीरों के माथे, कुछ रोली, कुछ चन्दन है।।

मानव श्रम का वंदन है।।

श्रमवीरों के बलबूते ही, अपना यह वैभव सारा।
जहाँ जला है श्रम का दीपक, वहीं हुआ है उजियारा।
रहने को घर-बार नहीं, फिर भी वे मुस्काते हैं।
अग्रदूत बन कर सिरजन के, कितने महल बनाते हैं।
खतरे नित्य उठा कर मानव, करता श्रम का अर्चन है।
मानव श्रम का वंदन है।।

जो करते हैं मेहनत पूरी, उनको नित सम्मान मिले।
वे भी बन्धु हमारे अपने, उनको भी पहचान मिले।
जिन लोगों के बलबूते, यह सुंदर विश्व सजाया है।
यह बगिया भी उनकी अपनी, उनने इसे बनाया है।
वे सर्जक हैं इस दुनिया के, जिनमें कुशल प्रबंधन है।
मानव श्रम का वंदन है।।

श्रमवीरों का बहे पसीना, तो विकास की नदी बहे।
श्रम के बिना अधूरा जीवन, अपना यह इतिहास कहे।
जितने भी निर्माण हुए हैं, उनकी यही कहानी है।
श्रमजीवी पीढ़ी ने अपनी, झोंकी सदा जवानी है।
वही राष्ट्र जीवंत रहा है, जिसमें नित स्पंदन है।

मानव श्रम का वंदन है।।

(सीकर : स्वेद कण)



अहिंसक संप्रेषण से ही समाज में समता संभव

संवाद के दौरान किसी को बातों से या विचार-संकेतों से कष्ट पहुँचाना हिंसक संप्रेषण कहलाता है। मौजूदा वैश्विक परिस्थितियों में अहिंसक संप्रेषण को गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। अहिंसक संप्रेषण का विद्यान्वयन और प्रसार करके ही विसंवादी प्रवृत्तियों को जीता जा सकता है तथा समता और संवाद की राह बनायी जा सकती है।

जब कहीं हिंसा की चर्चा होती है तो हमारा ध्यान सबसे पहले हिंसा के प्रत्यक्ष रूपों पर ही जाता है जबकि अप्रत्यक्ष हिंसा भी उतनी ही विनाशक, विघ्वंसक और नकारात्मक होती है जितनी कि प्रत्यक्ष हिंसा। अप्रत्यक्ष हिंसा वैचारिकता के अमूर्त कलेवर में सामने आती है, इसलिए अधिकांश मामलों में इसे विहित करना आसान नहीं होता। फलस्वरूप उसके निवारण या उन्मूलन की राह और भी कठिनतर हो जाती है।

संप्रेषण या संवाद के दौरान किसी को बातों से या विचार-संकेतों से कष्ट पहुँचाना हिंसक संप्रेषण कहलाता है। विडंबना यह है कि अधिकांश मामलों में हिंसक संप्रेषण करने वाला अपने द्वारा की गयी इस हिंसा से अनभिज्ञ रहता है।

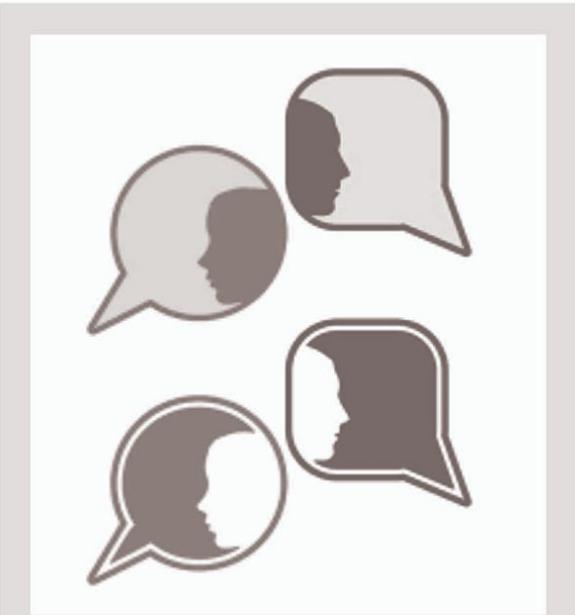
मानवता के इतिहास या वर्तमान दौर को देखें तो पता चलता है कि शारीरिक या प्रत्यक्ष हिंसा का उद्गम सदैव हिंसक संप्रेषण से ही हुआ है। इसलिए विश्व शांति, मानवीय सौहार्द, समन्वय और अहिंसा के प्रतिष्ठापन के लिए हिंसक संप्रेषण से मुक्ति के सतत प्रयास आवश्यक हैं। कौरब-पांडवों के बीच महाभारत का महाविनाशक युद्ध एक प्रत्यक्ष हिंसा थी जिसमें उस समय के सबसे घातक और विघ्वंसक शस्त्रास्त्रों का प्रयोग किया गया था। परंतु

इस प्रत्यक्ष और क्रूर हिंसा का कारण कौरवों और पाण्डवों के बीच हुआ हिंसक संप्रेषण ही था। इसके विपरीत सिकंदर और पोरस के बीच हुए दुर्धर्ष और भीषण संग्राम के बाद भी दोनों योद्धाओं के अहिंसक संप्रेषण ने उदार तथा उदात्त मूल्यों की नींव डाली। विजित होकर भी जीत के दर्प को त्याग कर पोरस की वीरता के सम्मान में सिकंदर का यह पूछना कि तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाये और प्रत्युत्तर में पोरस का यह कहना कि जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है, हिंसक संप्रेषण पर अहिंसक संप्रेषण की जीत को प्रमाणित करता है। साथ ही संदेश देता है कि एक व्यक्ति को दूसरे से वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा वह स्वयं के लिए चाहता है।

हिंसक संप्रेषण से मुक्ति या निवारण का सबसे अच्छा तरीका यही है कि हिंसामुक्त संप्रेषण को अपने दैनंदिन व्यवहार में अपनाया जाये। विश्व मानव और मानवता दिनोंदिन भौतिकता, मशीनीकरण और आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति के चलते संवादहीनता की ओर बढ़ी जा रही है, इसलिए हिंसामुक्त संप्रेषण इस युग की अनिवार्यता है।

हिंसामुक्त संप्रेषण के महत्व को देखते हुए देश के शिक्षाविदों, नीति नियंताओं और मनीषियों ने बालक तथा





एक-दूसरे की भावनाओं को समझते हुए और उनका सम्मान करते हुए व्यवहार करने से वसुधैव कुटुंबकम् की कल्पना को साकार करना कोई मुश्किल काम नहीं रहेगा। वहीं, आदेशात्मक लहजे की अपेक्षा अनुरोधप्रकरण लहजा अधिक प्रजातात्रिक वातावरण निर्मित करता है, इसलिए अहिंसक संचार के लिए यह श्रेयस्कर है।

विद्यालयी परिवेश में हिंसामुक्त संप्रेषण को अपनाने पर बल दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षार्थी की जिज्ञासा को उन्मुक्तता प्रदान करने तथा उसे संवाद के अवसर प्रदान करने आदि प्रावधानों की तह में बालकको हिंसा और भय से पूर्णतः मुक्त रखने की ही अपेक्षा जतायी गयी है।

हिंसामुक्त संप्रेषण या अहिंसक संचार की आज की शिक्षण व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा मनोविज्ञानियों का ध्यान बराबर इस विषय पर बना हुआ है। अनेक अध्ययनों और अनुसंधानों के परिणामस्वरूप इस क्षेत्र की समझ भी खासी विकसित हो रही है, फिर भी धरातलीय क्रियान्वयन के लिए बड़े प्रयास वाच्छीय हैं।

पाश्चात्य शिक्षाविद् एवं दार्शनिक जॉन काल्डवेल होल्ट भी शिक्षा के एक ऐसे ही मॉडल की सिफारिश करते हैं जहाँ बच्चे हिंसामुक्त वातावरण में स्वाभाविक रूप से विकसित हो सकें, ज्ञान का अर्जन कर सकें। अहिंसक संचार को लेकर पाश्चात्य विद्वान तथा नैदानिक मनोविज्ञानी डॉ. मार्शल रोजेनबर्ग ने संचार की पुरानी हिंसक और नवीन अहिंसक शैली के अंतर को क्रमशः मांसाहारी सियार और शाकाहारी जिराफ से संकेतित किया है।

सियार समग्र रूप में आक्रामकता और प्रभुत्व का प्रतीक है, जबकि जिराफ का बड़ा दिल हिंसामुक्त संप्रेषण के करुणामय पक्ष को संकेतित करता है। उसकी लंबी गर्दन स्पष्ट दृष्टि वाले वक्ता की प्रतीक है जो अपने साथी वक्ताओं की प्रतिक्रियाओं से भी अवगत होते हैं।

संचार की हिंसक और अहिंसक शैली के बीच के अंतर, प्रभाव तथा परिणाम को रामकथा के धनुष यज्ञ प्रसंग के माध्यम से समझा जा सकता है। अपने इष्टदेवता शिव का धनुष टूटने पर परशुराम का क्रोधमिश्रित संचार तो हिंसात्मक है ही, परंतु उसके प्रत्युत्तर में क्रमशः राम और लक्ष्मण के संवाद उस अंतर को दर्शाते हैं जो अहिंसक और हिंसक संचार के बीच उपस्थित है।

इस प्रसंग में यह बात बहुत साफ है कि हिंसक संप्रेषण प्रत्यक्ष हिंसा की ओर प्रवृत्त करता है जबकि अहिंसक संप्रेषण क्रोधोन्मत्त, हिंसात्मक व्यक्ति के हृदय को परिवर्तित कर उसे समन्वय और सौहार्द की ओर अग्रसर करता है। राम द्वारा परशुराम के प्रति कहे गये कथन हिंसामुक्त संप्रेषण के श्रेष्ठ उदाहरण हैं जो क्रमशः परशुराम की क्रोधादिन का शमन कर देते हैं।

आधुनिक अध्ययन में हिंसामुक्त संप्रेषण के क्रियान्वयन के लिए चार घटकों को आवश्यक माना जाता है। इनमें पहला घटक है अवलोकन अर्थात् देखना। हालांकि यह देखना निष्पक्ष तथा पूर्वाग्रह से मुक्त होना चाहिए। इस तरह का अवलोकन हिंसामुक्त संप्रेषण की पहली सीढ़ी है। हिंसामुक्त संप्रेषण का दूसरा घटक है भावनाओं की पहचान और उनका सम्मान। एक-दूसरे की भावनाओं को समझते हुए और उनका सम्मान करते हुए व्यवहार किया जाये तो वसुधैव कुटुंबकम् की कल्पना को साकार करना कोई मुश्किल काम नहीं रहेगा।

अवलोकन और भावना के साथ तीसरी महत्वपूर्ण कड़ी है जरूरतों की समझ। किसी प्राणी की उचित आवश्यकताओं को समझते हुए उनकी पूर्ति के लिए आगे बढ़ना भी अहिंसक संचार है। अहिंसक संचार के क्रियान्वयन का अंतिम घटक अनुरोध है। संवाद के आदेशात्मक लहजे की अपेक्षा अनुरोधप्रकरण लहजा अधिक प्रजातात्रिक वातावरण निर्मित करता है, इसलिए अहिंसक संचार के लिए यह श्रेयस्कर है।

मौजूदा दौर की वैश्विक परिस्थितियों को देखते हुए अहिंसक संप्रेषण को गंभीरता से लेने की आवश्यकता है। अहिंसक संप्रेषण का क्रियान्वयन और प्रसार करके ही विसंवादी प्रवृत्तियों को जीता जा सकता है तथा समता और संवाद की राह बनायी जा सकती है।

करौली निवासी लेखक हिंदी व्याख्याता के पद पर कार्यरत रहते हुए साहित्य सूजन में संलग्न हैं। इनके आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।



प्रकृति प्रियता का सुख

प्रकृति से प्रेम करना आवश्यक है। जैसे हम अपनी माँ का रखाल रखते हैं, वैसे ही प्रकृति का रखाल रखना पड़ेगा। तब कहीं जाकर हम इस धरती को बचा पाएंगे। हमें चिंतन करना है कि प्रकृति को नुकसान न पहुँचे। हम अपनी चिंतन धाराओं को मानवीय मूल्यों के आकार में ढालें। यह कदम धरती और धरती पुत्रों के लिए हितकर होगा।

हर जीव सहज सुख स्वरूप है। वह परमात्मा का अंश है। परमात्मा को सत् चित् आनंद कहा जाता है। रामचरितमानस में जीव को परिभाषित करते हुए गोस्वामी तुलसी दास कहते हैं - "ईश्वर अंस जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुख रासी।।" अर्थात् जीव ईश्वर का अंश है। अतएव वह अविनाशी, चेतन, निर्मल और स्वभाव से ही सुख की राशि है। उसे सुख खोजने के लिए कहीं जाना नहीं है। सुख तो उसका सहज स्वभाव है।

सुखी व्यक्ति का संपूर्ण जीवन संगीत में ढल जाता है। संपूर्ण संगीत का वाइमय उन लोगों ने दिया है जो परम आनंद में निमग्न थे। दुःखी व्यक्ति संगीत शून्य होता है। सुखी व्यक्ति भीतर से सम्राट होता है। दुःखी सम्राट भीतर से भिखारी होता है। प्रश्न उठता है कि अगर सुख शाश्वत है, सहज है तो फिर मनुष्य इतने विषाद में क्यों है? इसके पीछे उसकी महत्वाकांक्षा, अहंकार, स्वार्थ, द्वेष दृष्टि की कठिन भूमिका है। ये सब ऐसे घातक कारक हैं जो उर्वर भूमि को बंजर बना देते हैं, जहाँ फिर कभी सुख के फूल लग ही नहीं सकते।

ज्ञात 6000 वर्षों के इतिहास में 6000 से ज्यादा युद्ध हुए। ये तो बड़े-बड़े युद्ध हैं। हर दिन पृथ्वी पर कहीं न कहीं युद्ध चलता

रहता है। युद्ध है क्या? युद्ध है मनुष्य में छुपी हुई पशुता का नर्तन। युद्ध राजनीति का फलन है। मनुष्य की अहंमन्यता-स्वार्थपरता ने सुख का भाव उससे छीन लिया है। उसे स्वयं ही सुख को उद्घाटित करना होगा। वैसे ही जैसे जल सर्वत्र उपलब्ध है। अनावश्यक मिट्ठी हटा दो, जल का स्रोत यहीं प्रकट हो जाएगा। जल के पाने का सूत्र खोजना नहीं है। सिर्फ जल को प्रकट करना है, उद्घाटित करना है। ठीक उसी प्रकार सुख का सूत्र खोजना नहीं है। बस उसे उद्घाटित करना है। अपने जीवन के अनावश्यक विजातीय तत्त्वों - जैसे राजनीति, स्वार्थ, अहममन्यता, लोलुपता के कंकड़ हटा दो, सुख रूपी जल का स्रोत स्वतः प्रकट हो जाएगा। सुख स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मानसिकता की फलश्रुति है। सुख अनुभूति का परिणाम है। भौतिक सम्पत्ता से इसका कोई लेना-देना नहीं। कहा भी गया है - "जब आवत संतोष धन सब धन धूरि समान।"

हम जीवन के दूसरे आयाम में भी दुःखों के सर्जक हम स्वयं हैं। प्रकृति हमारी माँ है। वह सिर्फ देती है। अपने अंतस के सारे पदार्थ और सौंदर्य को हम पर लुटा देती है, लेकिन हमने कभी कृतज्ञता ज्ञापन नहीं किया। उल्टे वैज्ञानिकों ने प्रकृति पर विजय का अभियान छेड़ रखा है। वैज्ञानिकों ने कई क्षेत्रों में





वैज्ञानिक जगत के कई अनुसंधान और उनके परिणाम हमारी पारिस्थितिकी को अपूर्णीय क्षति पहुँचा रहे हैं। गिर्द, गौरेया आदि तमाम पक्षियों की प्रजातियां मिटने के कागार पर हैं। पृथ्वी के सारे जीव-जंतु पारस्परिक मैत्री के सूत्र में बंधे हैं। उनका विनाश आत्मघात ही है।

प्रकृति को चुनौती दी है, जो हर प्रकार से घातक है। वैज्ञानिकों ने अनुवांशिकी के क्षेत्र में प्रकृति से छेड़छाड़ की। फल-सब्जियों की नयी-नयी किस्में लेकर आये लेकिन उनका सनातन स्वाद चला गया। वे मनुष्य के शारीरिक रसायन में विष धोल रहे हैं। फल-सब्जियों तक ही यह प्रयोग सीमित न रहा। पशु तथा मनुष्य तक पर अनुवांशिकी अनुसंधान का प्रयोग चल रहा है। इनके मध्य राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध की संभावना मिट गयी है।

औद्योगिक पटल पर भी बड़ी क्रांति हुई। विकास को गति मिली लेकिन आज औद्योगिक कचरे हमारी नदियों को दूषित कर रहे हैं। जल-जंतु मर रहे हैं। पवित्र गंगा का जल भी आचमन के योग्य न रहा। हमारा शरीर रोगालय बन गया है। ऐसी-ऐसी बीमारियाँ उत्पन्न होने लगी हैं जिनका इलाज ही संभव नहीं। कोरोना जैसी त्रासदी प्रकृति से छेड़छाड़ का ही दुःखद परिणाम है।

हमारे यहाँ बरगद, पीपल, नीम आदि वृक्षों की पूजा की जाती थी। हमने नदियों और पहाड़ों को पूजा। इसके पीछे हमारे पूर्वजों की संवेदना और प्रकृति-प्रेम था। वे भौतिक समृद्धि के अभाव में कितने सुखी थे, आज हम सोच भी नहीं सकते। धरती के वृक्ष बादल को आमंत्रित करते हैं। उनके मौन आमंत्रण के फलस्वरूप

प्रकृति की करुणा बादल बनकर बरसती है। जनसंख्या विस्फोट से बढ़ती आबादी के कारण जंगल काटे जाने लगे। परिणामस्वरूप वर्षा क्षेत्र का जो भौगोलिक कल्प था, वह न्यूजीलैण्ड से तुर्की तक बदल गया है। वृक्ष यदि कटते रहे तो फिर अलनीनों का तापमान वर्षा न ला सकेगा।

बढ़ती आबादी में राजनैतिक लाभ के लिए नदियों के जल अधिग्रहण क्षेत्र में लोगों को बसा दिया जाता है। बालू का अंधाधुंध उत्खनन हो रहा है। इससे नदियों का आकार घट रहा है। उनके मार्ग या तो बदल रहे हैं या बंद किये जा रहे हैं। इसका परिणाम अनावश्यक बाढ़ आदि की त्रासदी के रूप में भोगना पड़ रहा है।

वैज्ञानिक जगत के कई अनुसंधान और उनके परिणाम हमारी पारिस्थितिकी को अपूर्णीय क्षति पहुँचा रहे हैं। गिर्द, गौरेया आदि तमाम पक्षियों की प्रजातियां मिटने के कागर पर हैं। पृथ्वी के सारे जीव-जंतु पारस्परिक मैत्री के सूत्र में बंधे हैं। उनका विनाश आत्मघात ही है।

यद होगी केदारनाथ त्रासदी। उसका जिम्मेदार कौन था? तीर्थ में कभी पुण्यश्लोक लोग जाते थे। धार्मिक आस्था और श्रद्धा ही मूल कारण होता था। अब वह क्षेत्र सैलानियों का मनोरंजन विहार स्थल हो गया। यात्रियों की बढ़ती भीड़ के मद्देनजर धन कुबेरों ने धन अर्जन के लिए वहाँ बड़े-बड़े रिसॉर्ट, पाँच सितारा होटल बना दिये। नदी के प्रवाह का मार्ग अवरुद्ध हो गया। फिर प्रकृति के प्रकोप का चक्र चला। सिर्फ मंदिर को छोड़कर सारी भौतिक संपदा काल के गाल में समा गयी। कितनी जनहानि हुई, उसका कोई हिसाब नहीं।

इसलिए प्रकृति से प्रेम करना आवश्यक है। जैसे हम अपनी माँ को सहेजते हैं, उसका खयाल रखते हैं, वैसे ही प्रकृति को सहेजना पड़ेगा, उसका खयाल रखना पड़ेगा। तब कहीं जाकर हम इस धरती को बचा पाएंगे। हमें चिंतन करना है कि प्रकृति को किसी तरह से नुकसान न पहुँचे। हम अपनी चिंतन धाराओं को मानवीय मूल्यों के आकार में ढालें। सुख को उद्घाटित करें। यह कदम धरती और धरती पुत्रों के लिए हितकर होगा।

बहगांव के सुकुलपुरवा गंगा-जमुनी गाँव निवासी लेखक इंटर कॉलेज में प्रधानाचार्य पद पर कार्यरत रहते हुए साहित्य-साधना में संलग्न हैं। मानवीय मूल्यों तथा सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दों पर इनके आलेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।



“अनुव्रत विचार और आचार की एकता का ऊँचा आदर्श है।”



बच्चों में नैतिक शिक्षा का बुनियादी प्रश्न !

संस्कारों में परिष्कार कर हम सुनागरिक का निर्माण कर समाज और राष्ट्र को ठोस धरातल दे सकते हैं अन्यथा हमारी उपेक्षा और अनदेखी देश में ऐसे युग की शुरुआत भी कर सकती है जो अत्यंत कष्टदायी तथा विद्वंसकारी होगा। अतः रचनात्मक सोच का मार्ग प्रशस्त किया जाना ही सारी समस्याओं का हल भी है।

बा लक के जन्म के साथ ही उसमें शिक्षा के संस्कार-रोपण का कार्य शुरू हो जाता है। माता-पिता अबोध बच्चों से अक्सर ऐसी बातें बोलते हैं जिनमें संस्कार की गंध होती है। वे चाहते हैं कि उनका बच्चा एक अच्छा नागरिक बने और समाज में उसकी पहचान बने। ऐसी पहचान बनाने के लिए जो संस्कार शिक्षास्वरूप बालकों को दिये जाते हैं, वे आदर्शों तथा नैतिक मान्यताओं के ही सन्त्रिकट होते हैं।

बच्चों को तीन वर्ष तक की आयु तक तो माता-पिता नैतिक मूल्यों की घुड़ी पिला पाते हैं, लेकिन वे इस बात से अनभिज्ञ रहते हैं कि तीन वर्ष की अबोध आयु अच्छे-बुरे का ज्ञान नहीं करा पाती। इसलिए उनके द्वारा दिये जाने वाले संस्कार इस आयु में बहुत अधिक प्रभावी नहीं हो पाते।

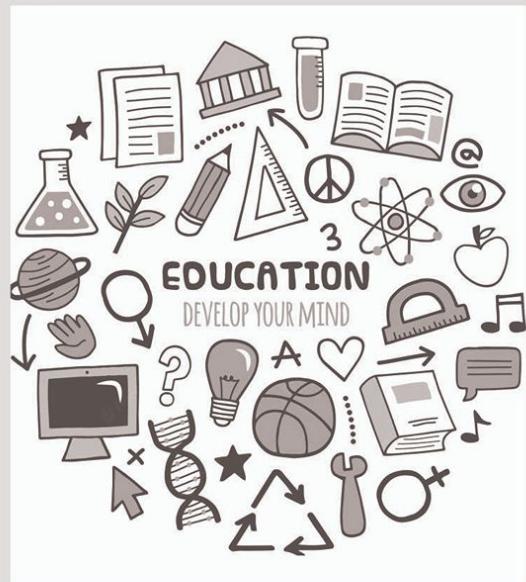
शिशु कक्षाओं में प्रवेश के बाद माता-पिता की निश्चिंतताएं बढ़ जाती हैं तथा वे नैतिक शिक्षा अथवा नैतिक संस्कार के लिए भी विद्यालय शिक्षा पर निर्भर होने लगते हैं। माता-पिता इस बात से आश्वस्त हो जाते हैं कि बच्चा अब स्कूल में तमाम आदर्श व विनम्रताएं सीख रहा है, जो उसके लिए जरूरी हैं। यहीं चूक होती है तथा बच्चे अन्य विषयों के मायाजाल में उलझकर नैतिक मूल्यों को जीवन में उतारने के प्रति सक्षम नहीं बन पाते तथा संस्कारों का

समावेश उनमें नहीं हो पाता। इस तरह अबोध काल से प्रारंभ हुए संस्कार भाव को जो गति मिलनी चाहिए, वह औपचारिक शिक्षा के साथ ही कम होने लगती है। बच्चों में नैतिक मूल्य की शिक्षा का अभाव बढ़ते चले जाने से वे सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के महत्व को नहीं समझ पाते और सुनागरिक निर्माण का कार्य वहीं ठप्प हो जाता है।

इसके अतिरिक्त माता-पिता की बढ़ती व्यस्तता और बदलते जीवन मूल्यों ने भी परिवारों में नैतिक शिक्षा के कार्य में रुकावटें खड़ी की हैं तथा इसके लिए वातावरण निर्माण की उपेक्षा हुई है। बढ़ता जीवन स्तर तथा उसके लिए बढ़ता जीवन संघर्ष परिवारिक संस्कार शिक्षा की बाधा बना है। आज घरों में भौतिक सुख-सुविधाएं बढ़ाने-जुटाने की लालसा बलवती हुई है तथा अभिभावक बच्चों के प्रति अपने दायित्वों से विमुख हुए हैं।

आज मनुष्य की जीवनशैली में भी व्यापक बदलाव हो गया है। रहन-सहन, खान-पान, पहनावा तथा जीवन-प्रसंग सब कुछ बदल गये हैं। सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के परिवर्तन से माता-पिता तथा संतान के मध्य दूरी का नया परिवेश बन गया है, जिससे एक अंतराल तथा मोहर्भंग जैसी स्थिति बनी है। माता-पिता एक सीमा तक ही बच्चों से सीख की कोई बात कह पाते हैं। संतान के





यह एक ऐसा नाजुक दौर है, जिसमें नयी पीढ़ी को संस्कार देने का कार्य कोरी सीख या उपदेश के रूप में नहीं, अपितु जीवन की आवश्यकता के लिए प्रतीक रूप में परोक्ष स्वरूप में दिया जाना चाहिए और उसके अनुसार ही नये पाठ्यक्रम तैयार किये जाने चाहिए।

प्रति यह भाव कालांतर में अत्यंत खतरनाक बन जाता है। कई बच्चों में अनादर, कुसंस्कार तथा अनैतिक मान्यताएं घर करने लगती हैं। वे छोटे-बड़े का, गुरुजनों का तथा मानव सभ्यता का गूढ़ अर्थन समझकर उथले भाव से इन्हें स्वीकार करते हैं।

आज इंटरनेट और टेलीविजन ने देश की अस्सी प्रतिशत आबादी को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। बच्चा थोड़ा-सा भी समझ ग्रहण करता है, तब से वह घर में टीवी कार्यक्रमों को देखना शुरू कर देता है। टीवी पर दिखायी जाने वाली फिल्मों, धारावाहिकों से अपराध, सेक्स तथा हिंसा का लावा फैलता है तथा नयी पीढ़ी में यही संस्कार बढ़ता चला जाता है कि जीवन यही है तथा इसी तरह से उन्हें अपना जीवन यापन करना है, तब भी नैतिक शिक्षा कोई स्वरूप नहीं ले पाती।

यदि टेलीविजन पर बच्चों में संस्कार का भाव जागृत करने वाले कार्यक्रम प्रसारित हों तो वे नैतिकता को अपने जीवन की आवश्यकता के रूप में स्वीकार कर सकते हैं और दृष्टिसांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना को रोका जा सकता है। लैकिन व्याक्सायिक दृष्टि तथा अधिकात्म कर्माई की प्रवृत्ति ने मनुष्य को इतना स्वार्थलोलुप बना दिया है कि वह उस दायरे से बाहर नहीं आना चाहता। चाहे इससे समाज की कितनी ही बड़ी हानि क्यों न

हो जाये? वहीं, ऐसे कार्यक्रम जो केवल वयस्क लोगों को ही देखने चाहिए, वे कार्यक्रम भी आजकल बच्चों के साथ देखे जाते हैं। ऐसे में आदर तथा नैतिक भाव में गिरावट स्वाभाविक है। इसलिए नैतिक मूल्यों के निर्माण का कार्य फिर अभिभावकों पर आ जाता है।

जहाँ तक शिक्षा पाठ्यक्रमों का प्रश्न है, वे नैतिक शिक्षा के लिए कोई भूमिका नहीं निभाते। लार्ड मैकाले काल की शिक्षा पर नयी शिक्षा नीति का मुलम्मा चढ़ा देने से वह नये जीवन को पोषित नहीं कर सकती। उसके लिए नये परिवेश, सोच तथा स्रोतों की आवश्यकता है। पाठ्यक्रमों को इस रूप में समृद्ध किया जाना चाहिए कि वे बालकों में नैतिक शिक्षा मूल्यों के प्रति निष्ठा जमा सकें और यह कार्य सतत रूप से चलना चाहिए। तब संस्कारों की सीख का जो कार्य परिवार की शाला में कम हो रहा है, वह विद्यालय में पूर्ण हो सकता है।

आजकल विद्यालयों में शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य जो नये संबंधों का सूत्रपात हुआ है तथा शिक्षक दायित्वों से विमुख हुए हैं, वे भी अनैतिक मान्यताओं तथा चारित्रिक दोषों को बढ़ाते हैं। यह एक ऐसा नाजुक दौर है, जिसमें नयी पीढ़ी को संस्कार देने का कार्य कोरी सीख या उपदेश के रूप में नहीं, अपितु जीवन की आवश्यकता के लिए प्रतीक रूप में परोक्ष स्वरूप में दिया जाना चाहिए और उसके अनुसार ही नये पाठ्यक्रम तैयार किये जाने चाहिए। नैतिक शिक्षा का पृथक् से पाठ्यक्रम अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाना भी इसका एक विकल्प हो सकता है।

शिक्षा, सीख का पर्याय है तो फिर वर्तमान संदर्भों में इसका महत्व और अधिक व्यापक हो गया है, क्योंकि यह पीढ़ी नैतिकता तथा आदर्शों में पतनोन्मुखी हुई है। यही समय है जब संस्कारों में परिष्कार कर हम सुनागरिक का निर्माण कर समाज और राष्ट्र को ठोस धरातल दे सकते हैं अन्यथा हमारी उपेक्षा और अनदेखी देश में ऐसे युग की शुरुआत भी कर सकती है जो अत्यंत कष्टदायी तथा विध्वंसकारी होगा। अतः रचनात्मक सोच का मार्ग प्रशस्त किया जाना ही सारी समस्याओं का हल भी है।

जयपुर निवासी लेखिका पिछले चार दशकों से साहित्य सृजन में संलग्न हैं। इनके आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष



“अणुव्रत सात्त्विक और आनंदमय जीवन जीने का मार्ग है।”

असफलताओं का भी रखें हिसाब-किताब

असफलता को हमारे समाज में बहुत अतार्किक तरीके से देखा जाता है। अक्सर इसे एक डरावने एहसास की तरह पेश किया जाता है जबकि यह एक सामान्य-सी बात है। जब आप नयी चीजों और किसी नयी मंजिल को हासिल करने के प्रयास करते हैं तो उसमें असफल होना सामान्य-सी बात है। इसे सहज रूप से स्वीकार करना चाहिए।

आ ज जिसे देखिए, वही सिर्फ सफलता की बातें करता नजर आता है। सफलता के नये फॉर्मूले ढूँढ़ने में व्यस्त रहता है। ऐसा होना भी चाहिए क्योंकि जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए यह जरूरी है, लेकिन इसके साथ ही अपनी या अपने आसपास मौजूद दूसरे लोगों की असफलता की कहानियों को भी भूलना नहीं चाहिए। सफलता की कहानियां प्रेरणा देती हैं जबकि असफलता के सच्चे किस्से हमें सीख और अनुभव देते हैं।

फिल्म अभिनेता पद्मश्री मनोज वाजपेई, जो सफलता के शिखर पर पहुँचने से पहले कई बार असफलताओं का स्वाद चख चुके हैं, कहते हैं - "हमें अपनी असफलताओं का भी रिज्यूमे बना लेना चाहिए। असफलताओं की सीधी मुझे मजबूती और सकारात्मकता से भर देती है। यह मुझे इसविश्वास से भी भर देती है कि तमाम असफलताओं के बावजूद मैं आज इस मुकाम पर पहुँचा।"

यूनिवर्सिटी ऑफ एडिनबर्ग की लेक्चरर मेलानी स्टीफन ने सन् 2010 में फेल्योर रिज्यूमे को सेल्फ एसेसमेंट टूल की तरह पेश करते हुए न सिर्फ इसका उपयोग करने की सलाह दूसरों को दी बल्कि खुद भी अपना "सीधी ऑफ फेल्योर्स" नेचर पत्रिका में

प्रकाशित करवाया। उन्होंने लिखा, "हो सकता है यह पहली नजर में निराशा या हताशा पैदा करने वाला लगे लेकिन यह आपको और आपके साथियों को रिजेक्शन या असफलता को ज्यादा तूल न देकर नयी शुरुआत करने की प्रेरणा भी देगा।"

कोलकाता के फोर्टिस हॉस्पिटल में वरिष्ठ मनोचिकित्सक डॉक्टर संजय गर्ग कहते हैं, "असफलता को हमारे समाज में बहुत अतार्किक तरीके से देखा जाता है। अक्सर इसे एक डरावने एहसास की तरह पेश किया जाता है जबकि यह एक सामान्य-सी बात है। जब आप नयी चीजों और किसी नयी मंजिल को हासिल करने के प्रयास करते हैं तो उसमें असफल होना या व्यवधान आना बहुत सामान्य-सी बात है। इसे सहज रूप से स्वीकार करना चाहिए। सच तो यह है कि किसी भी बड़ी मंजिल या सफलता हासिल करने के लिए कुछ असफलताएं जरूरी हैं। इनसे काम के तरीके या प्लानिंग में कमियों का पता चलता है। सोच का दायरा बढ़ता है। सही तरीके से काम करने की प्रेरणा मिलती है।

असफलता प्रेरक कैसे

कोलंबिया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने 2017 में 400 विद्यार्थियों को तीन समूहों में बाँट दिया। एक समूह को अल्बर्ट



प्रथनचिह्न

■ पिया देवांगन 'पियू' - गरियाबंद ■

"विवेक ने रात को घर आते ही साधना से पूछा-
"माँ...! तुमने खाना खा लिया? बाबूजी कहाँ हैं? वे
खा लिये?"

घड़ी पर एक नजर डालते हुए साधना बोली -
"विवेक ! तू कैसी बात करता है बेटा? हम लोग तेरे
बगैर कभी खाना खाये हैं?"

विवेक बोला- "अगर रात अधिक हो जाये तो
खाना खा लिया करो। यूँ इंतजार मत किया करो।"
विवेक के स्वर में चिड़चिड़ाहट थी। तभी रघुवीरजी
कमरे से बाहर निकले। बोले- "क्यों रे ! तुम्हारे बिना
कैसे खाएंगे ? एक तू ही तो है हमारी आँखों का तारा,
दूसरा है ही कौन हमारा?"

साधना बोली- "बेटा, ये ठीक बात नहीं है। जैसे-
जैसे तू बड़ा हो रहा है, तेरे व्यवहार में रुखापन आते जा
रहा है। सीधे मुँह बात नहीं करता। बहुत ही घमंड है
तुझे...पता नहीं किस बात पर? क्या काम करता है तू?
मैं तेरे ऑफिस जाकर बात करती हूँ।"

"माँ ..! मैं कोई भी काम करूँ? आपलोग मेरे
काम में टांग न अड़ाएं तो बेहतर होगा।" बीच में ही
खाना छोड़कर विवेक चला गया।

अगली सुबह विवेक के घर के सामने भीड़ थी।
तरह-तरह की बातें हो रही थीं। तभी अचानक पुलिस
की गाड़ी उसके घर के पास आकर खड़ी हुई। विवेक
भागना तो चाहा, पर भाग नहीं पाया। रघुवीर व साधना
अपनी किस्मत को कोसने लगे। किससे क्या कहते?
आँखें भीग गयीं। आखिरकार पता चल ही गया कि
विवेक जुआ, सद्गुरु और कई दो नंबरी काम करता है।
घर तक को गिरवी रख डाला है। जमीन-जायदाद में भी
हाथ मारने की कोशिश की है। विवेक का सारा भंडा
फूट गया। दो पुलिस बाले उसे पकड़ कर ले गये।

रघुवीर और साधना भरे मन से यही सोच रहे थे-
"आखिर हमारी परवरिश में क्या कमी रह गयी?"
उनके द्वारा विवेक को दिये संस्कार पर प्रश्नचिह्न लग
गया था।

अपनी असफलताओं का फायदा उठाने के लिए
आपको खुद का सच्चा आलोचक, अपने प्रति
ईमानदार और दयालु होना चाहिए ताकि आप समस्या
का न सिर्फ सही आकलन करें बल्कि उसके लिए
खुद को कोसने के बजाय उनके कारण और समाधान के
उपाय खोज सकें।" करियर काउंसलर संदीप प्रसाद कहते हैं,
अपनी असफलताओं का लेखा-जोखा रखने से आपको अपनी
कमजोरियों और ताकत का सही आकलन करने का मौका मिलता
है। इससे आप अपनी पुरानी गलतियों को दोहराने से भी बचते हैं।

ऐसे बनाएं फेल्योर सीवी

⇒ अपने रिज्यूमे को सामने रखें और अब तक स्कूल से लेकर
वर्कप्लेस तक की असफलताओं पर नजर डालें। याद करें, आपने
कौन-सी ऐसी चीजें हासिल करनी चाही थीं लेकिन नहीं कर पाये
थे, इनकी सूची बनाएं।

⇒ फेल्योर सीवी में पूरी ईमानदारी से अपनी कमजोरियों को
खुलकर लिखें। यह आपकी ईमानदार आत्म समीक्षा के लिए है।

⇒ अपनी असफलताओं के नीचे बिंदुवार लिखें कि आपकी
किन गलतियों की वजह से ऐसा हुआ और आपको उसके बदले
क्या करना चाहिए था जिससे ऐसा न होता।

कोलकाता निवासी लेखक की कई मोटिवेशनल पुस्तकों,
बालकथा तथा लघुकथा संग्रह का प्रकाशन हो चुका है। व्यक्तित्व
विकास समेत अन्य विषयों पर पत्र-पत्रिकाओं में नियमित लेखन।





पंगु चढ़े गिरिवर गहन...

■ भगवती प्रसाद छिवेदी ■

आखिरकार मेरा आत्मविश्वास रँग लाया। उस पंगु पर्वतारोही ने गुरु द्रोण-सा मुझ एकलव्य का सही मार्गदर्शन किया था। दोस्तों की व्यंछ्या-भरी चुनौती ने कुछ कर दिखाने का ललकारा था। यह उसका ही नतीजा है कि मैं उन सबका टिंगू आज भारतीय प्रशासनिक सेवा में सेवारत हूँ।

इसको कहानी कहूँ अथवा आपबीती? कहानी में जहाँ कल्पना की पूरी छूट रहती है, वहीं आपबीती में कड़वे सच का सामना करना पड़ता है। आज मेरे नाम के साथ 'भा.प्र.से.' लिखा होना लोगों को हैरत में डाल देता है। इते-से टिंगू का छोटा कद और इतना बड़ा पद! ठीक छोटा मुँह और बड़ी बात की तरह। दरअसल मैं भी सामान्य छात्रों जैसा ही था। कुछ मायनों में तो उनसे भी गया बीता। मेरा अत्यधिक नाटा कद, पीठ

पर कूबड़ व निकला हुआ पेट देखकर लोग मेरी खिल्ली उड़ाते। कुछ तो मुझे तरह-तरह के जले-कटे संबोधन देने लगे थे। उसी दौरान पिताजी का तबादला कस्बे से महानगर में हो गया था। उन दिनों मैं नौर्मि का छात्र था। पिताजी केन्द्र सरकार के अधीन एक कार्यालय में बाबू थे। वहाँ उन्होंने मेरा नामांकन केन्द्रीय विद्यालय में करा दिया। पहले दिन मैंने कक्षा में ज्योंहि प्रवेश किया, सभी लड़के मुझे देखकर ठहाके लगाने लगे। मैं एक



खाली सीट की तरफ बढ़ ही रहा था कि पीछे से आवाज आयी - "अमां टिंगू! इधर आओ।"

इससे पहले कि मैं उधर देख पाता, कई लड़कों ने 'कूबड़ाराम', 'ऊँट मियाँ' जैसे संबोधनों से मुझे अलंकृत किया।

मैं क्समसा कर रह गया। मन तो हुआ कि एक ही साथ सबका गला दबा दूँ, मगर कुछ सोच, मन मसोसकर चुप ही रहा।

उधर, उन सबका जोर-जोर से मुझे चिढ़ाना जारी था...बदस्तूर। मैंने आपा खोकर चिल्लाते हुए कहा, "हाँ-हाँ, मैं टिंगू हूँ, कूबड़ाराम हूँ, ऊँट हूँ। तुम्हारा क्या जाता है!" मगर मेरा चिढ़ना और उन सबका चिढ़ाना तब तक जारी रहा, जब तक कि छुट्टी की घंटी नहीं बज गयी।

घर आकर पूरी रात मैं सुबक-सुबक कर रोता रहा। मैंने फैसला कर लिया कि मैं उस स्कूल में अब हरिगिज कदम नहीं रखूँगा। मेरे अंतर्मन में हीन भावना घर करने लगी थी। अपने शरीर से ही मुझे धृणा हो आयी थी। फिर तो अगले दिन से मैं घर से स्कूल के लिए निकलता जरूर, मगर पार्क, सिनेमा और सैर-सपाटे में पूरा समय गुजार देता तथा छुट्टी का समय होते ही बस्ता लटकाये चुपचाप घर लौट आता। रात में भी मैं झूठ-मूठ पढ़ने का ढोंग भर करता। फिर भी एक अनजान भय मुझे अंदर-ही-अंदर खाये जा रहा था कि कहीं पिताजी को सच्चाई पता चल जाएगी तो क्या होगा?

...और जिसका डर था, वही हुआ। पिताजी को असलियत का पता चल ही गया। एक रोज वे अचानक घूमते-धामते विद्यालय में जा पहुँचे थे। उस शाम को मैं रोज की तरह ठहलता हुआ घर लौटा तो आते ही उहोंने जिरह करनी शुरू कर दी। कुछ देर तक बहानेबाजी करते हुए मैं हकलाता रहा, मगर अंत में मुझे हकीकत उगलनी ही पड़ी। फिर मैं खुद ही फूट-फूटकर रो पड़ा था।

"बेटा, यह पहाड़ जैसा शरीर ही भला किस काम का, जिसमें कोई गुण न हो? मनुष्य अपनी प्रतिभा से विशिष्टता हासिल करता है, शरीर की खूबसूरती के आधार पर नहीं।" पिताजी ने समझाते हुए कहा था, "तुम्हारे हाथ-पाँव तो सही-सलामत हैं। विश्व के कई अपांगों ने तो अपनी विलक्षण प्रतिभा के दम पर ऐसे-ऐसे विशिष्ट कार्य किये हैं, जिन्हें लाख कोशिशों के बावजूद बहुतेरे ऐसे लोग कर दिखाने में असमर्थ रहे, जिनके हाथ-पैर पूरी तरह सलामत थे।"

फिर पिताजी ने आलमारी से एक पुस्तक निकाली और मुझे थमाते हुए कहा, "यह किताब ही तुम्हारा मार्गदर्शन करेगी।"

अपने कमरे में आकर मैंने दरवाजा बंद कर लिया और सांस रोककर उस किताब को पढ़ने में मशगूल हो गया। वह किताब उन दिव्यांगों की जीवनी पर आधारित थी, जिन्होंने पूरी दुनिया में अपना नाम रोशन किया था। उन सभी में जिस व्यक्तित्व ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया, वह था यूरोप का नॉर्मन क्राउचर। उसने बचपन में ही पर्वतारोहण को अपना लक्ष्य बना लिया था, मगर दुर्भाग्यवश वह एक भयंकर हादसे का शिकार हो गया और उसके दोनों पैर घुटनों के नीचे से काट दिये गये। नॉर्मन क्राउचर ने अस्पताल में पड़े-पड़े ही इंग्लैंड की रॉयल एयरफोर्स के लेगलेस पायलट कैप्टन डगलस बेडर की जीवनी 'रीच फॉर दि स्काई' पढ़कर प्रेरणा ग्रहण की और पर्वतारोहण के अपने लक्ष्य पर अटल रहा।

नॉर्मन क्राउचर जब अपने हाथों के सहरे पेड़ पर चढ़ने का अभ्यास करता तो दर्शक उसकी जमकर खिल्ली उड़ाते थे। कुछ लोगों का काम ही होता है दूसरे की हँसी उड़ाना, मगर नॉर्मन क्राउचर के मन में किसी प्रकार की हीन भावना अपनी जगह नहीं बना सकी थी। वह तो हँसकर ही सबकी व्यंग्य-भरी बातें टालता रहा था। ...और अंततः वह स्विट्जरलैंड के आइगर पर्वत के उस



सर्वोच्च शिखर पर जा पहुँचा, जो मृत्यु-शिखर के नाम से जाना जाता था।

अब मेरी आँखों के सामने उस पंगु पर्वतारोही नॉर्मन क्राउचर की आकृति बार-बार नाचने लगी थी। मुझे उससे बहुत प्रेरणा मिली और अगले दिन मैं समय से तैयार होकर स्कूल के लिए चल पड़ा। एक लंबे अंतराल के बाद मुझे फिर विद्यालय में देखकर छात्रों का समूह मेरी खिली उड़ाने पर आमादा हो गया, मगर मैं खीजने के बजाय सबसे मुस्कुराकर मिला और स्वाभाविक ढंग से उनसे बातें कीं। मेरे इस बदलाव पर वे अचरज से मुझे घूरते। अब मैंने स्कूल में अपना ध्यान केवल पढ़ाई पर केन्द्रित रखा और रातों में भी जमकर पढ़ाई शुरू कर दी। शरीर की बेडौल बनावट तथा कमजोरी मुझे थोड़ा-बहुत प्रभावित ज़रूर करती, मगर मैं निराश हरगिज नहीं होता था। ऐसे वक्त में मुझे वह पंगु पर्वतारोही नॉर्मन क्राउचर ही नजर आने लगता था, जो अपने हाथों से पैरों का काम ले, उतने बड़े पर्वत की चोटी पर जा पहुँचा था। नॉर्मन क्राउचर मेरे लिए प्रेरणास्रोत ही बन गया था।

स्नातक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद जब मैंने राज्य लोक सेवा आयोग की लिखित व मौखिक परीक्षा में सफलता हासिल की तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा था। घर से बाहर निकलते ही मेरे कुछ दोस्त दिखायी पड़े थे, जो उक्त इम्तिहान में अनुत्तीर्ण हो गये थे। तब रमेश ने उन सबसे फुसफुसाकर कहा था, "वह देखो! टिंगू तो बाजी मार ले गया। अब तो वह बीड़ीओं बन जाएगा।"

"अरे भई, इसमें कौन-सी बड़ी बात है! उसका चुनाव विकलांगों के आरक्षित कोटे में हुआ है। सामान्य लोगों के अनारक्षित वर्ग में होता तो एक उपलब्धि भी होती!" रजनीश का करारा व्यंग्य मुझे उद्वेलित करने लगा था।

घर लौटकर मैं रातभर रोता रहा था। "नहीं, यह कोई उपलब्धि नहीं है मेरे लिए। मेरा चुनाव विकलांग कोटे में हुआ है। मैं अब सामान्य कोटे में भी पास होकर दिखा दूँगा। ...और अब राज्य लोक सेवा आयोग में नहीं, यूपीएससी में...!" ...और फिर मैं हाथ आयी अच्छी-खासी रोजी को टुकरा कर नये सिरे से परीक्षा की तैयारी में जुट गया था। आखिरकार मेरा आत्मविश्वास रंग लाया। उस पंगु पर्वतारोही ने गुरु द्रोण-सा मुझ एकलव्य का सही मार्गदर्शन किया था। दोस्तों की व्यंग्य-भरी चुनौती ने कुछ कर दिखाने को ललकारा था। यह उसका ही नतीजा है कि मैं उन सबका टिंगू आज भारतीय प्रशासनिक सेवा में सेवारत हूँ।

मुझे चिढ़ाने वाले आज मेरे प्रशंसक हैं और वे अपने बच्चों को मेरी यानी टिंगू की कहानियाँ सुनाते हैं, मगर सच पूछिए तो टिंगू आज भी पंगु पर्वतारोही नॉर्मन क्राउचर की ही कहानी सुनाता है - "पंगु चढ़े गिरिवर गहन..."

पटना निवासी लेखक भारत सरकार के दूरसंचार विभाग से सेवानिवृत्ति के पश्चात् स्वतंत्र लेखन में संलग्न हैं। अब तक इनकी कई कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

अच्छा-बुरा जैसा भी है

■ ओमप्रकाश यती - ग्रेटर नोएडा ■



इसपे अब क्या सोचना, अच्छा-बुरा जैसा भी है। वक्तकट ही जाएगा, अच्छा-बुरा जैसा भी है।

क्या ज़रूरत आ पड़े कब, मत पड़ोसी से बिगाढ़ बस वही काम आएगा अच्छा-बुरा जैसा भी है।

गाँव तक जाना है तो चलना पड़ेगा इसपे ही बस यही है रास्ता, अच्छा-बुरा जैसा भी है।

चाहता हूँ लिख के जाऊँ पीढ़ियों के वास्ते ज़िंदगी का तज़रबा, अच्छा-बुरा जैसा भी है।

वोट पाने के लिए इसको निशाना मत बना देश है आखिर तेरा अच्छा-बुरा जैसा भी है।

हँस के चाहे रोके अब स्वीकार करना है इसे है नियति का फैसला, अच्छा-बुरा जैसा भी है।

कोशिशें करके निभाऊँगा मैं रिश्ता उसके साथ है तो भाई ही मेरा, अच्छा-बुरा जैसा भी है।



जय जय ज्योतिचरण जय जय महाश्रमण

ज्वेलर्स शॉप इंश्योरेंस



लाईफ इंश्योरेंस



केशलेस मेडीक्लेम



हमारे विशेषज्ञों द्वारा
अपनी पुरानी ज्वैलर्स ब्लॉक पॉलिसी
या मेडिक्लेम पॉलिसी की जाँच करवाएँ और
अनुकूल नियमों और शर्तों के साथ
मुफ्त कोटेशन प्राप्त करें।

नो रुम कैटगरी वाली
केशलेस मेडिक्लेम पॉलिसी लें
और इसे केवल 2600/- की
मामूली राशि से सुपर टॉप अप
पॉलिसी के साथ जोड़ें।

इंश्योरेंस टिप्प

अपने पुराने जीवन बीमा पॉलिसी
नंबर के साथ शेयर करें,
हम एक परिवार पोर्टफोलियों प्रदान करेंगे
और उसी के अनुसार बेहतरीन योजना
की सलाह देंगे।

यदि किसी इंश्योरेंस कंपनी ने आपके
मौजूदा क्लेम को खारिज कर दिया है
और आपको किसी सहायता या सलाह
की आवश्यकता होती है, तो हम
मदद के लिए तैयार हैं।

Legacy of
39
Years

25000
HAPPY
CUSTOMERS
INDIA & ABROAD

11000
Claims
Solved

300
National &
International
Awards

वर्ष 2020-21 में हमने 50+ करोड़ की वैल्यु के क्लेम सैटल किए हैं जिसमें पॉलीसी है
ज्वैलर्स ब्लॉक, लाईफ इन्शुरेन्स, मेडीक्लेम, फायर एवं बर्गलरी।



Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A



One Stop Insurance Solution in India !

हम देश विदेश में सभी ग्राहकों को ऑनलाईन सुविधा द्वारा सेवा देते हैं।



Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

Contact Details :

A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th Floor, Dr. A. Merchant Road Kabutar Khana, Near Kalbadevi,
Marine Lines (East) Mumbai- 400002 • Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com | Inter Com : 5050
LIC Department : 7045850013 | 7045850014 • Jewellers Department : 7045850015 | 9167860661 | 7045850013
Mediclaim Department : 7045850016 | 7047850017 | 9167860665 | 7045850013 • Motor Department : 9167860661
Claim Support Team : 7045850012 | 9167860663 • Landline : 022 - 46090022 | 46090023 | 46090024 | 40062222





परिचय

“शर्मसार होती मानवता के गुनहगार कौन?”

नवम्बर अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

युद्ध मानवाधिकारों का उल्लंघन

आज के इस वैश्विक युग में युद्ध का कोई समय और अवसर नहीं होता। पता नहीं, कब कौन-सा देश युद्ध छेड़ बैठे? अधिकतर देश आज अपने सिर पर युद्ध के बादल मंडराते हुए देखते हैं।

युद्ध की विभीषिका अत्यंत भयावह होती है। युद्ध से केवल युद्धरत देश की सेनाओं का ही नहीं, अपितु संपूर्ण मानव जाति का नुकसान होता है। निर्दोष व्यक्ति युद्ध में मारे जाते हैं, उनकी संपत्ति नष्ट हो जाती है। युद्ध मानवाधिकारों का खुला उल्लंघन है।

सामान्यतः युद्ध का मुख्य कारण किसी देश की क्षेत्रीय विस्तार की आकांक्षा तथा शक्ति का प्रदर्शन होता है। कई बार राष्ट्राध्यक्षों की सनक भी युद्ध का कारण बन जाती है। वहीं, विश्व के पाँच शक्तिशाली देशों का वीटो अधिकार भी काफी हद तक युद्ध के लिए जिम्मेदार है। ये देश सुलह एवं समझौते में बाधक बन जाते हैं। हेग स्थित अंतरराष्ट्रीय न्यायालय भी विवश हो जाता है और वह युद्ध विराम नहीं करा पाता।

युद्ध की विभीषिका को रोकने के लिए आवश्यक है -
वीटो का अधिकार सीमित हो।

अंतरराष्ट्रीय न्यायालय को युद्ध विराम की शक्तियां मिलें।
युद्ध से पूर्व सुलह एवं समझौते के प्रयास किये जाएं।
देशों की सीमाएं सुनिश्चित कर दी जाएं।

-डॉ. बसन्ती लाल बाबेल, लावासरदारगढ़

भगवान महावीर के मार्ग पर चलना होगा

युद्ध आज केवल दो देशों के बीच न होकर पूरी मानव सभ्यता को लील रहा है। इन सबके बीच स्वार्थ भरी राजनीति ने आग में धी डालने का काम किया है। ऐसे में मानवता की चिंता कहीं खो-सी गयी है। ऐसे में भगवान महावीर के दर्शन और उनके बताये रास्ते पर चलकर ही मानवता को बचाया जा सकता है। अपरिग्रह और सहिष्णुता की नीति को अपनाकर तथा सन्मार्ग पर चलकर ही मानवता की रक्षा संभव है। अहिंसा के मार्ग पर चले

बिना यह लक्ष्य हासिल नहीं हो सकता। इसके लिए शांतिपूर्ण सह अस्तित्व की अवधारणा और लोभ-लालच से परे जीवनशैली अपनानी होगी। व्यवहार में हर किसी की हिंसा से बचना होगा।

-इंद्रजीत कौशिक, बीकानेर

आंसू मौन हो गये... यह कैसी जंग है

कैसी है यह त्रासदी, जिंदगी दम तोड़ रही है
कैसी है यह बेबसी, आंसू थमने का नाम नहीं लेते
लोग हो गये हैं बेघर, बच्चे अनाथ हो गये
जिसने देखी नहीं जिंदगी, जो नहीं समझता कुछ भी
रह गया बिल्कुल अकेला, खोज रहा माँ का चेहरा
पल भर में हो गया अनाथ, मृत्यु का कैसा तांडव है
कई बेघर, कई धायल, कुछ अधमरे से
धरती कह रही है और न समा सकूँगी मैं
इन बच्चों, औरतों और जवानों को
आंसू मौन हो गये, बहने से इनकार कर दिया।
सोचने का वक्त आ गया है,
कुछ करने का, अणुव्रत अपनाने का
विश्व को शांति का, संदेश देने का
नैतिकता का पाठ पढ़ाने का।

-प्रदीप सिंधी, कोलकाता

शांति, प्रेम, दया और करुणा से होगी मानवता की रक्षा

युद्ध से रक्तपात के अलावा कुछ भी हासिल नहीं होता है। नेपोलियन ने कहा था, युद्ध असभ्य लोगों का व्यापार है। सिकंदर भी तलवार के बल पर दुनिया को जीतने निकला था, लेकिन उसे भी अंत में सब कुछ छोड़कर खाली हाथ कूद करना पड़ा। कलिंग युद्ध के खून-खराबे से आहत होकर सम्राट अशोक का भी हृदय परिवर्तन हुआ और वे भी शांति और प्रेम की शरण में चले गये। आज समूचा विश्व तृतीय विश्व युद्ध के कगार पर खड़ा है। कई देशों



में घोषित और अघोषित समर का एलान हो चुका है और इसका खिमियाजा कई निर्दीश लोगों को चुकाना पड़ रहा है। इसके लिए वे हुक्मरान दोषी हैं जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिए कई अनचाही महत्वाकांक्षाएं पाल रखी हैं जो हमें युद्ध के कगार पर धकेल रही हैं। मानवता की रक्षा के लिए युद्ध नहीं, शांति चाहिए, नफरत का कारोबार नहीं, प्रेम चाहिए और दिलों में दया-करुणा का भाव चाहिए।

-नलिन खोईवाल, इंडौर

स्वार्थ से ऊपर उठकर दुनिया को बेहतर बनाएं

सब कुछ पा लेने के बाद भी और अधिक पा लेने की लालसा में हम दिन-प्रतिदिन स्वार्थी और निरकुश होते चले जा रहे हैं। पहले युद्ध दो सेनाओं के बीच लड़ा जाता था। उसकी बागडोर निचले सेनानियों से होते हुए राजा-महाराजा तक के हथों में रहती थी। तब युद्ध के अपने कुछ नियम भी होते थे। उनमें रिहायशी इलाकों और लोगों पर गाज गिरने की सम्भावना न के बराबर होती थी, लेकिन अब रिहायशी इलाकों तक को नहीं बख्खा जाता। मानवीय मूल्यों को प्रायः दरकिनार कर दिया जाता है। अहंकार, सनक और स्वार्थवश कोई यह नहीं सोचता कि समस्याओं का हल बातचीत के जरिये निकालने पर जोर देना चाहिए। युद्ध सदा अंतिम विकल्प होना चाहिए। इस दुनिया ने हमारे पूर्वजों के प्रयासों से सदियों में तपकर एक बेहतर आकार लिया है। क्षणिक पागलपन, सनक और लालच में इसे नष्ट करने का अधिकार किसी को नहीं है, बल्कि खुद और पूरी मानवता को शर्मसार होने से बचाकर, अपने-अपने स्वार्थ और अहंकार त्याग कर दुनिया को और अधिक बेहतर और रहने लायक बनाने के प्रयास सभी को मिल-जुल कर करना चाहिए।

किशोर श्रीवास्तव, गौतम बुद्ध नगर

अब भी नहीं चेते तो भयावह होगी स्थिति

आज मानव ने सहअस्तित्व तथा वसुधैव कुटुंबकम् के मूलमंत्र को भुला दिया है। जरा-जरा सी बातों पर क्रोधित होना, तलवारें खींच लेना... उसे मानव से दानव की श्रेणी में ला रहे हैं। जब यही दानवता दो देशों के मध्य होते युद्ध में दिखायी देती है तो मन कराह उठता है। जिसने युद्ध की विभीषिका को सहा है, वह समझ सकता है कि बेघर होना, अपनों को खोना, मृत्यु से भी अधिक तकलीफदेह होता है, लेकिन ताकत तथा अहंकार के नशे में डूबे देशों के राजप्रमुखों को युद्ध की विभीषिका झेल रहे मासूम लोगों की दुःख, तकलीफें, क्रन्दन दिखायी नहीं देता। एक युद्ध समाप्त नहीं होता, दूसरा शुरू हो जाता है। किसी को चिंता नहीं है। वे यह भी नहीं सोचते कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं, वरन् पर्यावरण को प्रदूषित करने के साथ-साथ मानवीय समस्याओं को बढ़ाने, उलझाने वाला होता है। अगर अब भी नहीं चेते तो अंततः मानवता के लिए भयावह होती स्थिति से निकलना असंभव ही होगा।

-सुधा आदेश, लखनऊ

भारत करेगा युद्धविहीन विश्व की कल्पना साकार

भारत ने सदैव सह अस्तित्व की भावना का सम्मान किया है और इस राह पर चलता रहा है। भगवान महावीर और बुद्ध ने शांति, सामंजस्य तथा मानवीय मूल्यों के साथ जीओ और जीने दो का संदेश दिया। प्राचीन काल से ही सोने की चिड़िया रहा भारत ज्ञान का भंडार अर्जित करके दुनिया को शांति, अहिंसा का पाठ पढ़ा चुका है। मानवता की भावना से परिपूर्ण और युद्धविहीन विश्व की कल्पना को भारत ही साकार कर सकता है। वर्तमान में भी पूरा संसार भारत की ओर आशा भरी नजर से देख रहा है। अतः भारत ही आने वाले समय में विश्व को शान्ति और युद्धरहित समाज की संरचना में योगदान कर सकता है।

-नवीन नाहटा, लाडनूं

आगामी अंक का विषय

परिचर्चा

मेरे जीवन में अणुव्रत की जीवनशैली का प्रभाव

अणुव्रत अर्थात् संयम आधारित जीवनशैली। जरा अंदर झाँकिए और देखिए कि संयम का आपके जीवन में, विशेषतः वाणी में, आहार में, व्यवहार में, पहनाव में और विचार में कितना स्थान है? अणुव्रत के दर्शन ने आपके जीवन को कितना प्रभावित किया है? इस सन्दर्भ में आप अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि क्या मानते हैं? अपने व्यक्तिगत जीवन में आप किस तरह का परिवर्तन पाते हैं? सामाजिक स्तर पर भी क्या आप स्वयं को बेहतर स्थिति में पाते हैं?

'अणुव्रत' पत्रिका के मार्च - अप्रैल 2024 अणुव्रत अमृत विशेषांक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा हेतु इन्हीं सब मुद्दों पर आमंत्रित हैं आपके विचार। रचनात्मक, प्रयोगधर्मी और अनुभवजन्य विचारों को प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाएगी। अपने विचार हमें अधिकतम 200 शब्दों में 31 जनवरी 2024 तक 9116634512 पर व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें।





अणुव्रत आंदोलन

चुनाव शुद्धि अभियान

सही चयन राष्ट्र का सही निर्माण



*I Vote
For A Strong
India*

मतदाता ध्यान दें...

- भय और प्रलोभन में मतदान न करें।
- मद्य एवं मादक द्रव्यों का प्रतिकार करें।
- चरित्र एवं गुणों के आधार पर मतदान का निर्णय करें।
- जाति एवं सम्प्रदाय के आधार पर मतदान न करें।
- अपराधी एवं भ्रष्टाचार में लिस उम्मीदवार को मतदान न करें।
- हिंसात्मक प्रवृत्तियों में लिस उम्मीदवार को मतदान न करें।
- अवैध मतदान न करें।

आपके अमूल्य वोट का अधिकारी कौन ?

- जो ईमानदार हो
- जो चरित्रवान हो
- जो सेवाभावी हो
- जो कार्यनिपुण हो
- जो नशामुक्त हो
- जो स्वच्छ छवियुक्त हो
- जो राष्ट्रहित व लोकहित को सर्वोपरि मानता हो
- जो जाति-सम्प्रदाय से बंधा हुआ न हो

मतदान अवश्य करें,
राष्ट्रीय कर्तव्य का
निर्वहन करें



अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती

राष्ट्रहित में प्रसारित



भारती सोसायटी की ओर से समाजी अभिशाप से मुक्त कराने के लिए इन के तहत 19 दिसम्बर को बॉम्बे मातृश्री सभागार में 'एलीवेट : हाई' कार्यक्रम का आयोजन किया

मणुक्रत अनुशास्ता आचार्य श्री
पाथेय प्रदान करते हुए कहा दि-
दुःख भी है। दुःख से आदमी को
मकती है। जीवन में कष्ट, कठिनाइ-
लता है, कठिनाइयों से पार पाने का
और इससे वह मजबूत बनता है।
क, कभी मानसिक दःख होता है।

बीमा निगम के चेयरमैन द्वारा श्री महाश्रमण जैसे विदेशी ने तो समाज नशे में बहुत हृदय रोग बिल्कुल नहीं महाश्रमण ने इस बात कि परिवार अपने है, परिजन अपने बच्चों से बचाव हो सकता है। यह हो तो नशामुक्तता रह सकती।



मुम्बई के ज्वाइंट कमिशनर ऑफ पुलिस सत्यनारायण चौधरी ने कहा कि ड्रग्स फ्री मुम्बई का अभियान महाराष्ट्र सरकार व पुलिस भी चला रही है, किन्तु आज यह जो कार्यक्रम आजारी थी प्राथमिकता की मनिशि में शारोजित हो रहा है। यह मामूली दृष्टि से नष्ट हो रहा है। धर्म, अदा, गुण, वेदवाचों, लोकसंस्कृत में सभी उत्तराधिकार फैल रहा है। मुम्बई पुलिस ने 2012 रेडप्रिंट स्कूलों ने इसके खिलाफ जागरूकता लाने का प्रयास किया, किन्तु इस

अप्रत्याक्ष समाज

अणुप्रति समावार

बाएमसी के म्यूनिसिपल कमिश्नर डा. इकबाल सिंह चहल ने कहा कि मुंबई को ड्रग्स एडिक्शन से मुक्त कराने की दिशा में बीएमसी काम कर रही है। अपुव्रत विश्वासरती के साथ जुड़कर हम इस मुहिम को और गति हैं। उन्होंने कहा कि माता-पिता बच्चों के



लत को समाप्त करने का हम सल
सकेंगे।

प्रसिद्ध अभिनेता सुनील शर्मा
डीन व न्यूरो फिजिशियन डॉ.
एमएमआरडीए के कमिशनर संजय
भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक
डॉ. अभिजीतकुमार, मुनि जागृतव
गोठी ने भी विचार व्यक्त किये।
मुनिश्री कुमारश्रमण ने किया।

A black and white photograph showing a group of individuals, likely healthcare workers, wearing white lab coats. They are holding up small framed portraits of babies, which appear to be part of a 'Baby Frame' program. The background shows shelves with various items, possibly in a hospital or clinic setting.

ELEVATE

EXPERIENCE THE REAL HIGH

SAY YES TO LIFE - NO TO DRUGS

In The Auspicious presence of AnuvratAnushasta

Acharya Shri Mahashraman Ji

Chief Guest - Shri B K Taparia
Chairman- Bombay Hospital

Special Guest

Shri Vivek Phansalkar, IPS
Commissioner of Police - Mumbai

Giddhartha Mohanty
Chairman - LIT India

19 December, 2023 | 9.30 AM to 12 PM
Bombay Hospital, Mumbai

Acharya Shri Mahashraman Ji



जीवन संयमित हो, नशामुक्तता रहे : आचार्य श्री महाश्रमण

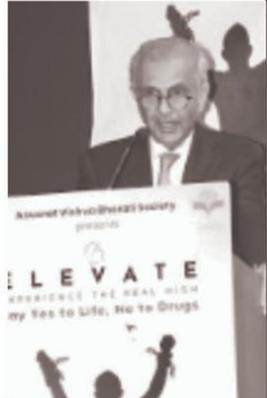
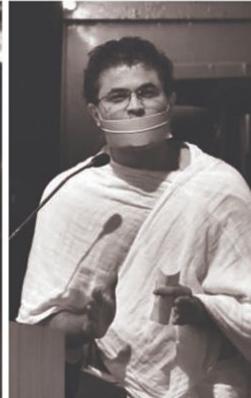
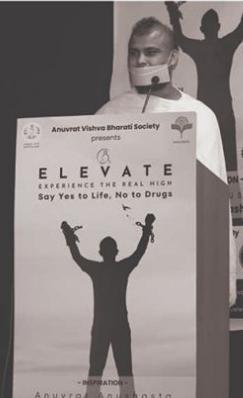
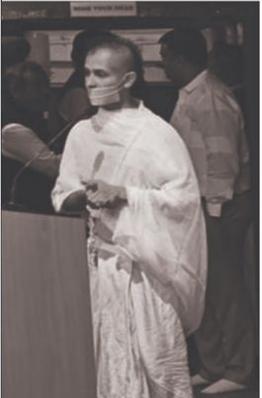
एलीवेट कार्यक्रम में आये प्रशासनिक अधिकारी, डॉक्टर्स व गणमान्य व्यक्तित्व

मुंबई। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से समाज को ड्रग्स के व्यसन रूपी अभिशाप से मुक्त कराने के लिए चलाये जा रहे अभियान के तहत 19 दिसम्बर को बॉम्बे हॉस्पिटल के बिरला मातृश्री सभागार में 'एलीवेट : एक्सपीरिएंस द रियल हाई' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि दुनिया में सुख है तो दुःख भी है। दुःख से आदमी को अच्छी प्रेरणा प्राप्त हो सकती है। जीवन में कष्ट, कठिनाई आती है तो आदमी सम्भलता है, कठिनाइयों से पार पाने का प्रयास कर सकता है और इससे वह मजबूत बनता है। जीवन में कभी शारीरिक, कभी मानसिक दुःख होता है। सभी प्रकार के दुःखों के मूल में राग-द्रेष्ट ही होते हैं। कर्मों के बीज राग-द्रेष्ट का उन्मूलन कर दिया जाये तो आदमी दुःखों से मुक्त हो सकता है। शारीरिक कष्ट को एक बार तो डॉक्टर दवा आदि के द्वारा ठीक भी कर दे, किन्तु मानसिक कष्ट

को दूर कर पाना उनके वश की बात नहीं होती। राग-द्रेष को अध्यात्म के द्वारा दूर किया जा सकता है। इसके नाश के लिए संवर्धनिजरा की साधना करने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यप्रवर ने कहा कि ईमानदारी आध्यात्मिक चिकित्सा का केन्द्र है। आदमी को ईमानदारी खनने का प्रयास करना चाहिए। आदमी किसी भी प्राणी को दुःख नहीं दे। अहिंसा का पूर्णतया पालन करने का प्रयास हो। आदमी को अपने गुस्से पर नियंत्रण खनने का प्रयास करना चाहिए। मानव जीवन में संयम भी होना चाहिए। जीवन संयमित हो, अहिंसा की चेतना हो, ईमानदारी हो। जीवन में नशामुक्तता रहे। इस अवसर पर मुख्यमुनि महावीरकुमार, अणुव्रत विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि मननकुमार, मुनि डॉ. अभिजीतकुमार, मुनि जागृतकुमार व अन्य विशिष्ट संतों की महत्वपूर्ण उपस्थिति रही।

भारतीय जीवन बीमा निगम के चेयरमैन सिद्धार्थ मोहंती ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण जैसे महान संत से आध्यात्मिक

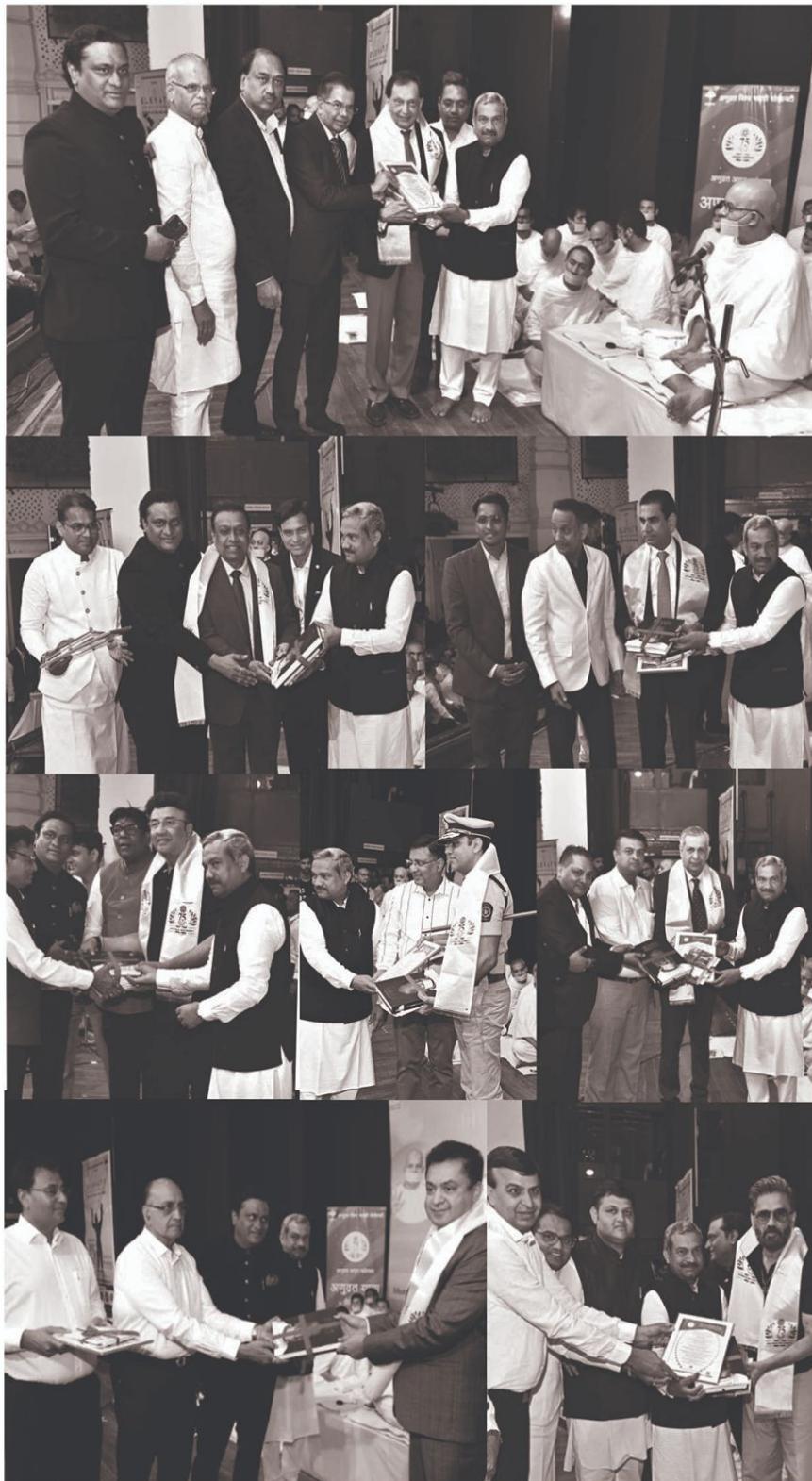


प्रेरणा मिले तो समाज नशे से मुक्त हो जाएगा। ब्रीच कैंडी हॉस्पिटल के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. फारूख ई. उदवाड़िया ने आचार्य श्री महाश्रमण के विचारों से पूर्णतया सहमति जताते हुए कहा कि परिवार अच्छे से ध्यान रखे, परस्पर अच्छा संबंध रहे, परिजन अपने बच्चों का ध्यान रखें तो बच्चों का नशे से बचाव हो सकता है। जीवन में आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हो तो नशामुक्तता रह सकती है। मुम्बई के ज्वाइंट कमिशनर ऑफ पुलिस सत्यनारायण चौधरी ने कहा कि इग्स फ्री मुम्बई का अभियान महाराष्ट्र सरकार व पुलिस भी चला रही है, किन्तु आज यह जो कार्यक्रम आचार्य श्री महाश्रमण की सन्त्रिधि में आयोजित हो रहा है, यह महत्वपूर्ण है। इग्स का नशा जाति, धर्म, अमीर, गरीब देखकर नहीं, बल्कि सभी में समान रूप फैल रहा है। मुम्बई पुलिस ने 2000 से ज्यादा स्कूलों में इसके खिलाफ जागरूकता लाने का प्रयास किया, किन्तु इस संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण आचार्यश्री का मंगल आशीर्वाद है। आपकी प्रेरणा लोगों के मन तक पहुँचती है, जो लोगों को इग्समुक्त कराने में सार्थक सिद्ध हो सकती है।

बीएमसी के म्यूनिसिपल कमिशनर डॉ. इकबाल सिंह चहल ने कहा कि मुंबई को इग्स एडिक्शन से मुक्त कराने की दिशा में बीएमसी काम कर रही है। अणुव्रत विश्व भारती के साथ जुड़कर हम इस मुहिम को और गति दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि माता-पिता बच्चों के लिए असली रोल मॉडल होते हैं। माता-पिता यदि अपने बच्चों के लिए स्वयं को रोल मॉडल के रूप में प्रस्तुत कर सकें तो इग्स एडिक्शन की समस्या का समाधान काफी हृद तक हो सकता है।

प्रसिद्ध संगीतकार अनु मलिक ने कहा कि आज आचार्यश्री की बात दिल पर लगी। मैंने अपने जीवन में सच बोलने के कारण मार खायी है, फिर भी सच ही बोलता हूँ। थोड़ा गुस्सा जरूर आता है, लेकिन आचार्यश्री की प्रेरणा से गुस्से को दूर करने का प्रयास करूँगा। मलिक ने इग्स निवारण के संदर्भ में आचार्यश्री से प्रेरणा लेकर तत्काल रचित एक गीत की कुछ पंक्तियां भी सुनायीं।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि अणुव्रत यात्रा प्रणेता आचार्य श्री महाश्रमण की पावन सन्त्रिधि में आयोजित इस कार्यक्रम में मुंबई क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्तियों का आना तथा इस संबंध में अपने विचार रखना महत्वपूर्ण है कि इग्स की विभीषिका किस प्रकार भावी पीढ़ी को लील रही है। मैं उम्मीद करता हूँ कि आपका यह साथ इस कार्यक्रम तक ही सीमित न रहे। भविष्य में भी आप इस कार्यक्रम से जुड़े रहेंगे तो न





केवल मुंबई और भारत, बल्कि पूरे विश्व तक इस गूँज को पहुँचा कर नशे की लत को समाप्त करने का हम सलक्ष्य प्रयास कर सकेंगे।

प्रसिद्ध अभिनेता सुनील शेट्टी, बॉम्बे हॉस्पिटल के डीन व न्यूरो फिजिशियन डॉ. एस. वी. खाडीकर, एमएमआरडीए के कमिश्नर संजय मुखर्जी, एचडीएफसी के सीईओ और एमडी आदित्य पुरी, जेएनपीटी के चेयरमैन संजय शेट्टी, वेलस्पन इंडिया के चेयरमैन बी. के. गोयनका, लक्ष्मी ऑर्गेनिक के चेयरमैन रवि गोयनका, शुभकाम वेन्चर्स के चेयरमैन राकेश कठोतिया, मैकडोनल्ड इंडिया के चेयरमैन अमित जटिया, सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट और गवर्नमेंट सीनियर काउंसेल मुंबई हाईकोर्ट आर. के. शर्मा, हलीमा अजीज यूनिवर्सिटी के चांसलर डॉ. सैयद अहमद इकबाल, अणुविभा के ट्रस्टी सुमतिचंद गोठी ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनिश्री कुमारश्रमण ने किया। इससे पहले बॉम्बे हॉस्पिटल के चेयरमैन बीके तापड़िया ने कहा कि यह हम सभी का सौभाग्य है कि

आचार्य श्री महाश्रमण के कल्याणकारी चरण यहाँ पढ़े हैं। आप हमारे डॉक्टरों को ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें कि हम आगे भी जनता की सेवा करते रहें। बॉम्बे हॉस्पिटल के सीनियर फिजिशियन डॉ. गौतम भंसाली ने अतिथियों का स्वागत किया। कस्टम कमिश्नर अशोक कोठारी ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में एलीवेट से जुड़े वीडियो का प्रदर्शन भी किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी तथा अणुव्रत समिति मुंबई के अनेक पदाधिकारी और सदस्य उपस्थित थे।

अणुव्रत समिति मुंबई, आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति मुंबई तथा तेरापंथ समाज दक्षिण मुंबई का कार्यक्रम के आयोजन में महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। उल्लेखनीय है कि डॉ. गौतम भंसाली और अशोक कोठारी के संयोजकत्व और ललित बी. छाजेड़, मुदित जी. भंसाली, आनंद निरोला के सह संयोजकत्व में एलीवेट कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। मास्टर ट्रेनर चिराग पामेचा का भी कार्यक्रम में सक्रिय सहयोग प्राप्त हो रहा है।





आचार्य महाश्रमण ने दिलाया ड्रग्स का सेवन न करने का संकल्प अणुविभा के सेमिनार में जुटे देशभर के प्रसिद्ध बुद्धिजीवी युवाओं को ड्रग्स के अभिशाप से मुक्त कराने को कमर कसी

मुंबई। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) के तत्त्वावधान में संचालित नशामुक्ति अभियान "एलीवेट : एक्सपीरियंस द रियल हाई" के अन्तर्गत 11 दिसम्बर को एस.एन.डी.टी. वीमेंस यूनिवर्सिटी, सांताकूज वेस्ट में एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में आयोजित इस सेमिनार में देशभर के विशिष्ट बुद्धिजीवी शामिल हुए, और इस बात पर चिंतन-मनन किया कि कैसे हमारी युवाएँ ड्रग्स के चंगुल से बचाया जासके।

सेमिनार में आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि अज्ञान और मोह के कारण व्यक्ति गलत कार्य कर सकता है। अज्ञान एक बड़ा अभिशाप है। अज्ञान का पर्दा हट जाये और बात समझ में आ जाये तो व्यक्ति गलत आचरण को छोड़ भी सकता है। उन्होंने कहा कि पुलिस, प्रशासन, चिकित्सक समेत समाज के विभिन्न महत्वपूर्ण वर्गों का साथ मिले तो इस कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के साथ ही युवाओं को ड्रग्स के व्यसन से मुक्त कराया जा सकता है।

आचार्य प्रवर ने कहा कि अहिंसा, संयम और तप उत्कृष्ट मंगल हैं। इन्हें सभी धर्मों ने स्वीकार किया है। गृहस्थों के लिए अणुव्रत अर्थात् छोटे-छोटे नियमों का प्रावधान किया गया है। मसलन, पूर्णतया अहिंसा का पालन न कर सको तो निरपराध जीवों की हत्या मत करो। नैतिकता की राह पर चलते हुए आपस में सद्व्यवहार के साथ रहो। नशामुक्त रहो, नशीली चीजों के सेवन से बचने का प्रयास करो। उन्होंने कहा कि व्यसन का अर्थ है जिसके बिना आदमी रह न सके। पहले आदमी ड्रग्स का सेवन करता है, बाद में ड्रग्स आदमी को खाने लग जाती है। यह बात शराब, गुटखा तथा अन्य नशीली वस्तुओं के साथ भी लागू होती है।

अणुव्रत अनुशास्ता ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन शुरू होने का 75वां वर्ष चल रहा है। इसे अणुव्रत अमृत वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस दौरान अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं तथा अनेक कार्यक्रम निर्धारित हैं। आचार्य श्री ने सेमिनार में उपस्थित एनसीसी कैडेट्स को जीवन भर के लिए या फिर वर्ष 2028 तक के लिए ड्रग्स का सेवन नहीं करने तथा दूसरों को भी इस विषय में सावधानता करने का संकल्प दिलाया। पांडाल में बड़ी संख्या में उपस्थित अन्य लोगों ने भी आचार्य प्रवर की पावन सन्निधि में यह संकल्प लिया। साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयश ने कहा कि व्यक्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि वह अच्छा इंसान बने। अणुव्रत का नशामुक्ति का कार्यक्रम एलीवेट अच्छा इंसान बनाने का ही उपक्रम है।

"एलीवेट : एक्सपीरियंस द रियल हाई" कार्यक्रम के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री डॉ. अभिजीत कुमार ने कहा कि आज का यह कार्यक्रम सामाजिक और आध्यात्मिक समन्वय का एक विलक्षण अवसर है। एलीवेट कार्यक्रम भौतिक ऊंचाइयों के बजाय आत्मिक ऊंचाइयों को हासिल करने का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। आचार्य श्री महाश्रमण जैसे महान संत का आशीर्वाद इसकी ताकत है।

प्रसिद्ध नेफ्रोलॉजिस्ट डॉ. विश्वनाथ बिल्ला ने मानव शरीर और मस्तिष्क की संरचना पर प्रकाश डालते हुए बताया कि प्रसन्नता और दर्द के अनुभव का एक चक्र हमारे जीवन में चलता है। डोपामिन नामक रसायन इसका कारण बनता है। आधुनिक जीवनशैली ने मानवीय संरचना की कठोड़ी वर्षों में विकसित हुई कार्यपद्धति को प्रभावित किया है और नशा इसी प्रभाव का



नकारात्मक परिणाम है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति में यह क्षमता है कि वह नकारात्मक प्रभावों से अपने आप को बचाकर सकारात्मक प्रभावों को जीवन में शामिल करे। यही ड्रग्स का शिकार बनने से हमें बचा सकता है।

मनोविज्ञानी और ट्रांसफॉर्मेशनल कोच डॉ. अजहर हकीम ने कहा कि भारत आज एक युवा देश है। हमारी 30 प्रतिशत आबादी तीस वर्ष से कम आयुर्वर्ग के युवाओं की है। यही उम्र है जब जीवन की दिशा निर्धारित होती है। यह एक तथ्य है कि यदि 25 वर्ष तक युवा नशे से बचा रह सके तो उसके जीवन भर नशामुक्त रहने की पूरी संभावना रहती है। इस हेतु स्कूल व कॉलेज के बच्चों को एक्टिविटी, कम्पनी, एक्सरसाइज और स्पिरिचुअलिटी में प्रशिक्षित किया जा सके तो उसके जीवन का श्रेष्ठनिर्माण हो सकता है।

मुख्य अतिथि नेशनल कैडेट कोर (एनसीसी) के एडिशनल डायरेक्टर जनरल मेजर जनरल योगेन्द्र सिंह ने कहा कि नशा अमीर और गरीब सभी को बर्बाद कर रहा है। ड्रग्स ऐसा कैंसर है जो व्यक्तिगत स्तर पर तो नुकसान कर ही रहा है, दीमक बनकर समाज को भी खोखला बना रहा है। हमारी भावी पीढ़ी को इससे बचाने के लिए इस पर फोकस करते हुए समन्वित तरीके से काम करना होगा। सेना और एनसीसी में अनुशासन की प्रमुखता होती है। यहाँ बड़ी संख्या में एनसीसी कैडेट्स भी उपस्थित हैं। हम सब इस ड्रग्स के खिलाफ इस अभियान से जुड़कर बेहतर समाज के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएंगे।

एस.एन.डी.टी. वीमेंस यूनिवर्सिटी के डॉ. आशीष पनत ने कहा कि हमारे लिए सम्मान की बात है कि आचार्य श्री के चरण हमारे संस्थान में पढ़े। हमारा संस्थान एलीवेट अभियान से जुड़ चुका है और मैं विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि हम सब मिलकर इस अभियान को सफल बनाएंगे। अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने समाज को मादक पदार्थों के नुकसान से बचाव



के लिए चलाये जा रहे एलीवेट कार्यक्रम को अणुव्रत अनुशास्ता द्वारा निरंतर प्राप्त हो रहे आशीर्वाद के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और विश्वास व्यक्त किया कि एनसीसी, मुंबई पुलिस और अन्य संस्थानों के सहयोग से देश निर्माण के इस मिशन में हम अवश्य सफल होंगे। अणुविभा के न्यासी सुमितिचंद गोठी ने इस अभियान को भारत से बाहर भी ले जाने का संकल्प व्यक्त किया। सह संयोजक मुदित भंसाली ने ऑडियो विजुअल प्रस्तुति के माध्यम से एलीवेट कार्यक्रम में अब तक हुई प्रगति के बारे में जानकारी दी। प्रसिद्ध गायिका अनुराधा पौडवाल ने 'णमोकार मंत्र है न्यारा' के गायन से वातावरण को आध्यात्मिक बना दिया।

इससे पहले "एलीवेट : एक्सपीरियंस द रियल हाई" कार्यक्रम के संयोजक और कमिशनर ऑफ कस्टम मुंबई अशोक कुमार कोठारी ने सेमिनार के विषय का प्रवर्तन करते हुए अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि इस अभियान को सफल बनाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को इससे जोड़ना और इस कार्यक्रम को प्रभावी बनाना हमारी प्राथमिकता है।





सुधार के लिए जरूरी है हृदय परिवर्तन : आचार्य महाश्रमण अणुविभा के सेमिनार में पहुँचे महाराष्ट्र के संस्कृति मंत्री

मुंबई। सद्ग्रावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति के संदेश के साथ समाज में सदाचार का सौरभ फैलाने वाले अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के मंगल सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा ड्रग्स के खिलाफ अभियान "एलीवेटः एक्सपीरियंस द रियल हाई" नेशनल सेमिनार का आयोजन 4 नवम्बर को नंदनवन परिसर में किया गया।

इस अवसर पर आचार्य श्री ने कहा कि छोटा बच्चा ज्ञान के अभाव में आग में भी हाथ डाल देता है, क्योंकि उसे मालूम नहीं होता कि आग में हाथ डालने से हाथ जल जाता है। उसी प्रकार, जिस व्यक्ति में राग-द्वेष के संकार हैं, वह जान लेने के बाद भी मोहनीय कर्म के प्रभाव से न चाहते हुए भी उस कार्य को कर लेता है। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन प्रारम्भ किया और आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने इसे गति प्रदान की। आज अणुव्रत विश्व भारती संस्था अणुव्रत के संदेशों को फैलाने का कार्य कर रही है।

आचार्य प्रवर ने कहा कि ड्रग्स को नियंत्रित करने के लिए त्रिआयामी कार्यों की अपेक्षा है। विख्यात डॉक्टर इस अभियान से जुड़ें व संत तथा सरकार संयुक्त रूप से ड्रग्स के नुकसानों की ओर सबका ध्यान दिलाएं, संयुक्त घोषणा करें तथा इसके दुष्परिणामों की पूरी जानकारी देकर जनता को जागरूक करें। संतों का काम है हृदय परिवर्तन, सरकार का काम है दंड और डॉक्टर का काम है रोग मुक्ति। इस दिशा में बदलाव लाने हेतु पुरुषार्थ होता रहे। अणुव्रत सब धर्मों से ऊपर उठकर बात करता है। इंसान पहले इंसान, फिर हिंदू या मुसलमान। समाज सुधार की दिशा में कार्य हो ताकि मानव दुराचरण से बचकर जीवन को सुफल बना सके। महाराष्ट्र सरकार के

संस्कृति मंत्री सुधीर मुंगटीवार ने अपने सम्बोधन में कहा कि नशामुक्त भारत बनाने के एक बहुत ही पवित्र उद्देश्य को लेकर आज हम सब यहाँ पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में एकत्रित हुए हैं। मैं आचार्यप्रवर को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि महाराष्ट्र सरकार पूरी शक्ति के साथ इस मिशन के साथ है।

सुप्रसिद्ध गीतकार मनोज मुंतशिर ने कहा कि सभी नौजवान यह संकल्प करें कि न खुद वे ड्रग्स लेंगे और न किसी को लेने देंगे, फिर भारत को नंबर वन पर आने से कोई नहीं रोक सकता। कार्यक्रम में न्यूरोलॉजिस्ट एस. वी. खाडिलकर, पुलिस कमिशनर मधुकर पांडे, एफ.आई.एल. संजय कुमार सिंह, आई.आर.आई. सचिन जैन आदि गणमान्य लोगों ने भावाभिव्यक्ति दी।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर, मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा, न्यासी सुमति गोठी, डॉ. गौतम भंसाली, शांतिलाल कवाड़, शांतिलाल शांत, सी. सी. डांगी, एलीवेट के संयोजक अशोक कोठारी, सहसंयोजक ललित छाजेड़ आदि ने कार्यक्रम के संदर्भ में विचार रखे। कार्यक्रम में अणुविभा व अणुव्रत समिति मुम्बई के गणमान्य व्यक्तियों के साथ ही पुलिस ऑफिसर्स एवं एनसीसी कैडेट्स की बड़ी संख्या में उपस्थिति थी।





डिजिटल गैजेट्स का हो सदुपयोग :आचार्य श्री महाश्रमण बड़ी संख्या में लोगों ने स्वीकार किया डिजिटल डिटॉक्स संकल्प

मुंबई। अंधेरी प्रवास के दूसरे दिन तिलक उद्यान में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने अपनी अमृत देशना में कहा कि धर्म का सिद्धांत कहता है कि आत्मा शाश्वत है और शरीर नश्वर है। जन्म-मरण के सिद्धांत के अनुसार शरीर की मृत्यु होने के बाद आत्मा अपने कृत कर्मों के आधार पर कभी नरक गति में, कभी मनुष्य गति और कभी देव गति में भी पैदा होती रहती है। कभी यह प्रश्न आये कि मैं कौन हूँ तो उत्तर यह होना चाहिए कि मैं आत्मा हूँ। शरीर साथ में है। आत्मा अलग और शरीर अलग है। इस शरीर में कभी शारीरिक बीमारी, कभी मानसिक बीमारी अथवा कभी भावात्मक बीमारियां भी हो सकती हैं। इन तीनों प्रकारों के कष्टों से मुक्ति के लिए धार्मिक-आध्यात्मिक साधना की जाती है और उसके माध्यम से समाधि और शांति की प्राप्ति हो सकती है।

आचार्य प्रवर ने कहा कि जैसी उच्च कोटि की साधना मनुष्य कर सकता है, वैसी साधना अन्य कोई प्राणी नहीं कर सकता, इसलिए मानव जीवन सबसे महत्वपूर्ण है। इस मानव जीवन में उच्च साधना कर मनुष्य आत्मा से परमात्मा, नर से नारायण और जीव से शिव की स्थिति को प्राप्त कर सकता है। इसलिए राग-द्वेष रूपी असत संस्कारों का त्याग कर सद्संस्कारों के विकास का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री ने अणुव्रत विश्व भारती द्वारा आयोजित डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम के संदर्भ में कहा कि मोबाइल आदि अत्याधुनिक उपकरणों से कितनी सुविधा, कितना लाभ है। इसका उजला पक्ष है तो इसका अंधेर पक्ष भी है। इन अत्याधुनिक उपकरणों के अंधेर पक्ष को जानकर इन उपकरणों के सदुपयोग का विवेक रखने का प्रयास होना चाहिए। आचार्य प्रवर ने उपस्थित गणमान्य लोगों व जनता से आह्वान किया कि आप सभी लोग एक महीने के लिए रात्रि बारह बजे से सुबह सात बजे तक

अति आवश्यक कार्यवश या आये फोन को रिसीव करने के सिवाय मोबाइल फोन का उपयोग नहीं करेंगे, ऐसा संकल्प स्वीकार कर सकते हैं क्या? आचार्य श्री के इस आह्वान पर उपस्थित सभी ने अपने स्थान पर खड़े होकर यह संकल्प स्वीकार किया। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने भी उपस्थित जनता को उद्बोधित किया।

डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम के संदर्भ में मुनि जागृतकुमार व मुनि डॉ. अभिजीतकुमार ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। अणुविभा के सहमंत्री मनोज सिंघवी और अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स के संयोजक प्यारचंद मेहता ने भी विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर अणुविभा की ओर से एक डॉक्यूमेंट्री भी दिखायी गयी। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. सौरभ गोस्वामी, तारक मेहता का उल्टा चश्मा के प्रोड्यूसर व डायरेक्टर असित मोदी, भारत सरकार के प्लानिंग कमीशन की मेम्बर अर्चना जैन, मीरा-भायंदर की विधायक गीता जैन, साइकोलॉजिस्ट डॉ. रिक्की पोरवाल, डॉ. निष्ठा दलवानी, स्टेम सेल्स विशेषज्ञ डॉ. दिनेश कोठारी ने डिजिटल डिटॉक्स के संदर्भ में अपनी अभिव्यक्ति दी। अंधेरी सभाध्यक्ष चैनरूप दूगड़ ने भी विचार रखे।



कथा कथन से बच्चों को अच्छी आदतें अपनाने का दिया संदेश बाल मनोविज्ञान के चितरे उदय किरोला ने किया जीवंत संवाद

■■ स्कूल विद् ए डिफरेंस प्रकल्प के संयोजक डॉ. राकेश तैलंग की रिपोर्ट ■■



राजसमंद। बच्चों के बीच बच्चा बनकर उन्हें दिल और दिमाग के धरातल पर जोड़कर संवाद करना बाल शैक्षिक मनोविज्ञान के चितरे 'बाल प्रहरी' के संपादक उत्तराखण्ड के उदय किरोला की खासियत है। हँसी के गोलगप्पों के साथ बच्चों से बातचीत करते हुए सभागार को क्लास रूम बना लेने का उनका अंदाज निराला है।

अणुव्रत विश्व भारती के स्कूल विद् ए डिफरेंस प्रकल्प के पहले दिन 2 नवम्बर को उदय किरोला ने नव प्रभात सीनियर सेकंडरी स्कूल और प्रगति स्कूल एमडी में 'टोपीलाल' की रोचक कहानी के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक सरोकारों को कक्षा छह से आठ के बच्चों के साथ साझा किया। क्रिया आधारित भावात्मक शिक्षा की प्रस्तुति के साथ एक डिफरेंट प्रभाव देने की जो पेशकश उदय किरोला ने पेश की, वह अणुविभा के स्कूल विद् ए डिफरेंस, बालोदय और जीवन विज्ञान प्रकल्प का विषय भी है। दोनों ही विद्यालयों में बच्चों की किलकारियों ने ऐसे ही डिफरेंट माहौल का सुजन किया।

बाल विमर्श का दूसरा दिन सुभाष सीनियर सेकंडरी स्कूल, थोइन्दा और आदर्श विद्या मन्दिर, कांकरोली को समर्पित रहा। दोनों ही विद्यालयों में जिज्ञासु बालकों ने कथा कथन को ध्यान से सुना और गुना। इस दौरान उदय किरोला ने टोपीलाल की कहानी की प्रस्तुति के साथ हर सोपान पर सामाजिक समस्याओं, गलत आदतों से छुटकारा पाने के लिए मोटिवेशन दिया और अच्छी आदतों जैसे दैनिक चर्या के प्रति सजगता, पर्यावरण शुद्धि हेतु पॉलिथीन का उपयोग नहीं करने और जीवन में कभी नशीले पदार्थों का सेवन न करने आदि विषयों पर सकारात्मक प्रबोधन

दिया। उन्होंने श्रेष्ठ जवाबों और अभिव्यक्ति के लिए बच्चों को पुरस्कृत किया और 'बच्चों का देश' व 'बाल प्रहरी' जैसी बाल पत्रिकाओं में लेख, कविता आदि भेजने को प्रेरित भी किया।

थोइन्दा स्थित गायत्री पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल और एपेक्स सीनियर सेकंडरी स्कूल में कथा कथन का तीसरा दिन बच्चों के जिज्ञासु चेहरों और ठहाकों के नाम रहा। उदय किरोला के प्रश्नों और बच्चों के कभी त्वरित तो कभी शिथिल जवाबों के बीच कहानी आगे बढ़ती रही।

कहानी कथन के सत्रों में संस्था प्रधानों, विद्यालय के शिक्षकों, "बच्चों का देश" पत्रिका के सह सम्पादक प्रकाश तातेड़, शिक्षासेवी डॉ. राकेश तैलंग आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। अणुविभा के प्रशिक्षक जगदीश बैरवा ने बच्चों को जीवन विज्ञान के व्यावहारिक प्रयोगों का अभ्यास करवाया।



उदय किरोला ने 18 व 19 नवम्बर को मुंबई किड्जोन में भी बच्चों के मध्य कहानी व नाट्य कार्यशाला संचालित की जिसमें बड़ी संख्या में बच्चों ने भाग लिया।



अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

पिताजी, सुना है आप मेरी शादी में दहेज में लग्जरी कार की मांग कर रहे हैं?

इसमें गलत क्या है बेटा,
तुम्हें डॉक्टर बनाने में मेरा
करोड़ों का खर्च हुआ है।



अगर मैं डॉक्टर बन कर समाज में फैली इस कुरीति की बीमारी का इलाज नहीं कर पाया, तो मेरे डॉक्टर बनने का क्या फायदा?



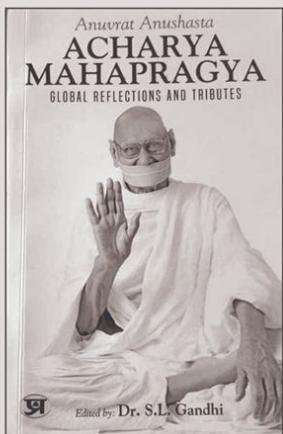
सही कहा बेटे, तुमने सिर्फ डॉक्टरी की पढ़ाई ही नहीं की, अणुव्रत के सिद्धान्त भी पढ़े हैं।



मुझे तुम्हारे विचारों के साथ-साथ
तुम्हारी माँ होने पर गर्व है!



आचार्य महाप्रज्ञ : एक अतीन्द्रीय दर्शी विचाक्षण संत



इस दुनिया में अनेक महापुरुष अवतरित हुए हैं जिन्होंने साधना एवं तपस्या द्वारा हमारे भीतर स्थित असीम अदृश्य जगत की गहराइयों में प्रवेश कर अनेक रहस्यों को अनावृत किया। आचार्य श्री महाप्रज्ञ भी एक ऐसे ही अतीन्द्रीय दर्शी विचाक्षण संत थे। उनकी जीवन यात्रा वस्तुतः प्रज्ञ की परिक्रमा ही थी। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर वैसे तो हिन्दी में छोटे-बड़े अनेक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं लेकिन अणुव्रत के अंतरराष्ट्रीय प्रचारक डॉ. सोहनलाल गांधी द्वारा संपादित एवं प्रभात प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ : ग्लोबल रिफ्लेक्शन्स एण्ड ट्रिब्यूट्स' नामक ग्रंथ उनसे इसलिए भिन्न है क्योंकि यह ग्रंथ वस्तुतः दुनिया भर के आध्यात्मिक नेताओं, विद्वानों, चिंतकों एवं अणुव्रत तथा अहिंसा कार्यकर्ताओं द्वारा आचार्य श्री महाप्रज्ञ के बहुआयामी व्यक्तित्व पर अंग्रेजी में लिखित अनुभव-परक आलेखों का एक अद्वितीय संग्रह एवं उनके दिव्य जीवन का दिग्दर्शन है। इसमें देश-विदेश के 83 आमंत्रित उन विशिष्ट व्यक्तियों, विभिन्न विश्वविद्यालयों में कार्यकरता प्रोफेसर्स, आचार्यों एवं अहिंसा द्वारा शांति के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क से जुड़े शांतिकर्मियों के आलेख हैं जिन्होंने आचार्य श्री महाप्रज्ञ से वार्तालाप की है या उनके सान्निध्य में कुछ समय व्यतीत करने का जिन्हें अवसर मिला है, उनकी पुस्तकें पढ़ी हैं या उनके प्रवचन सुने हैं। इनमें प्रमुख हैं डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम, परम पावन दलाई लामा, स्वामी अवधेशानंद, आचार्य सम्राट शिवमुनि, आर्कबिशप डेलमर रोबिन्सन, श्रीश्री रविशंकर, रेवरेंड लेलेंड स्टुआर्ट, प्रो. ग्लेन डी. पेज, प्रो. क्रिस्टोफर चेपल आदि।

'अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ : ग्लोबल रिफ्लेक्शन्स एण्ड ट्रिब्यूट्स' का लोकार्पण

नंदनवन मुंबई में आयोजित 74वें अणुव्रत अधिवेशन के दौरान 19 नवम्बर को अणुव्रत अनुशास्ता के सान्निध्य में अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी द्वारा सम्पादित पुस्तक "अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ : ग्लोबल रिफ्लेक्शन्स एण्ड ट्रिब्यूट्स" का लोकार्पण किया गया। पुस्तक की प्रथम प्रति स्वीकार करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ का एक महान व्यक्तित्व था। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम सहित अनेक महत्वपूर्ण व्यक्ति उनके संपर्क में आये। ऐसे महानुभावों के विचार इस पुस्तक में शामिल किये गये हैं। उन्होंने कहा कि डॉ. सोहनलाल गांधी अणुव्रत के विशिष्ट कार्यकर्ता हैं। अणुविभा के अंतरराष्ट्रीय कार्यों में उनका विशिष्ट योगदान रहा है। वर्तमान में भी वे अणुव्रत का कार्य कर रहे हैं, यह अच्छी बात है। पुस्तक का परिचय प्रदान करते हुए अणुविभा के प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा ने इसे संग्रहणीय ग्रंथ बताया। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य के आदित्य थे, कलम के कलाकार थे और भावों के शिल्पी थे। डॉ. सोहनलाल गांधी ने इस उम्र में भी श्रम करके यह पुस्तक तैयार की है। भारत सहित विभिन्न देशों के प्रसिद्ध धर्मगुरु, प्रोफेसर, चिंतक, विद्वान आचार्य श्री महाप्रज्ञ की महानता के बारे में क्या सोचते हैं, उनके विचार इस पुस्तक में संगृहीत हैं। इस अवसर पर अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रताप दुग्ध, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, महामंत्री भीखम सुराणा, अमृत महोत्सव संयोजक संचय जैन सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।





मुनिश्री तत्त्वरुचि तरुण ने हजारों विद्यार्थियों को दिलाये अणुव्रत के संकल्प

जयपुर। अणुव्रत समिति की ओर से शहर के विभिन्न विद्यालयों में विद्यार्थी चरित्र निर्माण अभियान का संचालन किया जा रहा है। इसके तहत होने वाले कार्यक्रमों में मुनिश्री तत्त्वरुचि तरुण विद्यार्थियों और अध्यापकों को नैतिकता, ईमानदारी आदि जीवन मूल्यों के बारे में बताने के साथ ही इन्हें अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं और संकल्प भी दिलाते हैं। अभियान के तहत विद्याधर नगर के माहेश्वरी गर्ल्स पब्लिक स्कूल में 3 नवम्बर को मुनिश्री तत्त्वरुचि तरुण के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में 4000 छात्राओं ने अणुव्रत के संकल्प ग्रहण किये। इस अवसर पर मुनिश्री तत्त्वरुचि ने छात्राओं तथा 126 शिक्षक-शिक्षिकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि नारी ममता, समता, सहिष्णुता, दया, लज्जा और शक्ति की प्रतिमूर्ति होती है। नारी को संस्कारवान बनाना पूरे परिवार को संस्कारवान बनाना है। मुनिश्री ने छात्राओं को जीवन विज्ञान के विभिन्न प्रयोग करवाने के साथ ही बालिका भूषण हत्या और नशा नहीं करने के संकल्प भी करवाये। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रिंसिपल सुनीता वाशिष्ठ ने मुनिश्री का स्वागत किया।

समिति की ओर से 1 नवम्बर को मुरलीपुरा के ज्योति पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल में विद्यार्थी चरित्र निर्माण अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री तत्त्वरुचि 'तरुण' ने कहा कि स्वस्थ समाज और समृद्ध राष्ट्र निर्माण के लिए विद्यार्थियों में चारित्रिक निष्ठा पैदा करना बहुत जरूरी है। कार्यक्रम में 800 विद्यार्थियों ने अणुव्रत के संकल्पों के साथ आजीवन नशामुक्त रहने की प्रतिज्ञा की। इस अवसर पर विद्यालय के डायरेक्टर मनोज जी, संजीव सुरेला, प्रिंसिपल दिपेन्द्र शेखावत सहित 20 से अधिक शिक्षक-शिक्षिकाएं मौजूद थीं। विद्याधर नगर सेक्टर 8 रिस्थित ज्ञान ज्योति सीनियर सेकंडरी स्कूल में 28 अक्टूबर को आयोजित कार्यक्रम में मुनिश्री ने 600 विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान के बारे में बताने के साथ ही उन्हें नशा नहीं करने तथा बुराइयों को छोड़ने का संकल्प करवाया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विमल गोलेछा ने बताया कि इस

अभियान का सकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों में देखने का मिल रहा है। मुनिश्री तत्त्वरुचि तरुण ने समिति की ओर से चलाये जा रहे विद्यार्थी चरित्र निर्माण अभियान के तहत महात्मा गांधी स्कूल, टैगेर पब्लिक स्कूल, गांधी बाल निकेतन विद्यालय, मुस्लिम स्कूल मदरसा फौज-ए-आम, आदर्श विद्या मंदिर, जयपुर स्कूल, वंदना बाल भारती सीनियर सेकंडरी स्कूल, गवर्नमेंट सीनियर सेकंडरी स्कूल, ग्रीन गेट इंगिलिश स्कूल, ज्ञान ज्योति सीनियर सेकंडरी स्कूल, केपीएस उड़ान के पाँच हजार से अधिक विद्यार्थियों तथा लगभग 400 शिक्षक-शिक्षिकाओं को अणुव्रत के दर्शन से परिचित कराया तथा नैतिकता, सद्बावना और नशामुक्ति के संकल्प करवाये। अणुव्रत समिति की मंत्री डॉ. जयश्री सिंद्धा, सहमंत्री कमलेश बरडिया, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेंद्र सेखानी आदि ने विद्यालयों को अणुव्रत आचार संहिता का बोर्ड तथा साहित्य भेंट किया।

अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान कार्यक्रम

जयपुर। अणुव्रत समिति की ओर से अग्रवाल सीनियर सेकंडरी स्कूल में 14 दिसम्बर को अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मुनिश्री तत्त्वरुचि 'तरुण' ने अपने प्रेरणादायी उद्घोथन में कहा कि जीवन में चरित्र से बढ़कर कुछ भी नहीं है। व्यक्ति हमेशा ईमानदारी, प्रामाणिकता और नैतिकता के रास्ते पर चले। इसी से हमारी सारी उपलब्धियाँ शोभायमान होती हैं। उन्होंने करीब 700 विद्यार्थियों से चरित्रवान नागरिक बनने का आह्वान करते हुए उन्हें विद्यार्थी वर्गीय अणुव्रत का संकल्प दिलाया तथा जीवन विज्ञान के प्रयोग भी करवाये।

इससे पहले अग्रवाल शिक्षा समिति के मंत्री कमल नानूवाल ने स्वागत भाषण दिया। अणुव्रत समिति के सह मंत्री कमलेश बरडिया, नरेंद्र चिंडालिया, मंगलचंद श्रीमाल तथा सुरेंद्र सेखानी ने विद्यालय परिवार को अणुव्रत आचार संहिता पट् व साहित्य भेंट किया। कार्यक्रम का कुशल संयोजन राजेश नागौरी ने किया।



किशनगंज के मेडिकल कॉलेज में जीवन विज्ञान पर सेमिनार

किशनगंज। अणुव्रत समिति की ओर से एम. जी. एम. मेडिकल कॉलेज में 9 दिसंबर को जीवन विज्ञान पर सेमिनार का आयोजन किया गया। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के जीवन



विज्ञान प्रकल्प के राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी ने कार्यक्रम में उपस्थित लगभग 600 नर्सिंग छात्रों को जीवन विज्ञान की संक्षिप्त जानकारी देने के साथ ही उन्हें बताया कि इसे अपनाने से हम बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक रूप से अपने आपको परफेक्ट रख सकते हैं। जीवन विज्ञान के प्रयोगों को प्रतिदिन 20 मिनट देकर अपनी लाइफ को हैप्पी बना सकते हैं। पटावरी ने पीपीटी प्रेजेंटेशन के द्वारा बच्चों को काफी सरल भाषा में जीवन विज्ञान के बारे में समझाया। उन्होंने विद्यार्थियों को ताड़ासन, सम्पादासन, कोणासन का अभ्यास करवाया तथा इनसे होने वाले लाभों के बारे में बताया। पटावरी ने बीच-बीच में विद्यार्थियों से सवाल भी किये और विद्यार्थी बड़े उत्साह से उन प्रश्नों के जवाब दे रहे थे। पटावरी ने अंत में संकल्प का भी प्रयोग करवाया।

कार्यक्रम में एमजीएम यूनिवर्सिटी के चेयरमैन डॉ. दिलीप जयसवाल का अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। इससे पहले अणुव्रत समिति अध्यक्ष रश्म बैद ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में मेडिकल कॉलेज के प्रोफेसरों, डॉक्टरों, वकीलों व जज तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ ही युवक परिषद् अध्यक्ष रोहित दफतरी और अणुव्रत समिति के सदस्यों की उपस्थिति रही। अंत में सह मंत्री सोनम लुनिया ने अतिथियों का आभार ज्ञापित किया।

कैदियों ने लिया अच्छा जीवन जीने का संकल्प

वडोदरा। साध्वीश्री मंजुयशा ने कहा कि अणुव्रत सबको मानवता का पावन संदेश देता है। यह एक असाम्प्रदायिक मिशन है। यह हमेशा नैतिकता, सद्भावना एवं नशामुक्ति का जीवन जीने की प्रेरणा देता है। साध्वीश्री मंजुयशा अणुव्रत समिति की ओर से वडोदरा के सेंट्रल जेल में आयोजित कार्यक्रम में करीब 700 कैदियों को संबोधित कर रही थीं। साध्वीश्री ने कहा कि इंसान

गलती का पुतला है। जाने-अनजाने में किसी भी प्रकार का छोटा या बड़ा अपराध हो जाता है और उस अपराध के कारण वह कारागृह में आ जाता है। उसे अपराध का फल भोगना पड़ता है। वह अपने परिवार से, बच्चों से दूर रहने को विवश होता है, न जाने उसे कितने दुःख भोगने पड़ते हैं। किये हुए अपराध का उसके मन में कितना पश्चात्ताप होता है। गलती करना कोई बड़ी बात नहीं, किंतु भविष्य में ऐसी गलती न हो तो इस बंधन से मुक्ति हो सकती है। साध्वीश्री ने कैदियों को भविष्य में ऐसा कोई अपराध न करने का संकल्प करवाया। साथ ही नशामुक्ति के लिए ध्यान का सामूहिक प्रयोग करवाया। इसके बाद कई कैदियों ने नशामुक्ति और अच्छा जीवन जीने का भी संकल्प ग्रहण किया। साध्वीश्री चिन्मय प्रभा ने भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

आई.पी.एस. अधिकारी जगदीश बांगरवा, वेलफेर ऑफिसर महेश राठेड एवं जेलर विपुलभाई बारिया ने साध्वी वृद्ध के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। अणुव्रत समिति की ओर से अणुव्रत साहित्य भेंट कर अधिकारियों का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष राजेश मेहता, मंत्री महावीर हिरण, पूर्व अध्यक्ष संतोष सिंधी, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष हस्तीमल मेहता, मंत्री दीपक श्रीमाल, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष पंकज बोल्या, बाल किशन श्रीमाल, संपत मेहता, विनोद समदिया, स्नेहलता समदिया समेत कई विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे।

अणुव्रत कार्यशाला का आयोजन

जीन्द। अणुव्रत समिति द्वारा 25 नवम्बर को सनातन धर्म स्कूल में अणुव्रत के 11 नियमों पर कार्यशाला का आयोजन किया



गया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष राजेश जैन ने अणुव्रत के नियमों के बारे में समझाया। राजेश जैन ने बच्चों को नशामुक्ति की प्रेरणा दी। सनातन धर्म संस्था के उपप्रधान राकेश सिंगला ने भी विचार रखे। स्कूल के प्रिंसिपल सुरेन्द्र राणा ने अणुव्रत के नियमों को स्वीकार किया। कार्यशाला का कुशल संचालन अणुव्रत समिति के मंत्री कुणाल मित्तल ने किया।

युवकों ने लिया नशामुक्ति का संकल्प

औरंगाबाद। मुनिश्री अर्हत कुमार ने कहा कि जीवन को समस्या रहित बनाना या समस्यामय बनाना, यह व्यक्ति के स्वयं

के हाथ में है। नशा जीवन की दिशा व दशा को पतन का मार्ग दिखाता है। व्यक्ति को अपनी आत्मशक्ति को जागृत कर इस ज्वलामुखी से स्वयं को बचाने का प्रयास करना चाहिए। मुनिश्री नशामुक्ति अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुनिश्री की प्रेरणा से अनेक युवकों ने नशामुक्ति का संकल्प लिया। इस अवसर पर मुनिश्री भरत कुमार एवं मुनिश्री जयदीप कुमार भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में औरंगाबाद अणुव्रत समिति की मंत्री सुनीता सेठिया ने भी विचार रखे।

अच्छी शिक्षा से ही अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण

अहमदाबाद। मुनिश्री मुकुलकुमार ने कहा कि अच्छी शिक्षा से ही अच्छे संस्कारों एवं अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। तनाव को शांत करने के लिए मंत्रों और मुद्राओं की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि मजबूत तनाव प्रबंधन युक्तियों के साथ तनाव का मुकाबला करें। उन्होंने विद्यार्थियों को जीवन में नशामुक्त व नैतिक बनने की प्रेरणा देते हुए उनकी जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। मुनिश्री राजस्थान सेवा समिति द्वारा शाहीबाग में संचालित राजस्थान स्कूल के नवनिर्मित भवन के शुभारंभ पर 27 अक्टूबर को आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर राजस्थान सेवा समिति के मानद सचिव दीपचन्द बाफना, बाबूलाल सेखानी, स्कूल मैनेजर्मेंट व प्रिंसिपल, गणमान्यजन के साथ 600 से अधिक विद्यार्थियों तथा करीब 50 अध्यापकों की उपस्थिति रही। प्रिंसिपल रविन्द्रसिंह कच्छावा ने आभार प्रकट किया।

स्वरोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू



बारडोली। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति बारडोली द्वारा 5 नवम्बर को अहिंसा प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। यहां स्वरोजगार के अंतर्गत जरूरतमंद महिलाओं को मेहंदी और ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण दिया जाएगा। अणुविभा की संगठन मंत्री पायल चोरडिया ने अणुव्रत और अहिंसा प्रशिक्षण केंद्र के बारे में जानकारी दी। प्रशिक्षिका निकिता बेन ने कहा कि मैं बहनों को स्वरोजगार के साथ-साथ अहिंसात्मकताके से कार्य करने और जीवन यापन की कलात्मक प्रवृत्तियों में भी अग्रिम रखने का प्रयास करूँगी। इस

अवसर पर उपासिका आशा चौरडिया, संगीता बाफना, मीना मेहता, वर्षा मेडतवाल की उपस्थिति रही।

अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन

वारी। अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन तेरापंथ भवन



में 15 दिसम्बर को किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री पंकजश्री ने कहानी और अणुव्रत गीत के माध्यम से छोटे-छोटे नियमों की उपयोगिता बतायी। साध्वीश्री शारदाश्री ने कहा कि जीवन के हर क्षेत्र में विकास के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए अणुव्रत को समझना अति आवश्यक है।

मुख्य अतिथि पतंजलि योगपीठ की गुजरात संयोजिका तनुजा बेन ने अणुव्रत दर्शन की सराहना करते हुए बताया कि कैसे योग से जीवन को संयमित बना सकते हैं? अमावस्या अन्नदान मिशन वापी संयोजिका वर्षा बोल्या ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में पतंजलि योगपीठ में सेवा देने वाली बहनों ने संयम दिवस के संकल्प पत्र भरे। महिला मंडल अध्यक्ष एकता कच्छारा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति की अध्यक्ष चंदा दुग्गड़े ने किया।

बाबई राजकीय कन्या महाविद्यालय बाबई में 21 दिसम्बर को अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता प्रोफेसर देवी शंकर शर्मा, प्राचार्य राजकीय कन्या महाविद्यालय बाबई ने विद्यार्थियों को अणुव्रत अमृत महोत्सव व अणुव्रत आंदोलन के गैरवशाली इतिहास के बारे में बताते हुए विद्यार्थियों को व्यसन मुक्त जीवन एवं परीक्षा में प्रामाणिकता आदि अनेक विषयों को लेते हुए अनुभवों के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर महाविद्यालय के संकाय सदस्य भी उपस्थित रहे।

अणुव्रत कार्यशाला आयोजित

जींद। अणुव्रत समिति जीन्द द्वारा 20 दिसम्बर को रोटरी क्लब जीन्द, इनरव्हील क्लब जीन्द के सहयोग से शिव शक्ति

सेंटर में अणुव्रत कार्यशाला आयोजित की गयी। अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष डॉ. सुरेश जैन ने अणुव्रत की पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी दी। समिति के अध्यक्ष राजेश जैन ने अणुव्रत के 11 नियमों के बारे में बताया तथा सभी को प्रेरणा दी की अणुव्रत के नियमों को अपनाएं। रोटरी क्लब जीन्द की अध्यक्ष माया राम देवी, तेरापंथ महिला मंडल जीन्द की अध्यक्ष रेणु जैन और इनरव्हील क्लब जीन्द की अध्यक्ष सुषमा सधवानी ने विचार व्यक्त किए। अणुव्रत समिति द्वारा अतिथियों को अणुव्रत साहित्य से सम्मानित किया गया।

गोवा के राज्यपाल को अणुव्रत पत्रिका भेंट

पणजी। अणुव्रत विश्व भारती की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया एवं कार्यसमिति सदस्य डॉ. धनपत लुनिया ने 5 दिसम्बर



को राजभवन में गोवा के राज्यपाल पीएस श्रीधरन पिलर्झ से शिष्टाचार भेंट की। डॉ. धनपत लुनिया ने राज्यपाल को अणुव्रत दर्शन के बारे में बताने के साथ ही अणुव्रत पत्रिका पहनाकर वर्धायित किया और अणुव्रत पत्रिका भेंट की। डॉ. कुसुम लुनिया ने राज्यपाल को अपनी पुस्तक 'सीक्रेट्स ऑफ हेल्प' भेंट की।

डीआरडीओ के वैज्ञानिक को अणुव्रत पत्रिका भेंट

बीकानेर। डिफेंस रिसर्च एंड डिवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन के

सेमीकंडक्टर वैज्ञानिक महादेव भट्ट कानाथिला को अणुविभा के पर्यावरण जागरूकता आभियान की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. नीलम जैन ने अणुव्रत पत्रिका भेंट की। वैज्ञानिक कानाथिला ने अणुविभा की ओर से ईको फ्रेंडली फेस्टिवल और ईको फ्रेंडली लाइफस्टाइल के प्रति लोगों को जागरूक किये जाने के प्रयासों की सराहना की।



अणुव्रत पत्रिका प्रकाशन विशिष्ट सहयोगी

श्री जोधराज बैद
Director
ABC1 Infrastructures Pvt Ltd

श्रीमती अमिता बैद
राजसमाद 9116634515 ■ विली 9116634512

अणुव्रत आन्दोलन के 75वें वर्ष पर अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत दर्शन को मासिक पत्रिकाओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने में दिये गये विशिष्ट सहयोग हेतु अणुविभा परिवार आपका हृदय से आभारी है।

अणुव्रत Q10 प्रतियोगिता

नवम्बर 2023 अंक में प्रकाशित प्रतियोगिता के परिणाम
(अप्रैल 2023 अंक पर आधारित)

एकाधिक विजेता होने के कारण निर्णय लॉटरी द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है –

विजेता



:: प्रोत्साहन पुरस्कार ::

मीनाक्षी
जोधपुर

सुरेन्द्र कुमार जैन
फरीदाबाद

अन्य सही उत्तरदाताओं के नाम

उत्तर 1	मेघना	पृष्ठ 24-26
उत्तर 2	संविधान से	पृष्ठ 29
उत्तर 3	जय तुलसी फाउंडेशन द्वारा	पृष्ठ 40
उत्तर 4	ज्ञानरजन	पृष्ठ 17
उत्तर 5	प्रमाद	पृष्ठ 7
उत्तर 6	आमली का	पृष्ठ 41
उत्तर 7	संयम दिवस	पृष्ठ 42
उत्तर 8	अनुच्छेद 51 ए	पृष्ठ 30
उत्तर 9	समाज	पृष्ठ 6
उत्तर 10	डॉ. महावीर राज गेलड़ा	पृष्ठ 33

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional



International



Akash Ganga®

— *Integrity at work* —

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahmedabad • Bangalore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguri • Surat





अनुव्रत

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

अणुव्रत अमृत महोत्सव

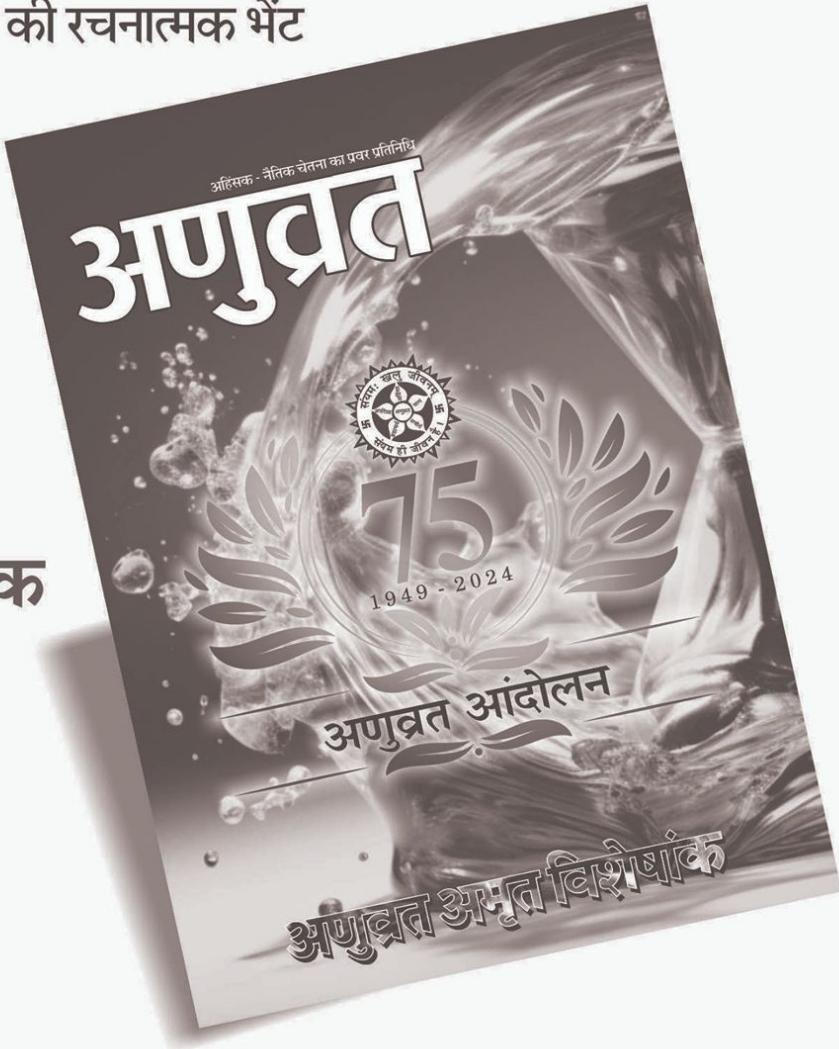
के ऐतिहासिक अवसर पर

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

की रचनात्मक भेंट



'अणुव्रत' पत्रिका का
अणुव्रत अमृत विशेषांक
(मार्च-अप्रैल 2024 संयुक्तांक)



विशेषांक के आकर्षण

अणुव्रत अनुशास्त्राओं के अमृत वचन

विशिष्टजनों के संदेश। अणुव्रत आंदोलन के ऐतिहासिक संदर्भ। अणुव्रत अमृत महोत्सव की झलकियाँ।
अणुव्रत कार्यकर्ताओं के उद्गार। विद्वान लेखकों के आलेख। प्रेरक कविताएँ। संदेशपरक कहानियाँ आदि।

रचना सम्प्रेषण हेतु सम्पर्क सूत्र

+91 9414273749 | 9116634512 | anuvrat.patrika@anuvibha.org

विज्ञापन बुकिंग हेतु सम्पर्क सूत्र

+91 9810155861 | 9899445249 | delhi@anuvibha.org

ANUVRAT
RNI No. 7013/57
January, 2024

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/12/2023
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

इंसानियत प्रिय हर एक शख्स से इस अभियान में जुड़ने का आह्वान



अनुव्रत अमृत महोत्सव

अप्राप्त गीत महासंवाद



श्रेष्ठ भारत का शंखनाद

18
जनवरी
2024

अनुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

एक विश्व ❁ एक स्वर ❁ मानव धर्म मुखर



अनुव्रत विश्व
भारती सोसायटी

केन्द्रीय समन्वय केन्द्र व संयोजकीय सम्पर्क सूत्र :

अनुव्रत समिति, ग्रेटर सूरत

📞 +91- 97372 80171 ■ 93746 13000
📞 +91- 98254 04433 ■ 93747 26946

प्रकाशक एवं मुद्रक संचय जैन द्वारा स्वत्वाधिकारी अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संचय जैन